Table of Contents

शीर्षक पेज
कॉपीराइट
प्रकाशक का नोट
परिचय
एक
दो
तीन
चार
पाँच
छह
सात
आठ
नौ
दस
ग्यारह
बारह
तेरह
चौदह
पंद्रह
सोलह
सत्रह
अठारह
अंतभाषण
लेखक और अनुवादक के बारे में

इंदिरा गोस्वामी

नीली गर्दन वाला भगवान

गायत्री भट्टाचार्य द्वारा अनुवादित
अरुणी कश्यप द्वारा परिचय
नमिता गोखले द्वारा लिखित

Table of Contents

नीली गर्दन वाला भगवान
शीर्षक पेज
कॉपीराइट
प्रकाशक का नोट
परिचय
एक
दो
तीन
चार
पाँच
छह
सात
आठ
नौ
दस
ग्यारह
बारह
तेरह
चौदह
पंद्रह
सोलह
सत्रह
अठारह
अंतभाषण
लेखक और अनुवादक के बारे में

इंदिरा गोस्वामी

नीली गर्दन वाला भगवान

गायत्री भट्टाचार्य द्वारा अनुवादित
अरुणी कश्यप द्वारा परिचय
नमिता गोखले द्वारा लिखित

The Blue-necked God

INDIRA GOSWAMI

Translated by
GAYATRI BHATTACHARYYA

Introduction by
ARUNI KASHYAP

Afterword by
NAMITA GOKHALE

ZUBAAN
काली फॉर विमेन का एक संस्करण
128B Shahpur Jat
पहली मंजिल
नई दिल्ली 110 049
ईमेल: contact@zubaanbooks.com
www.zubaanbooks.com

ज़ुबान द्वारा प्रथम प्रकाशित, 2013
कॉपीराइट © असमिया, इंदिरा गोस्वामी
कॉपीराइट © अंग्रेजी अनुवाद, गायत्री भट्टाचार्य, 2012

सर्वाधिकार सुरक्षित

10 9 8 7 6 5 4 3 2 1

ईबुक ISBN: 9789383074235
मुद्रित स्रोत ISBN: 9789381017852

यह ईबुक डीआरएम-मुक्त है।

ज़ुबान, नई दिल्ली, भारत में स्थित एक स्वतंत्र नारीवादी प्रकाशन गृह है, जिसकी अकादमिक और सामान्य पुस्तकों की एक मजबूत सूची है। इसकी स्थापना प्रसिद्ध नारीवादी प्रकाशन गृह 'काली फॉर वुमन' के एक प्रकाशन के रूप में हुई थी और यह विश्व स्तरीय पुस्तकों को उच्च संपादकीय और उत्पादन मानकों के साथ प्रकाशित करने की काली की परंपरा को आगे बढ़ा रहा है। हिंदुस्तानी में 'ज़ुबान' का अर्थ है जीभ, आवाज़, भाषा, वाणी। ज़ुबान एक गैर-लाभकारी प्रकाशक है, जो मानविकी और सामाजिक विज्ञान के साथ-साथ कथा साहित्य, सामान्य गैर-कथा साहित्य और युवा वयस्कों के लिए ऐसी पुस्तकों का प्रकाशन करता है जो विविधता, अंतर और समानता का जश्न मनाती हैं, विशेष रूप से भारत और दक्षिण एशिया के बच्चों के लिए और उनके बारे में, अपने प्रकाशन 'यंग ज़ुबान' के तहत।

जोजी फिलिप, नई दिल्ली 110 015 द्वारा बेम्बो स्टैंडर्ड 12/15.7 में टाइपसेट किया गया।
राज प्रेस, आर-3, इंदरपुरी, नई दिल्ली 110 012 में मुद्रित।

अंतर्वस्तु

शीर्षक पेज
कॉपीराइट
प्रकाशक का नोट
परिचय

एक
दो
तीन
चार
पाँच
छह
सात
आठ
नौ
दस
ग्यारह
बारह
तेरह
चौदह
पंद्रह
सोलह
सत्रह
अठारह

अंतभाषण
लेखक और अनुवादक के बारे में

Publisher's Note

हमारी सबसे प्रतिभाशाली और प्रशंसित लेखिका इंदिरा रायसम गोस्वामी (1942-2011) को खोए हुए एक वर्ष हो गया है और ज़ुबान में हमें उनके दो प्रसिद्ध उपन्यासों का अनुवाद प्रकाशित करके उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने का गौरव प्राप्त है (दोनों ही हमारे लिए महत्वपूर्ण पहली रचनाएँ हैं)। उनकी अंतिम पुस्तक, 'द ब्रॉन्ज़ स्वॉर्ड ऑफ़ थेंगफाखरी तहसीलदार', ब्रिटिश भारत में पहली राजस्व संग्राहक रहीं एक बोडो महिला की वीर गाथा है और यह पहली बार अंग्रेजी में अनुवादित हो रही है। उनका प्रतिष्ठित उपन्यास 'द ब्लू-नेक्ड गॉड', जो 1976 में प्रकाशित हुआ था, पहला उपन्यास है जिसमें एक लेखिका ने उन विधवाओं के शोषण और गरीबी को उजागर किया है जिन्हें धार्मिक स्वीकृति और परंपरा के नाम पर निर्दयी परिवारों द्वारा प्रार्थना में अपना दिन गुजारने के लिए एक 'पवित्र' शहर में छोड़ दिया जाता है और हम इसे एक नए अनुवाद में प्रस्तुत कर रहे हैं। दोनों पुस्तकों में अरुणी कश्यप द्वारा लिखित प्रस्तावनाएँ हैं, जो एक युवा लेखिका और विद्वान हैं और उनके कार्यों की गहरी समझ रखती हैं, साथ ही नमिता गोखले और प्रीति गिल द्वारा लिखित उपसंहार भी हैं।

ममोनी बैदेव, जिन्हें उनके अनेक पाठक स्नेहपूर्वक इसी नाम से पुकारते थे, असम की सबसे प्रसिद्ध और अत्यंत प्रतिभाशाली लेखिकाओं में से एक थीं। उन्होंने उन लोगों के लिए निडरता और जोश के साथ आवाज उठाई जिनकी आवाजें दबा दी गई थीं या कभी सुनी ही नहीं गईं - महिलाएं, हाशिए पर रहने वाले लोग, शक्तिहीन और दुर्भाग्यशाली लोग। उन्हें देश के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार सहित कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। असम सरकार ने साहित्य, कला, संस्कृति और सामाजिक सेवा में उनके महान योगदान को मान्यता देते हुए उन्हें मरणोपरांत असम रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया है। उनकी अनेक उपलब्धियों में से एक शांति के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता और अपने गृह राज्य असम में उग्रवादी उल्फा के सदस्यों को बातचीत की मेज पर लाने का उनका प्रयास है, जिसके लिए उन्हें कड़ी आलोचना का सामना करना पड़ा, लेकिन फिर भी इसने उन्हें अदम्य साहस और दृढ़ विश्वास वाली महिला साबित किया।

अपने गृह राज्य की अग्रणी लेखिकाओं में गिनी जाने वाली और शांति के लिए एक साहसी प्रचारक होने के बावजूद, उन्हें भारत में या उससे बाहर भी व्यापक स्तर पर वह सम्मान नहीं मिला जिसकी वे हकदार थीं। इसका एक कारण उनकी रचनाओं के गुणवत्तापूर्ण अनुवादों का अभाव था और शायद यह भी कि उन्होंने ऐसे विषयों और शैली में लेखन का चुनाव किया जो आज के शहरी, महानगर-केंद्रित और तेज़ गति वाले परिवेश में प्रचलित 'बाजारू' या 'लोकप्रिय' माने जाने वाले विषयों से बहुत अलग है। उनके इस साहस और एक महिला के रूप में उनकी उपलब्धियों के लिए ही हम ज़ुबान में उनकी विरासत को व्यापक विश्व तक पहुंचाने का माध्यम

बनकर गर्व महसूस करते हैं।

Introduction

मैं सातवीं कक्षा में थी जब मैंने इंदिरा गोस्वामी के उपन्यास पढ़ना शुरू किया। तब तक वे असम में इतनी प्रसिद्ध हो चुकी थीं कि उनके बारे में न जानना नामुमकिन था, खासकर तब जब आपके माता-पिता शिक्षाविद और लेखक हों। लेकिन 'द ब्लू-नेक्ड गॉड' गोस्वामी की पहली किताब नहीं थी जो मैंने पढ़ी थी। 'द मोथ ईटन हाउडा ऑफ अ टस्कर', जिसे मैं उनका सर्वश्रेष्ठ उपन्यास मानती हूँ, उनका पहला उपन्यास था जो मैंने पढ़ा था। यह मेरे पिताजी के दफ्तर की लाइब्रेरी से निकाला गया था।

तब तक मेरे माता-पिता ने मुझे बड़ों के लिए लिखी कहानियाँ पढ़ने से रोकना बंद कर दिया था, शायद इसलिए कि वे जानते थे कि मैं उनकी बात नहीं मानूँगी, या शायद उन्हें मुझमें अपना बचपन नज़र आता था। हालाँकि वे दोनों कुछ उपन्यासों को मेरी मेज़ से हटाकर उन पर रोक लगाते थे, फिर भी उन्होंने भी कहानियों के माध्यम से अपने आसपास की जटिल दुनिया को समझा था; मेरी माँ ने तो इससे भी आगे बढ़कर इस अराजकता को समझने की कोशिश में दो उपन्यास लिख डाले थे।

मुझे याद है, 'द मोथ ईटन हाउदा ऑफ अ टस्कर' पढ़कर मैं बहुत रोई थी। हालाँकि उपन्यास की कहानी स्वतंत्रता-पूर्व असम में घटी थी, फिर भी एक धार्मिक मठ (सत्र) में रची गई वह कहानी मेरी दुनिया से काफी मिलती-जुलती थी। मेरे दादा-दादी अमरोंगा सत्र के अनुयायी थे, जहाँ उपन्यास की कहानी आधारित है। हमारा पैतृक गाँव, जहाँ मैंने अपनी अधिकांश ग्रीष्म और शीतकालीन छुट्टियाँ बिताईं, उपन्यास में वर्णित गाँव से बिलकुल अलग नहीं था। उपन्यास के लोग धान की खेती करते थे, चावल खाते थे, अमीर लोग हाथी पालते थे और अपनी भैंसों को पास की एक छोटी नदी में नहलाते थे। हमारे यहाँ तामुलिदोभा नदी थी और गोस्वामी के पात्र (हाथी जोगोननाथ सहित) जोगोलिया नदी में स्नान करते थे। मार्क साहब, वह ब्रिटिश शोधकर्ता, जिससे उपन्यास की नायिका गिरिबाला को प्रेम हो जाता है, की भूरी आँखें हैं और गोस्वामी उनका वर्णन जोगोलिया नदी की छाती पर डूबते दो भूरे सूर्यों के रूप में करते हैं। वह दुनिया मेरे लिए जानी-पहचानी थी, क्योंकि मैं भी छुट्टियों में टेतेलिगुरी गाँव में रिश्तेदारों के निर्देशों और माथे पर पड़ी शिकन से बचते हुए नग्न अवस्था में तालाबों, नालों और नदियों में डुबकी लगा चुका था—अक्सर, अपने माता-पिता की अत्यधिक निगरानी के बिना। लेकिन मुझे याद है, मैं उस किताब की ओर नाम की वजह से नहीं, बल्कि लेखिका के नाम की वजह से आकर्षित हुआ था। रोइसोम? क्या वह असमिया हैं? वह कहाँ से हैं? यह कैसा उपनाम है!

भूपेन हजारिका ने अपने गीतों से असमिया गीतों की कल्पनाशीलता को विस्तार दिया और हमें ऑस्ट्रिया, मिसिसिपी और मार्क ट्वेन की समाधि की मधुर और भावपूर्ण यात्राओं पर ले गए। गोस्वामी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से, जो न केवल भारत बल्कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में

रचे गए हैं (उनके दो उपन्यास जापान और मॉरीशस में आधारित हैं), असमिया पाठकों की कल्पनाशीलता को विस्तृत और चुनौती दी, और उन्हें अनुमानित अपेक्षाओं में बंधने से इनकार कर दिया। हम उनके पात्रों के साथ यात्रा करते थे और उनके द्वारा झेली गई कठिनाइयों के कारण रोते थे।

भगवान कृष्ण के पवित्र नगर नीलकंठा ब्रज पर आधारित यह उपन्यास, जब 1976 में प्रकाशित हुआ, असम के पाठकों के लिए अनोखा था। यह किताब मैंने अपने पिता के दफ्तर की लाइब्रेरी से उधार नहीं ली थी, बल्कि अपने घर की लकड़ी की अलमारी से निकाली थी। मुझे किताब के शीर्षक ने आकर्षित किया। चूंकि मैं बचपन से ही तेलुगु नगर में गाए जाने वाले नामों के माध्यम से पौराणिक कथाएँ सुनता आया था, और अपने चाचाओं और पिता द्वारा मेरे लिए खरीदी गई पुराणों की कहानियाँ पढ़कर बड़ा हुआ था, इसलिए मैं नीलकंठी शब्द से परिचित था—जब भगवान शिव ने दुनिया को विनाश से बचाने के लिए हलाहल विष पिया, तो दर्द के कारण उनकी गर्दन (कंठा) का रंग गहरा नीला हो गया, इसलिए उन्हें 'नीलकंठ' भी कहा जाता है। लेकिन एक नगर का गला नीला कैसे हो सकता है? मुझे यह उपन्यास पढ़ना ही था। मैं कहूंगी कि नतीजा दुखद था— अवसादग्रस्त चरित्र सौदामिनी, जो उस वर्जित रिश्ते में फंसकर तबाह हो जाती है जिसमें वह उलझ जाती है—ने मेरे दिल से खुशी के आखिरी अंश भी छीन लिए, और उसके भयानक अंत के कारण मुझे रोने पर मजबूर कर दिया।

मैंने दसवीं की बोर्ड परीक्षा की तैयारी के दौरान यह उपन्यास दोबारा पढ़ा—यह परीक्षा अधिकांश मध्यमवर्गीय असमिया परिवारों के लिए एक कठिन अनुभव होता है, जहाँ परीक्षार्थियों से ज़्यादा माता-पिता भयभीत रहते हैं। मेरी प्रोफेसर माँ के मार्गदर्शन में, मुझे असमिया परीक्षा के लिए अपनी पसंदीदा पुस्तकों और लेखकों पर निबंध तैयार करने थे। तब तक, मैं चुपके से कई 'उपन्यास' और 'लघु कथाएँ' लिख चुकी थी, इसलिए इस पुस्तक को पढ़ते समय मैं सबसे ज़्यादा इसकी वर्णनात्मक कुशलता से चकित रह गई।

इस अपरिचित दुनिया में—लोग घोड़ों पर सवार होते थे, उनके नाम लेखक के उपनाम की तरह गैर-असमिया थे, वे विचित्र धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करते थे, जहाँ विधवाओं को बिधोवा नहीं, बल्कि 'राधेश्यामियाँ' कहा जाता था। यहाँ, मंदिरों के खंडहर प्राचीन छाल के रंग के हो जाते हैं और बिखरे हुए मंदिर के खंडहर जो छोटी टहनियों और शाखाओं से ढके हुए हैं, 'पुरानी, भूली हुई चीजों के चारों ओर लिपटे मकड़ी के जाले' की तरह लगते हैं और घनी, कांटेदार झाड़ियों की सूखी शाखाएँ मछली की हड्डियों जैसी दिखती हैं। मैं असमिया उपन्यास पढ़ते हुए बड़ा हुआ था, लेकिन ये वर्णन असाधारण थे और मुझे आश्चर्य हुआ कि क्या मैं अपने लेखन में इतनी जीवंतता और सजीवता भर पाऊँगा। बोर्ड परीक्षा के लिए नोट्स बनाने के लिए उस उपन्यास को पढ़ने से एक नई समस्या शुरू हुई: मैंने उस वर्ष उनकी सभी लघु कहानियाँ और उपन्यास एक-एक करके पढ़ना शुरू कर दिया और अपनी कहानियाँ लिखने का प्रयास किया।

इंदिरा गोस्वामी की रचनाओं ने हमारे घर के लोगों के मन पर इतना गहरा प्रभाव डाला था कि हम हर समय उनकी रचनाओं के बारे में बात करते रहते थे। जब माँ और मैं भीड़भाड़ वाले, गंदे और बदबूदार फैंसी बाज़ार में कपड़े खरीदने जाते थे, अक्सर जल्दी पहुँचने के लिए एक गंदी गली का

इस्तेमाल करते थे, तो माँ कहती थीं, 'कितनी भयानक बदबू है—मुझे नहीं लगता कि मैं इसका वर्णन कर सकती हूँ, केवल मामोनी-बाईदेओ ही इसकी तुलना कर पाएँगी!' तेतेलिगुड़ी में हमारा एक छोटा सा संतरे का बगीचा था, जो गाँव की सामुदायिक धारा के ठीक पास था। एक दिन, जब मैं 'पुरुषों के समय' में वहाँ नहाने गई थी, तो मुझे पकते हुए संतरों की खुशबू आई और मैंने मन ही मन कहा, 'कितनी सुंदर खुशबू है, केवल मामोनी-जेठाई ही इसकी तुलना कर पाएँगी।' मैं इस बात से भी निराश थी कि मैं इसका वर्णन नहीं कर पाई।

गोस्वामी की उपमाओं और रूपकों की अनूठी विशेषता यह थी कि वे उनका प्रयोग केवल दृश्य का वर्णन करने के लिए नहीं करती थीं। वे वातावरण के भाव को उकेरने और विरोधाभास उत्पन्न करने के लिए उनका विस्तार करती थीं। 'नीली गर्दन वाले भगवान' में स्थापत्य खंडहरों के वर्णन को वृंदावन के रक्तरंजित इतिहास के किस्सों के माध्यम से और भी विस्तृत किया गया है, जैसा कि चरणबिहारी के शब्दों में पात्रों के बीच संवादों में वर्णित है। उपन्यास की शुरुआत से ही सौदामिनी अपने हृदय में एक उजाड़पन का भाव संजोए रखती है। लेकिन इससे कहानी आगे नहीं बढ़ती, न ही उसके हृदय के गहरे खालीपन का पता चलता है, जब तक कि कोई विरोधाभास न हो। और यह विरोधाभास धार्मिक गतिविधियों के विस्तृत वर्णन, लोगों की हंसी, जयकारे और उपहास से मिलता है, जब तेल लगे, बलवान पहलवान चिकने खंभे पर चढ़ने का प्रयास करते हैं, ये सभी चीजें सौदामिनी के अलगाव को और भी अधिक उजागर करती हैं। मेरा दूसरा पठन एक प्रशिक्षु के रूप में था, बोर्ड परीक्षा के लिए लिखने वाले के रूप में नहीं, बल्कि कहानी सुनाने वाले के रूप में। मैंने गर्व से यह निर्णय लिया था कि एक दिन मैं बेहतर, अधिक भावपूर्ण वर्णन लिखूंगा, ठीक वैसे ही जैसे हर लेखक का सपना होता है - अपने गुरु को उसी के खेल में हराना।

मुझे लगता है कि इस पुस्तक का वास्तविक महत्व मुझे तभी समझ आया और मैं इसे गोस्वामी के संपूर्ण साहित्य में तभी शामिल कर पाई जब मैं दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ने गई। सेंट स्टीफंस कॉलेज में मेरा छात्रावास प्रोफेसर कॉलोनी, छत्र मार्ग में उनके घर के बहुत करीब था। उस समय विश्व विद्यालय मेट्रो स्टेशन का निर्माण नहीं हुआ था। अक्सर मैं अपने कॉलेज परिसर से दिल्ली विश्वविद्यालय के रसायन विभाग से होते हुए उनके साथ शाम की चाय पीने जाती थी क्योंकि वह मेरी स्थानीय संरक्षक थीं।

'द ब्लू-नेक्ड गॉड' की प्रेरणा लेखिका के पति की असामयिक मृत्यु के बाद वृंदावन में बिताए गए संक्षिप्त समय से मिली। वहाँ वे अपने पिता के मित्र और गुरु, प्रोफेसर उपेंद्र लेखारू के मार्गदर्शन में रहीं, जिन्होंने उन्हें रामायण पर शोध करने के लिए प्रेरित किया। जब उन्हें दिल्ली विश्वविद्यालय में नौकरी का प्रस्ताव मिला, तो वे वृंदावन छोड़कर वहाँ चली गईं।

तथाकथित पवित्र नगरी, जहाँ लोग मोक्ष पाने जाते थे, वहाँ उन्होंने जो देखा वह आतंक से भी बदतर था: विधवाओं की गरीबी, जिन्हें उनके परिवार वाले उनसे कोई वास्ता नहीं रखना चाहते थे और उन्हें वहीं मरने के लिए छोड़ दिया गया था। गोस्वामी ने इस उपन्यास में उनके जीवन को निर्भीक दृष्टि से दर्ज किया है, जो शायद वृंदावन के अंधकारमय पक्ष को दर्शाने वाला पहला और एकमात्र उपन्यास है। यह पुस्तक विशेष रूप से मूल्यवान हो जाती है क्योंकि इसमें वृंदावन में बिताए उनके अनुभवों का समावेश है। जैसा कि वे कहती हैं, उपन्यास में उन्होंने जो कुछ भी

लिखा है, वह लगभग सब कुछ सच है। 'अधूरी आत्मकथा' पढ़ने से पुस्तक की हमारी समझ और भी स्पष्ट हो जाती है। उनकी आत्मकथा में वृंदावन का पहला दृश्य एक हट्टे-कट्टे पांडा को उनके वाहन का पीछा करते हुए, चिल्लाते हुए और अधिक पैसे मांगते हुए दिखाता है, "मैंने अपने जीवन में कभी ऐसा नग्न लालच और लोभ नहीं देखा था।"

2006 में, जब मैं स्नातक की पढ़ाई पूरी कर रहा था, गोस्वामी ने चित्रकार जितेंद्र हजारिका के चित्रों के साथ 'पेन एंड फ्लेश' नामक कविताओं का संग्रह प्रकाशित किया था। दिल्ली में इसका विमोचन प्रसिद्ध चित्रकार जतिन दास ने किया था। पुस्तक विमोचन समारोह से कुछ दिन पहले, उन्होंने कहा कि वह चाहती हैं कि मैं समारोह में 'ओड टू अ व्होर' कविता पढ़ूँ। मैंने खुद को अत्यंत सौभाग्यशाली महसूस किया। जब मैंने समारोह से एक दिन पहले कविता पढ़ना शुरू किया, तो मैं कविता में उनके द्वारा प्रयुक्त कल्पना से दंग रह गया: एक वेश्या, जो शराब बनाती है, नई बनी शराब को सौ साल पुरानी शराब में बदल सकती है! लोग उनकी गुप्त विधि जानने के लिए बहुत प्रयास करते हैं, लेकिन वह कहती हैं कि उन्हें नहीं पता कि यह पूरी प्रक्रिया उनके लिए कितनी कठिन है क्योंकि, "मैं दुःख के अंधकारमय गलियारे में बेहोश पड़ी रही हूँ! पीड़ा में मैंने अपने ही शरीर को कोड़े मारे हैं और अपना ही खून पिया है।"

कई मायनों में, यह कविता उनके अपने जीवन और उन महिला पात्रों का प्रतिनिधित्व करती है जिन्हें उन्होंने जीवंत बनाया। गोस्वामी ने दो बार आत्महत्या का प्रयास किया था और उन दिनों, ऐसी घटना से 'किसी लड़की की प्रतिष्ठा' (इसका जो भी अर्थ हो) पूरी तरह से नष्ट हो जाती थी। अपनी स्पष्ट और साहसी आत्मकथा में, उन्होंने अपने दीर्घकालिक अवसाद के संघर्ष के साथ-साथ आत्महत्या के अपने दो प्रयासों का भी वर्णन किया है।

लेकिन उनकी ईमानदारी कुछ असमिया पाठकों, विशेषकर कुछ महिला आलोचकों को रास नहीं आई, जिनका मानना था कि उनकी आत्मकथा असमिया महिलाओं के नैतिक मूल्यों पर बुरा प्रभाव डालेगी। उन्होंने कई साक्षात्कारों में इस बारे में खुलकर बात की और मैं समझ सकती हूँ कि ऐसा क्यों था। उनके लिए, यह संस्मरण केवल उनके जीवन के बारे में नहीं था; वे इसे 60 और 70 के दशक में महिलाओं द्वारा सामना किए गए अनेकों मुद्दों का प्रतीक मानती थीं। इसे लिखते समय, उनके मन में यही व्यापक दृष्टिकोण था। कई पीढ़ियों बाद, उनकी आत्मकथा लेखिका से कहीं अधिक प्रसिद्ध है और इसका शीर्षक अनेक संदर्भों में प्रयुक्त होता है। उनका जीवन एक खुली किताब की तरह है, जिसे पाठकों द्वारा बार-बार सुनाया जाता है, लोककथा की तरह बढ़ा-चढ़ाकर बताया जाता है और प्रेरणा के लिए उपयोग किया जाता है।

कविता की वक्ता की तरह, जिसे कभी बदनामी का शिकार माना जाता था, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उन्होंने भारतीय साहित्य में दो अविस्मरणीय महिला पात्रों का निर्माण किया, जो समाज की नज़र में 'पतित' थीं। दोनों विद्रोही, दोनों समाज की नज़र में 'वेश्या' और दोनों आत्महत्या करने की प्रवृत्ति वाली थीं। 'द ब्लू-नेक्ड गॉड' की नायिका सौदामिनी, ईश्वर के नगर में पहुँचती है और उस पर एक ईसाई पुरुष से प्रेम करने का संदेह किया जाता है। 'द मॉथ ईटन हाउडा ऑफ अ टस्कर' की उनकी जोशीली नायिका गिरिबाला, उच्च जाति की विधवा के लिए अपेक्षित सभी नियमों और परंपराओं को तोड़ती है और नाटकीय चरमोत्कर्ष में अपने 'ईसाई/

ब्रिटिश प्रेमी पर खुद को समर्पित कर देती है। इन दोनों महिलाओं की तरह, गोस्वामी न केवल आत्महत्या करने की प्रवृत्ति वाली थीं, बल्कि उन्होंने दो ऐसे पुरुषों से प्रेम किया और विवाह किया जो उच्च जाति के असमिया लोगों के लिए पराया थे। 1965 में उनका पहला विवाह जातिगत मतभेदों के कारण टूट गया; वह असमिया थे, लेकिन दूसरी जाति के थे। सन् 1966 में उनका दूसरा विवाह बेंगलुरु के एक युवा इंजीनियर माधवन रोइसोम अयंगर से हुआ, जो ब्रह्मपुत्र नदी पर पुल बनाने आए थे। यदि कविता 'वेश्या के लिए स्तुतिगान' का वक्ता लेखिका के संघर्षरत व्यक्तित्व का ही विस्तार है, तो उपन्यास 'नीली गर्दन वाला भगवान' में सौदामिनी की कहानी को सौदामिनी के लिए एक स्तुतिगान के रूप में समझा जा सकता है। छत्तीस वर्ष बाद भी, असमिया साहित्य में इस उपन्यास के महत्व पर कोई विवाद नहीं है, क्योंकि क्लासिक पुस्तकों की तरह, इस दुखद उपन्यास के पन्ने आज भी जीवंत हैं, प्रत्येक पीढ़ी के नए पाठकों के मन में नए रूप धारण करते हैं।

अरुणी कश्यप
नवंबर 2012, मिनेसोटा, संयुक्त राज्य अमेरिका

One

उस दिन मथुरा छावनी रेलवे स्टेशन पर बहुत कम लोग उतरे। फिर भी, साधुओं, भिक्षुओं और संन्यासियों की अच्छी खासी भीड़ थी और दूर-दूर से आए थके-हारे यात्रियों के शोर और हलचल ने इस छोटे से स्टेशन पर उत्साह और उमंग का माहौल बना दिया था। प्लेटफार्म पर कई दलाल घूम रहे थे जो पहली बार तीर्थयात्रा करने वाले यात्रियों को आकर्षित करने की कोशिश कर रहे थे।

डॉ. रॉयचौधरी का परिवार ट्रेन से उतरा। वे और उनकी पत्नी अनुपमा हमेशा से मथुरा में अपने अंतिम वर्ष बिताना चाहते थे। उन्होंने बुढ़ापे में शांति और सुकून का अनुभव करने की आशा की थी। लेकिन ऐसा नहीं हो सका क्योंकि जीवन के अंतिम पड़ाव में उन्हें एक दुखद घटना का सामना करना पड़ा। उनकी इकलौती बेटी सौदामिनी का अचानक पति देहांत हो गया। सौदामिनी बहुत छोटी थी। और मानो यह काफी नहीं था, विधवा होने के कुछ ही समय बाद उसका एक ईसाई युवक से प्रेम संबंध हो गया। उसका यह व्यवहार रूढ़िवादी और ईश्वर से डरने वाले रॉयचौधरी परिवार को बिल्कुल भी स्वीकार्य नहीं था। इसलिए, उन्होंने उसे वृंदावन ले जाने का निश्चय किया, इस उम्मीद में कि ब्रज में कुछ वर्ष बिताने से शायद उनकी बेटी का मन बदल जाए और वह अपने जीवन की वास्तविकताओं से रूबरू हो जाए। अनुपमा स्वयं अस्वस्थ थीं। उन्हें एक बार तपेदिक हो चुका था और इन अचानक घटी दुखद घटनाओं ने उनके पहले से ही कमजोर स्वास्थ्य को और भी बिगाड़ दिया। डॉ. रॉयचौधरी के परदादा का कभी वृंदावन में एक छोटा सा औषधालय था। वह लगभग खंडहर हो चुके इस छोटे से अस्पताल को पुनर्जीवित करना चाहता था और इसे यथासंभव लंबे समय तक चलाना चाहता था।

ट्रेन से उतरते ही उनकी नज़र गौतम पर पड़ी, जो एक पांडा था और जिसे वे कई सालों से जानते थे। उसने डॉ. रॉयचौधरी को प्रणाम किया और कहा, "गेट पर आपके लिए एक तांगा इंतज़ार कर रहा है। आप उसमें बैठ जाइए, मैं आपके सामान का इंतज़ाम कर देता हूँ।"

उनका सामान जल्दी से इकट्ठा करके तांगे पर लाद दिया गया। सौदामिनी ने देखा कि तांगे को खींचने वाले घोड़े मजबूत और तंदुरुस्त थे। ऐसा लग रहा था मानो उन्हें लोगों और सामान का भार महसूस ही नहीं हो रहा हो। उनके चारों ओर अनगिनत ऐसे घोड़े से खींचे जाने वाले रथ थे। यह ब्रज का प्रसिद्ध झूलन का समय था, जब दूर-दूर से तीर्थयात्री यहाँ एकत्रित होते थे। तीर्थयात्रियों को आकर्षित करने के लिए रथों और घोड़ों को भव्य रूप से सजाया गया था। जानवरों को तुलसी के पत्तों और सीपियों की मालाओं से सजाया गया था और मोर के पंखों से मुकुट पहनाया गया था। यह एक सुंदर दृश्य था।

गौतम पांडा साइकिल से तांगे के पीछे-पीछे चल रहे थे। जैसे ही वे मुख्य राजमार्ग पर मुड़े, उनका रथ उसी दिशा में जा रहे अन्य रथों में मिल गया। मथुरा से निकलते ही, जब वे पवित्र वृंदावन की

ओर बढ़े, तो घोड़ों के खुरों की आहट भी एक विशेष आनंदमय लय में सुनाई दे रही थी, मानो वे उस अवसर की भावना के अनुरूप चल रहे हों।

अचानक सौदामिनी को एक गहरी और गूंजती हुई आवाज़ सुनाई दी। एक आदमी साइकिल पर उनके ठीक पीछे आ रहा था। उसने नाटकीय अंदाज़ में कहा, "एक हज़ार साल पहले, ग़ज़नी का महमूद एक लाख से ज़्यादा घुड़सवारों के साथ आया था। उस दिन भी घोड़ों के खुरों की धूल ने मथुरा शहर को पूरी तरह ढक लिया था। विनाश का वह तांडव पूरे दो दिन तक चला। सड़क के दोनों ओर के जंगलों को देखो।" सौदामिनी ने मुड़कर देखा तो उसे धूल से लदे पेड़ों और घनी कंटीली झाड़ियों के जंगल दिखाई दिए। इनमें से कुछ पेड़ों की डालियाँ और टहनियाँ सूखकर पतली, सूखी मछली की हड्डियों जैसी लग रही थीं। इन पौधों पर खिले बैंगनी फूल ऐसे लग रहे थे मानो किसी ने सूखी डालियों पर कृत्रिम फूल चिपका दिए हों। उसने इधर-उधर कुछ मोर भी देखे जो नाच रहे थे और अपने पंखों की पूरी शान दिखा रहे थे। उस व्यक्ति ने फिर कहा, "जंगल में और गहराई से देखो, और कंटीली झाड़ियों और पौधों के बीचोंबीच तुम्हें एक और भी रहस्यमय और आकर्षक जंगल दिखाई देगा। बहुत समय पहले, जब मारे गए साधुओं और संन्यासियों का खून मंदिरों के परिसर में फैलकर उन्हें बदसूरत स्मारकों में बदल देता था, तब इन जंगलों में जंगली बैल और तेंदुए घूमते थे। फिर भी, पवित्र ब्रज के भक्तों को महमूद ग़ज़नी के अत्याचारों से बचने के लिए इन जानवरों से भरे जंगलों में भागना पड़ा।"

वह व्यक्ति तीर्थयात्रियों का ध्यान आकर्षित करना बखूबी जानता था। उसकी आकर्षक, भावपूर्ण आवाज़ और मनमोहक व्यवहार ने जादू कर दिया। सौदामिनी भी उसकी आवाज़ से बेहद प्रभावित हुई। इसी बीच, उनके पीछे चल रहे तांगे के बलवान घोड़े उनसे आगे निकल गए।

अगस्त का महीना था, वृंदावन में कई त्योहारों का मौसम। यह स्थान देश भर से आए लोगों से खचाखच भरा हुआ था, जो झूलन, राधा अष्टमी आदि जैसे विभिन्न उत्सवों में भाग लेने आए थे। विभिन्न संप्रदायों के संन्यासियों के समूह सड़कों पर घूम रहे थे। राधाबर्ग की सफेद धूल, जिससे उनमें से कई लोग ढके हुए थे, उनके चेहरों और शरीरों पर अंकित हो गई थी। लेकिन उनके चेहरों पर किसी भी प्रकार के नशे का कोई निशान नहीं था।

जंगल में खंडहर हो चुके मंदिरों के टूटे-फूटे टुकड़े बिखरे हुए दिखाई दे रहे थे। चारों ओर फैली कंटीली झाड़ियों की पतली, रस्सी जैसी शाखाएँ और टहनियाँ उन्हें इस तरह ढक रही थीं मानो मकड़ी के जाले पुरानी, भूली हुई चीजों के चारों ओर लिपटे हों।

सौदामिनी ने उस आदमी की आवाज़ फिर सुनी, "1018 ईस्वी में जो विनाश और तबाही हुई, उसे शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता। यह बीस दिनों तक चली! अगर जंगल को खोदा जाए, तो आज भी लूटी-फोड़ी और टूटी-फूटी पत्थर की मूर्तियों के टुकड़े मिलेंगे। लेकिन, ज़ाहिर है, उस अत्याचारी ने चांदी की एक छोटी सी मूर्ति भी नहीं छोड़ी।"

अब तक बड़ी संख्या में तांगे वृंदावन जाने वाली सड़क पर एक व्यवस्थित कतार में धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो उस व्यक्ति की भावपूर्ण और आकर्षक आवाज़ के जादू में आकर वे सभी धीरे-धीरे और स्वप्निल भाव से उस सुंदर सड़क पर आगे बढ़ रहे हों। यह व्यक्ति वास्तव में एक विशेष पाण्ड का सहायक था, लेकिन वह अपनी वाक्पटुता के बल पर भोले-भाले

तीर्थयात्रियों को वश में करने में माहिर प्रतीत होता था। उसे चरणबिहारी के नाम से जाना जाता था।

"सुनो," उन्होंने आगे कहा। "सुनो बुलंद के कमज़ोर राजा हरदत्त ने क्या किया जब उसे पता चला कि महमूद मथुरा को लूटने आ रहा है।" चरणबिहारी इस बिंदु पर एक पल के लिए रुक गए क्योंकि एक तांगे से एक महिला उन्हें पान दे रही थी। "दुष्ट, व्यभिचारी और लंपट हरदत्त ने सभी देवी-देवताओं की मूर्तियों को यमुना नदी में फेंक दिया। फिर, एक करोड़ रुपये और तीस हाथी लेकर वह महमूद के पास गया और आत्मसमर्पण कर दिया और उसकी शरण मांगी। दूसरी ओर, महमूद के हाथों पराजित होने के बाद महाबन के शक्तिशाली सम्राट ने क्या किया? उसने अपनी रानी को लिया और..."

तांगे रुक गए। घोड़ों को पानी पिलाने का समय हो गया था। किसी दयालु और उदार भक्त ने सड़क किनारे कई कंक्रीट के टैंक बनवाए थे, जिनमें घोड़ों के लिए पानी रखा जाता था। वहाँ के ऊँचे पेड़ों की छाया में साफ पानी ठंडा और प्यास बुझाने वाला रहता था। तांगे अपनी कतार तोड़कर एक जगह इकट्ठा हो गए। इसका फायदा उठाते हुए चरणबिहारी हर गाड़ी के पास गए, हालाँकि हर गाड़ी के साथ एक पांडा पहले से ही मौजूद था। ये पांडा नाराज़ हो गए और उन पर चिल्लाए, "तुम पहले ही कुछ तीर्थयात्रियों को फँसा चुके हो; यहाँ क्यों आ रहे हो?" बीड़ी पीते हुए एक पांडा ने ज़ोर से चिल्लाकर सबका ध्यान अपनी ओर खींचा, "ब्रज में लोग तुम्हारे लालच और भावनात्मक बातों से तीर्थयात्रियों को फँसाने की तुम्हारी कला के बारे में 'रंगाजी' से ज़्यादा जानते हैं!" बाकी पांडा चरणबिहारी पर इस खुले हमले का आनंद लेने लगे और उनका मज़ाक उड़ाना और ताने मारना कुछ देर तक चलता रहा। गुस्से में शब्दों का आदान-प्रदान हुआ, लेकिन सौभाग्य से बात मारपीट तक नहीं पहुँची, जो इन जगहों पर आम बात थी।

तांगेवाले अपने घोड़ों को व्यवस्थित करने में जुट गए। "जल्दी करो! समय कम है। देखने के लिए बहुत कुछ है—झूलन, रंगनाथ का लोखार मेला, राधा अष्टमी—जल्दी करो, समय बर्बाद करने का समय नहीं है!"

वहाँ असंख्य श्रद्धालु थे। हर मूल्यवर्ग के सिक्के धूल की तरह जमीन पर बिखरे पड़े थे। हर चीज़ ऐसे चमक रही थी मानो किसी युवती के शरीर के ऊपरी हिस्से को ढकने वाली चमकदार चादर हो।

घोड़ों को उनकी गाड़ियों से जोता जा रहा था, और पानी से भीगे हुए अपने शरीर को हिलाते हुए वे और भी अधिक बलवान और चुस्त-दुरुस्त लग रहे थे। इस बार, चरणबिहारी ने अपनी साइकिल पर चढ़ने से पहले लोगों का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की। उन्होंने ज़ोर से आवाज़ लगाई, ताकि सब सुन सकें, "सुनो, सभी भक्तों! मैं आप सभी से अत्यंत आदरपूर्वक कह रहा हूँ, यदि आप में से कोई भी कभी किसी कठिनाई में हो, तो मेरे पास आने में संकोच न करें। मेरा नाम चरणबिहारी गौतम है। आप जहाँ भी रहना चाहें, मैं आपके लिए व्यवस्था कर सकता हूँ, महेश्वरी कुंज, भूतगली, रेतिया बाज़ार, कहीं भी..."

अन्य तांगों के साथ चल रहे पांडा बहुत नाराज़ हो गए और गुस्से में चिल्लाने लगे! नए घोड़े ऐसे तेज़ी से दौड़े मानो वे किसी चिकनी स्टील की सड़क पर चल रहे हों! चारों ओर सन्नाटा छा गया,

सिवाय घोड़ों के खुरों की तेज़ आवाज़ और मोरों की दहाड़ के।

अचानक सौदामिनी ने देखा कि चरणबिहारी उनके तांगे के ठीक पीछे सवार होकर आ रहे हैं। यह देखकर कि उन्होंने उन्हें देख लिया है, उन्होंने चतुराई से अनुमान लगाया कि वह बहुत ध्यान से सुनेंगी। उन्होंने यह भी सोचा कि इस सुंदर युवती के इतने करीब सवारी करना कितना आनंददायक होगा! उन्होंने देखा कि उनके बालों की मांग में सिंदूर नहीं लगा था, जो विवाहित स्त्री की निशानी होती है। उनके गले में मंगलसूत्र भी नहीं था, न ही उन्होंने पैर की उंगलियों में कोई अंगूठी पहनी थी, जो उनके विवाहित होने के अन्य संकेत होते हैं। उन्होंने विधवाओं की सफेद साड़ी भी नहीं पहनी थी, क्योंकि आजकल युवतियां ऐसी साड़ियां नहीं पहनतीं।

उन्हें अतीत की कुछ घटनाएँ याद आईं। बहुत समय पहले, कुम्मिला, राजशाही और पूर्वी दिनाजपुर से कुछ युवतियाँ आई थीं। उन्होंने कई दिनों से कुछ नहीं खाया था और थोड़े से भोजन के लिए कुछ भी करने को तैयार थीं। उनमें कुछ चरित्रहीन लड़कियाँ भी थीं। उस समय चरणबिहारी एक बेचैन युवक थे और वे अय्याश और बिगड़े हुए युवकों के एक समूह के साथ घूमते थे। जैसे कसाई जानवरों को खरीदने से पहले उनकी जाँच करते हैं, वैसे ही ये युवक इन युवतियों के कपड़े उतरवाकर उनके शरीर की अच्छी तरह से जाँच करते थे और यह सुनिश्चित करते थे कि उनमें कोई दोष न हो। उन्होंने उन दुर्भाग्यशाली महिलाओं को ढूँढ़ लिया था जो बहुत कम उम्र में विधवा हो गई थीं और जिनकी तात्कालिक समस्या भूख थी क्योंकि उन्होंने कई दिनों से कुछ नहीं खाया था।

जब चरणबिहारी महज पंद्रह वर्ष के थे, तब उन्होंने प्रसिद्ध बंगशी बोट के नीचे खड़े होकर युवतियों के एक समूह के सुंदर, चमकते, नग्न स्तनों की एक झलक देखी थी, यह वही स्थान है जहां भगवान श्री कृष्ण ने अपनी गोपियों के साथ आनंद मनाया था।

“छी, छी!” एक बूढ़ी औरत ने उसकी यादों को रोकते हुए कहा। उसके द्वारा लाई गई रोटियाँ, जो एक गंदे पुराने कपड़े में लिपटी थीं, धूल भरी सड़क पर गिर गईं। “छी, छी!” उसने दुख और घृणा से फिर से पुकारा...

अब इतने वर्षों बाद, चरणबिहारी को दुख हुआ कि उन युवा विधवाओं को शायद कभी माँ बनने का मौका ही नहीं मिला होगा। अन्यथा, उनके स्तनों पर कम से कम कोई हल्का सा निशान तो होता, जहाँ उनके शिशुओं ने दूध पिया होता।

घोड़ों के खुरों की आहट और घूमते पहियों की घड़घड़ाहट के अलावा वहाँ घोर सन्नाटा था। चरणबिहारी ने एक बार फिर इस सन्नाटे का फायदा उठाते हुए कहा, “सुनो आगे क्या हुआ।” यात्री उनकी कहानियाँ सुनने के लिए उत्सुक प्रतीत हुए, इसलिए चरणबिहारी ने शुरू किया, “फिर सिकंदर लोदी आया। यह चार सौ वर्ष पूर्व की बात है... इस सिकंदर साहब ने मथुरा के सभी मंदिरों को तोड़ दिया और उनकी जगह कसाई की दुकानें खोल दीं। और, उसने आदेश दिया कि देवताओं की मूर्तियों के टूटे हुए टुकड़ों से मांस नापने के लिए बाट बनाए जाएँ, जिन्हें ये कसाई बेच रहे थे!” तीर्थयात्री स्तब्ध रह गए और एक शब्द भी नहीं बोले। चरणबिहारी ने अपने सामने रखे तांगे पर नज़र डाली। तांगे के हर झटके के साथ लड़की का शरीर उछल रहा था, और इस अनैच्छिक झटके से उसके सुंदर युवा शरीर के वे सभी स्थान स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे,

जहाँ मांस सबसे अधिक जमा हुआ था। लेकिन, जब उन्होंने उसकी आँखों को देखा तो वे आश्चर्यचकित रह गए क्योंकि वे आँसुओं से भरी हुई थीं, और गहरे, निर्मल तालाबों की तरह लग रही थीं।

क्या यह संभव था कि सिकंदर लोदी के बारे में उसने जो कहा था, टूटी हुई मूर्तियों को बाट-माप में बदलने की बात, उसका उस पर इतना गहरा असर हुआ हो? असंभव!

सचमुच, उसने सोचा, अज्ञात दुःख की छाया सुंदर स्त्रियों को और भी आकर्षक बना देती है! लेकिन, जैसे ही यह विचार उसके मन में आया, एक बहुत ही आश्चर्यजनक घटना घटी! सौदामिनी के चेहरे पर छाए दुःख का रंग अचानक बदल गया। जब उसने उसे देखा, तो आश्चर्य से पाया कि इस लड़की का चेहरा उसकी अपनी बेटी के चेहरे से मिलता-जुलता था! उसकी बेटी बड़ी हो रही थी, और वह कई मौकों पर और कई कारणों से उसके बारे में सोचता था। हाँ, उसकी बेटी बड़ी हो रही थी। उसने चमेली के फूलों की मालाएँ बुनना शुरू कर दिया था, और उन्हें भगवान मुरलीधर की मूर्ति पर पहनाती थी।

चरणबिहारी ने खुद पर नियंत्रण रखा।

उन्होंने आगे कहा, "कुरान मूर्ति पूजा को मना करता है। इसलिए मुस्लिम इतिहासकारों ने मंदिरों की लूट और तोड़फोड़ जैसे जघन्य कृत्यों का महिमामंडन किया और इन घिनौने कृत्यों का आदेश देने वाले बादशाहों को इस्लाम का गौरव बताया।" चरणबिहारी अपनी बात पूरी कर पाते ही थे कि तांगे लीलाबर्ग पहुँच गए। लीलाबर्ग के जंगल हर तरह की सूखी, कांटेदार झाड़ियों और पौधों से भरे हुए थे।

गौतम पांडा, जो रॉयचौधरी के तांगे के साथ-साथ साइकिल चला रहे थे, ने कहा, "लीलाबाबा की झूलन की शोभायात्रा अभी शुरू नहीं हुई है और अभी भी कल हुए झूलन उत्सव के निशान दिखाई दे रहे हैं।" तांगे में बैठे लोगों ने चारों ओर देखा और पाया कि पटाखों के अवशेष इधर-उधर बिखरे पड़े हैं। खाने की पैकिंग के लिए इस्तेमाल होने वाले तोमल के पत्तों से बने पैकेटों के ढेर लगे हुए थे।

श्री आनंदमयी माता के आश्रम पहुँचते ही वृंदावन का नज़ारा पूरी तरह बदल गया। गौतम पांडा ने कहा, "इस साल बरसोना के व्यापारी देर से आ रहे हैं। वे अभी-अभी आना शुरू हुए हैं। उन इलाकों में भयंकर सूखा पड़ा है और अब जाकर कुछ बैलगाड़ियाँ चलने लगी हैं।" सचमुच, राजमार्ग पर कुछ बैलगाड़ियाँ दिखाई दे रही थीं। सौराष्ट्र की ऊँटों से खींची जाने वाली बैलगाड़ियों की तरह बड़ी और चौड़ी। वे लोगों और सामान से इतनी लदी हुई थीं कि उन्हें खींचने वाले बेचारे बैलों की गर्दनें भारी भार के कारण लगभग ज़मीन को छू रही थीं।

तांगे आकर चुंगी दरगाह के सामने रुक गए। दरवाज़ा बंद था, लेकिन चारों ओर सुरक्षा काफ़ी कड़ी थी। झूलन त्योहार के कारण भारी सामान पर कर लगा दिया गया था। लाठी लिए एक सिपाही रॉयचौधरी के तांगे की ओर बढ़ा। उसने चारों ओर देखा और कठोर स्वर में आदेश दिया, "सब नीचे उतर जाओ। जुर्माना भरना पड़ेगा।"

गौतम पांडा, जो साइकिल पर उनका पीछा कर रहा था, ने रॉयचौधरी के कान में फुसफुसाते हुए कहा, "बस उसे दस रुपये दे दो। इतना काफी होगा उसका मुंह बंद करने के लिए।"

गौतम पांडा की भविष्यवाणी सही साबित हुई। द्वार खुल गया और जैसे ही वे उसके पास पहुँचे, उन्हें अंदर जाने के लिए कहा गया।

रंगनाथ मंदिर का गुंबद देखकर सौदामिनी की आँखों में आँसू भर आए। यह उनके दिवंगत पति का पसंदीदा मंदिर था और वे कॉलेज के दिनों में अक्सर यहाँ आते थे। आज रंगनाथ में झूलन के लोकप्रिय त्योहार का बड़ा मेला लगा था। मंदिर के आसपास का इलाका रंग-बिरंगी छोटी-छोटी दुकानों से भरा हुआ था, जिनमें तरह-तरह की चीजें बिक रही थीं। सिंह द्वार के पास एक दुकान में सौदामिनी ने एक आदमी को दवाइयाँ बेचते देखा। उसने एक बड़ी जगह घेर रखी थी, जहाँ उसने बाघ का तेल, मगरमच्छ की खाल, विभिन्न मछलियों की हड्डियाँ और पित्त जैसी अजीबोगरीब चीजें प्रदर्शित कर रखी थीं। उसके सामने एक पुराना, टूटा-फूटा लाउडस्पीकर था, जिस पर वह लगातार अपनी बेची जाने वाली चीजों के विभिन्न लाभों का प्रचार कर रहा था। वहाँ रंग-बिरंगे कपड़ों के टुकड़ों से सजा एक छोटा सा चिड़ियाघर जैसा स्टॉल भी था। इस स्टॉल पर भी बहुत से लोग आ रहे थे। इस सिंह द्वार के पास कुछ भूखे-प्यासे, कंकाल जैसे भिखारी भी बैठे थे। त्योहार का समय होने के कारण, कई धनी सेठजी पूजा-अर्चना करने आए थे और वे वृंदावन के जरूरतमंदों को भोजन और वस्त्र (भंडार) बांट रहे थे। कुछ लोग धोती, साड़ी और कंबल भी दे रहे थे। ब्रज में जीवन यापन कर रहे उन चिरस्थायी जीवों के लिए इससे अधिक आकर्षक और कुछ नहीं हो सकता था। यहां तक कि वे कुष्ठ रोगी भी, जो आमतौर पर अंधेरी गलियों में छिपे रहते थे, उस दिन बाहर निकले। ब्रज के लोग कहते थे कि ये कुष्ठ रोगी जानबूझकर इन अंधेरी और नम गलियों में छिपे रहते हैं, ताकि धूप और हवा से वंचित रहकर उनके पहले से ही क्षतिग्रस्त अंग और भी बदसूरत और भयावह हो जाएं।

एक-एक करके तांगे धीरे-धीरे सड़क के मोड़ से आगे बढ़े और यहाँ गाड़ियों की कतार दो भागों में बँट गई। चरणबिहारी ने अपनी बुलंद आवाज़ और शब्दों के बल पर उनमें से अधिकांश को तांगाशाला से होते हुए रेतिया बाज़ार की ओर ले जाने में कामयाबी हासिल की।

डॉ. रॉयचौधरी का तांगा गोपीनाथ बाजार की ओर मुड़ गया। सौदामिनी ने देखा कि लगभग सभी इमारतें जर्जर और खंडहर हो चुकी थीं। खंडहरों का रंग प्राचीन छाल या प्राचीन पांडुलिपियों जैसा हो गया था। उसने यह भी देखा कि कुछ संकरी गलियाँ एक खास जगह से शुरू होती थीं, लेकिन फिर कहीं जाती हुई प्रतीत नहीं होती थीं, वे रहस्यमय तरीके से गायब हो जाती थीं!

दशरथ अखाड़ा के छोटे से आश्रम जैसे परिसर में एक टूटे हुए मंदिर के सामने तांगा रुका। मंदिर के भूतल के कमरे खुले हुए थे और डॉ. रॉयचौधरी सौदामिनी को इमारत के पीछे की ओर एक छोटे से कमरे में ले गए। अंधेरे कमरे में प्रवेश करते ही उन्हें घुटन महसूस हुई। ऐसा लग रहा था मानो किसी भी दीवार में सूरज की रोशनी या हवा आने के लिए कोई छेद न हो, और ऐसा लग रहा था जैसे कमरा जमीन के नीचे बना हो। अंधेरे में उन्होंने दीवारों को टटोलना शुरू किया, और राहत की सांस लेते हुए पाया कि एक छोटा सा छेद है। उन्होंने छोटी सी खिड़की खोली और हल्की रोशनी की एक पतली सी किरण उस नमी भरे कमरे में फैल गई। उन्होंने देखा कि खिड़की के पास एक नीम का पेड़ था। अचानक उन्हें पास ही कहीं कुछ लोगों के फुसफुसाने की आवाज सुनाई दी, और उन्होंने गर्दन उठाकर देखा। जी हाँ, वे वहीं थे, बूढ़ी महिलाओं का एक समूह

जमीन पर घुटनों के बीच सिर रखकर बैठा था, उनके सामने एक मृत शरीर पड़ा था! उनमें से कोई भी रो नहीं रही थी, न ही किसी के चेहरे पर शोक या दुख का कोई भाव था। वे असहाय होकर वहीं बैठे रहे, मानो उन्हें पता ही न हो कि उन्हें क्या करना चाहिए या वे क्या कर सकते हैं। मृत महिला का थोड़ा-बहुत सामान चारों ओर बिखरा पड़ा था: विभिन्न रंगों के पुराने, फटे-पुराने कपड़ों का ढेर, पीने के पानी के लिए उसका मिट्टी का घड़ा, और सर्दियों में ठंड से बचने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला गोबर का ईंधन।

अचानक, एक लंबा-चौड़ा और तगड़ा पांडा वहाँ ऐसे आ पहुँचा जैसे स्वयं मृत्यु का देवता यमदूत हो! डरी हुई बूढ़ी औरतें और भी पास दुबक गईं। पांडा मृत स्त्री का सामान इधर-उधर फेंकने लगा और उसे खंगालने लगा। उसने पानी का घड़ा और गोबर से बनी चपातियाँ लात मारकर गिरा दीं, जिससे बूढ़ी औरतें डर के मारे काँप उठीं और कुछ कदम पीछे हट गईं। इतने से भी संतुष्ट न होकर, वह आदमी शव को कुरेदने लगा। कौन जाने, शायद बूढ़ी औरत ने अपने पास सोने-चाँदी के सिक्के छिपा रखे हों। शायद कमर पर या बाँहों पर बाँध रखे हों?

कुछ तो जरूर था, क्योंकि पांडा ने लाश से कुछ निकाला। जैसे ही मृत स्त्री खाटिया पर औंधे मुंह गिरी और उसका निचला शरीर नंगा हो गया, सौदामिनी सदमे और अविश्वास से देखती रही। पांडा ने जो कुछ भी पाया था, उसे उठाया और ध्यान से देखा। फिर घृणा से मुंह बनाकर उसे दूर फेंक दिया।

उन्होंने कहा, “मुझे पूरा यकीन है कि उन्होंने आपमें से किसी एक के पास कुछ न कुछ जरूर छोड़ा होगा। आखिर, वह भजन आश्रम में राधेश्याम* थीं।”

दोनों महिलाओं ने एक-दूसरे की ओर देखा। फिर उनमें से एक ने हिम्मत जुटाकर जवाब दिया, "बुजुर्ग महिला आपके बर्तन धोती थी और आपकी रोटियों के लिए आटा गूँथती थी।"

उस आदमी ने उस पर चिल्लाते हुए कहा, “चुप रहो! चुप रहो! मैं चार आदमियों को लाश हटाने के लिए भेजूंगा। वे लाश को ले जाकर यमुना में फेंक देंगे।”

वृद्ध महिलाओं ने एक बार फिर एक-दूसरे की ओर देखा। उन्हें वे चार आदमी याद आ गए जिनका वह जिक्र कर रहा था, वे आदमी जो गिद्धों की तरह मृतकों की तलाश में घूमते रहते थे! जब राधा अष्टमी मेले में भीड़ में किसी वृद्ध महिला की मृत्यु हो जाती थी, या रंगनाथ रथ मेले में भगदड़ में कोई मर जाती थी, तो ये आदमी इन शवों के पास इस उम्मीद में मंडराते रहते थे कि शायद किसी वृद्ध महिला का दांत सोने का हो! इसलिए लावारिस शवों को घसीटकर ले जाने के लिए नियुक्त ये चार आदमी ब्रज के भीड़भाड़ वाले स्थानों के आसपास मंडराते रहते थे, जैसे कि 80 क्रोश की पवित्र परिक्रमा, लोकप्रिय नंदा उत्सव, होली उत्सव, हारोंगा उत्सव आदि।

उस दोपहर जब सौदामिनी अपने नए घर में व्यवस्थित होने के बाद छत पर पहुँचीं, तब तक सूरज नीम के पेड़ों की कतारों के पीछे छिप चुका था। जहाँ वह खड़ी थीं, वहाँ से उन्हें रंगाजी मंदिर का विशाल प्रांगण साफ़ दिखाई दे रहा था। उस दिन होने वाले लोक मेले के आयोजन स्थल पर भीड़ जमा होने लगी थी। वहाँ एक विशाल लोक स्तंभ था, जिस पर पहलवान उस दिन अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने वाले थे। कुछ पुजारी एक चबूतरे पर खड़े होकर स्तंभ पर तेल और पानी डाल रहे थे, और ढलते सूरज की हल्की रोशनी में वह किसी साँप की चिकनी और फिसलन भरी त्वचा

की तरह चमक रहा था। एक भव्य रूप से सजा हुआ हाथी चबूतरे के पास लाया गया और भीड़ में उत्साह और शोर बढ़ गया। अचानक, रंगनाथ के तटबंध से तोप जैसी आवाज़ सुनाई दी।

सौदामिनी की मां ने नीचे से उसे पुकारा, "आओ बेटी, नीचे आओ। चलो जाकर देखते हैं कि क्या हो रहा है।"

अनुपमा ब्रज की गलियों और उप-गलियों से अच्छी तरह वाकिफ थी, क्योंकि वह पहले भी कई बार यहाँ आ चुकी थी। अब वह और उसकी बेटी नंगे पैर आगे बढ़ीं। बाज़ार में अंगूरों के ढेर चमकीले कांच की तरह लग रहे थे; तुलसी और गोपीचंदन की मालाएँ और माखन मटी बेचने वाले स्टॉल आज और भी आकर्षक और रंगीन दिख रहे थे। लेकिन इनमें से कोई भी उस स्टॉल की बराबरी नहीं कर सकता था, जहाँ अष्टधातु की बिक्री हो रही थी, जो आठ कीमती और पवित्र धातुएँ हैं जिनका उपयोग बालगोपाल, मुरलीधर और सूर्यवंश के राजाओं की मूर्तियाँ बनाने में किया जाता था। इन स्टॉलों के आसपास कई दर्शक थे, हालाँकि खरीदार बहुत कम थे क्योंकि वस्तुएँ काफी महंगी थीं।

अनुपमा और उसकी बेटी में सिंह द्वार पर उमड़ी भीड़ के बीच से मंदिर में प्रवेश करने का साहस नहीं था। इसके बजाय, सौदामिनी का हाथ कसकर पकड़े हुए अनुपमा ने द्वार के पास की सीढ़ियों पर चढ़ने की कोशिश की। लेकिन तब तक, यहाँ का बरामदा भी दर्शकों से भर चुका था। तटबंध से तोप जैसी आवाज़ फिर सुनाई दी और उत्सुक भीड़ ने उत्साह से गर्जना की।

इंतजार कर रहे नंगे बदन पहलवानों ने अब तेल से सने खंभे पर चढ़कर चबूतरे तक पहुँचने का कठिन काम शुरू किया। खंभा पहले से ही चिकना था, और पुजारी लगातार ऊपर से उस पर तेल और पानी के घड़े उड़ेल रहे थे। इस खंभे पर चढ़ना आसान नहीं था। एक-एक करके प्रतियोगी एक निश्चित ऊँचाई तक चढ़ते, और फिर वे हर बार फिसलकर एक-दूसरे के ऊपर गिर पड़ते। और हर बार जब उनमें से कोई फिसलता, तो भीड़ ज़ोर से हँसने लगती!

देहाती संगीत दल का एक समूह जोश भरी धुन बजा रहा था, जिससे पहलवानों का उत्साह और भी बढ़ गया। सचमुच, यह विशाल जनसमूह के सामने अपनी बहादुरी और कौशल साबित करने का एक बेहतरीन मौका था। लेकिन उनमें से कोई भी एक निश्चित सीमा से आगे नहीं बढ़ पाया। वे थोड़ी दूर तक चढ़ते और फिर फिसलकर नीचे गिर जाते! और दर्शकों की हंसी और भी तेज होती चली गई, जबकि रंगनाथ और उनकी पत्नी गोदम्मा अपने सुनहरे सिंहासनों पर बैठे इस दृश्य का आनंद ले रहे थे। ऐसा लग रहा था मानो भगवान और गोदम्मा आज मानव रूप में धरती पर आए हों और इस रोमांच और आनंद में शामिल हो रहे हों।

"आह! एक आदमी ऊपर है! वो ऊपर है!" भीड़ ने ज़ोर से चिल्लाया। एक पल के लिए सन्नाटा छा गया। एक पहलवान लगभग शिखर तक पहुँच गया था। और, बिना किसी खास मेहनत के, उसने आखिरी चबूतरे को छू लिया। उमड़ती भीड़ उत्साह से पागल हो गई और चारों ओर अफरा-तफरी मच गई! सिंह द्वार के पास और आसपास तैनात सुरक्षाकर्मियों ने अपनी लाठियाँ बेतहाशा चलाईं, लेकिन उनका कोई खास असर नहीं हुआ। किसी ने भी विजेता को रंगाजी द्वारा दिए जाने वाले पारंपरिक पुरस्कार और आशीर्वाद को नहीं देखा। ऐसा लगा जैसे किसी ने सौदामिनी और अनुपमा के कानों में फुसफुसाया हो, "भागो! जितनी तेज़ी से भाग सकते हो भागो! क्या तुम

नहीं देख सकतीं, लोगों का वह विशाल सागर इस तरफ उमड़ रहा है?”

---

* निर्धन महिलाएं, जिनमें अधिकतर विधवाएं होती हैं, जो सांत्वना पाने या अपने अंतिम दिन पवित्र नगर ब्रज में बिताने के लिए वृंदावन जाती हैं। वे मंदिरों में भक्ति गीत गाती हैं जिसके बदले उन्हें मामूली रकम मिलती है।

Two

सौदामिनी ने इस नए जीवन से परिचित होने और इसमें ढलने की कोशिश की। स्वभाव से जिज्ञासु होने के कारण वह अपने आसपास की हर चीज़ के बारे में उत्सुक थी: राधेश्यामियों का जीवन, नए और प्राचीन मंदिर, बिल्वमंगल कुंज के खंडहर, श्रृंगार बोट, साक्षी गोपाल, और उसने इन सभी के बारे में जानने में जरा भी देर नहीं की। उसने उन खंडहरों का भी दौरा किया जो कभी भव्य प्राचीन स्मारक हुआ करते थे। वे खंडहर जो अब कंटीली झाड़ियों के जंगलों से घिरे हुए थे। कई दिनों तक सौदामिनी उन स्थानों पर घूमती रही, उनके इतिहास और पौराणिक कथाओं से पूरी तरह मोहित। वास्तव में, उसे लगा कि ब्रज के इन प्राचीन खंडहरों और मंदिरों में एक अनोखा आकर्षण है जो किसी के भी दिल को छू सकता है। जयपुर के राजभवन की उन पुरानी पत्थर की मूर्तियों की तरह, जो अब काई से ढकी हुई थीं, अगर कोई चाहे तो उनकी हृदयस्पर्शी आवाज़ें आज भी सुन सकता है।

औरंगजेब ने बहुत पहले प्राचीन गोविंद मंदिर में कृष्ण की सहेलियों, गोपियों की अमूल्य मूर्तियों के हंस जैसे गले तोड़ देने का आदेश दिया था। लेकिन आज भी, यदि कोई लाल पत्थर से बने इस टूटे-फूटे पुराने मंदिर में ध्यान लगाकर बैठे और गहन श्रवण करे, तो उसे दुःख और पीड़ा की मार्मिक धुनें सुनाई देती हैं।

इसी बीच, डॉ. रॉयचौधरी ने औषधालय में काम करना शुरू कर दिया था। इसलिए वे अक्सर घर से बाहर रहते थे। सौदामिनी अपना समय, खासकर दोपहर के समय, अखाड़े (आश्रम) और उसके आसपास के इलाकों में घूमते हुए बिताने लगीं। अखाड़े के दाहिनी ओर, हरबारी की ओर जाने वाली छोटी सी गली में एक अजीब सी जगह थी, और इसके पास ही बेहरिमोहन कुंज का मंदिर था।

एक दिन, वह इस रहस्यमयी स्थान पर जाने के इरादे से मंदिर की छत पर चढ़ीं। लेकिन जैसे ही वह सीढ़ियों से नीचे उतरने लगीं, मंदिर में रहने वाले साधुओं ने उनसे कहा, "चूंकि आप यहां नई हैं, इसलिए बेहतर होगा कि आप वहां न जाएं।" छत पर चारपाई पर सोने वाले और अपना खाली समय पहक्वाज बजाने में बिताने वाले इन साधुओं के इन शब्दों ने सौदामिनी की जिज्ञासा और बढ़ा दी। पुजारियों के सामने आदरपूर्वक झुकते हुए उन्होंने उत्तर दिया, "ब्रजधाम की हर एक इंच भूमि मेरे लिए महत्वपूर्ण है।"

वह टूटी-फूटी और फीकी पड़ी पुरानी सीढ़ियों से नीचे उतरी। उसने एक पुराना, अप्रयुक्त कुआँ देखा, जिसका ऊपरी भाग काई से ढके कुछ लकड़ी के तख्तों से ढका हुआ था। पास ही कुछ छोटे और अंधेरे जर्जर कमरे थे जो इंसानी बस्तियों से ज़्यादा कबूतरखानों जैसे लग रहे थे। यहाँ विधवा राधेश्यामियों का एक बड़ा समूह रहता था। वे घोर कुपोषित थीं और गंदी और फीकी पुरानी धोतियाँ पहने हुए थीं। लेकिन उनके माथे बिभूति (पवित्र राख) से चमक रहे थे और उन

पर चंदन की लकीरें बनी हुई थीं। सौदामिनी को देखकर, बूढ़ी औरतें अपने कबूतरखानों से बाहर आईं और उत्सुकता से उसे घेर लिया।

“महिलाओं, आप यहाँ अपना जीवन यापन कैसे करती हैं?” सौदामिनी ने पूछा।

उन 'महिलाओं' ने एक-दूसरे को देखा। फिर उनमें से एक, जिसकी धँसी हुई आँखें सूरज की रोशनी से चमक रही थीं, ने उत्तर दिया, "जब ज़रूरत होती है, तो हम कछुआ मंदिर के द्वार पर और रंगाजी के यहाँ बैठकर भीख माँगते हैं। जब कोई और रास्ता नहीं बचता, तो हम पूरी रात मंदिर के सामने बैठकर मालचा भेंट की प्रतीक्षा और आशा करते हुए बिताते हैं।"

"लेकिन अगर तुम मंदिर में भजन गाने वाले राधेश्याम बन जाते, तो तुम्हें दिन में कम से कम दो वक्त का भोजन अवश्य मिल जाता," सौदामिनी ने कहा।

यह सुनकर सभी महिलाएं खिलखिलाकर हंस पड़ीं और उनमें से एक ने व्यंग्यपूर्वक गाना शुरू कर दिया, "सेठबारी का भजन आश्रम, गोपीनाथ का भजन आश्रम, बोरबाग का भजन आश्रम, अस्तबल का भजन आश्रम!"

“सुनो,” उसने कहा, “लेखाकार राधेश्यामियों के पैसों से इतना मोटा हो गया कि अब उठ भी नहीं सकता। तुम यहाँ नए होगे, तभी तो तुम्हें यह पता है। यह मोटा आदमी सभी राधेश्यामियों को देखता रहा, उनके पतले हाथों-पैरों और भूखे शरीरों को। उसे पता चल गया कि उनमें से कौन कब मरेगी! उसे यह भी पता चल गया कि किस मरते हुए राधेश्याम के पास कितना पैसा है और कहाँ है। उसे सब कुछ पता चल गया। सब कुछ!”

एक बार फिर बूढ़ी औरतें खिलखिलाकर हंस पड़ीं।

“एक दिन, वह दुष्ट आदमी हमारी टांगों को घूर रहा था। जैसे ही हमें इसका पता चला, हम भाग गए और अपनी जान बचा ली। नहीं तो वह हमें बाहर निकाल देता। देखो, हमारी टांगें।” और उन्होंने अपने फटे-पुराने कपड़े घुटनों तक खींच लिए और अपनी टांगें दिखा दीं।

सौदामिनी भय और सदमे से कुछ कदम पीछे हट गई। ये सभी महिलाएं बीमार थीं! उन्हें कुष्ठ रोग था।

“मेरी प्यारी बच्ची, हमें बांके-बेहारी गली में, शाहजी मंदिर के द्वार पर, दमन मोहन की सीढ़ियों पर भीख मांगना अच्छा लगता है... तुम्हारे जैसे लोग वहाँ जाते हैं।” यह कहते हुए, एक महिला ने अपने हाथों से सौदामिनी का हाथ सहलाना शुरू कर दिया। सौदामिनी डर से कांप उठी! लेकिन उस प्रेत जैसी महिला को एक अजीब सी संतुष्टि मिली। पहली महिला के इस काम से उत्साहित होकर, दूसरी ने सौदामिनी की कलाई पर सोने की चूड़ियों को छूना शुरू कर दिया, जबकि तीसरी उसके पास आकर बोली, “हमें कुछ दान दे दो ताकि हम जीवित रह सकें। तुम लोग खाने के लिए जीते हो, लेकिन हमें जीने के लिए कुछ खाना पड़ता है। हमें कुछ दे दो ताकि हम जीवित रह सकें।”

इसी बीच, बूढ़ी महिलाओं का एक और समूह छोटे कमरों से बाहर आया और सौदामिनी को घेर लिया। वे उसके कोमल युवा शरीर को छूने और सहलाने लगीं, और फिर एक अजीब और उन्मादी उत्तेजना में उसे चारों ओर खरोंचने लगीं। सौदामिनी के बाल खुल कर उसकी पीठ पर बिखर गए, उसका ब्लाउज लगभग फट गया और अगर उस समय कुछ साधु वहाँ न आते, तो शायद वे

महिलाएं जंगली भेड़ियों की तरह हिंसक हो जातीं।

साधुओं में से एक ने महिलाओं पर चिल्लाते हुए कहा, "निकल जाओ! निकल जाओ, तुम राक्षसी हो! क्या तुम्हें लगता है कि उसकी मदद करने वाला कोई नहीं है?"

तुरंत ही सारी बुढ़ियाएं कबूतरों के बिलों के अंदर गायब हो गईं।

साधु ने सौदामिनी को फटकारते हुए कहा, "क्या मैंने तुम्हें नहीं कहा था कि इन जगहों पर अकेले मत जाओ? ये बूढ़ी औरतें लोगों को खा सकती हैं। चलो, मैं तुम्हें तुम्हारे रास्ते तक छोड़ देता हूँ। और एक बात और बता दूँ। ये औरतें बहुत बदनसीब हैं। मुझे पता चला है कि तुम ब्रज को अपना स्थायी घर बनाने के इरादे से आई हो। जब भी मौका मिले, इन औरतों की भलाई के बारे में सोच लेना।"

सौदामिनी ने गोपीनाथ बाजार की मुख्य सड़क पर कदम रखते ही अपने गले और चेहरे से पसीना पोंछा। यहाँ का भजन आश्रम अभी बंद नहीं हुआ था और एक बूढ़ी विधवा छोटे झांझों की संगत में भजन गा रहे लोगों के समूह के बीच खड़ी थी। द्वार पर बैठा एक संतरी, जिसका काम हिसाब-किताब रखना था, चुपचाप माला जपते हुए भगवान का नाम जप रहा था। वह बार-बार आँखें खोलकर राधेश्यामियों को देखता था, यह देखने के लिए कि क्या वे सचमुच गा रही हैं। ये महिलाएं भूख से बेहाल होने पर भी गाने के लिए विवश थीं। उन्हें भगवान की स्तुति पूरी ताकत से गानी पड़ती थी, चाहे उनका गला ही क्यों न घुट रहा हो। सौदामिनी ने देखा कि वे लगातार गाती तो थीं, लेकिन उनकी नज़र बार-बार सब्जी विक्रेताओं की कतार पर जाती थी। उसने देखा कि एक तरफ ढेर लगी सड़ी-गली, सूखी सब्जियों के खरीदार केवल ये गरीब राधेश्यामियाँ ही थीं।

सौदामिनी घर लौटी और फिर से अपने अंधेरे कमरे में चली गई। वह अपने अकेलेपन को भुलाने की पूरी कोशिश कर रही थी, पर यह आसान नहीं था। कभी-कभी वह अपने शरीर को निहारती। उसका शरीर कोमल और सुंदर था। पिछले सात वर्षों के मानसिक असंतुलन और पीड़ा ने भी इस सुंदर शरीर पर कोई स्थायी निशान नहीं छोड़ा था। लाख कोशिश करने के बावजूद, वह अपने जीवन की स्थिति या अपनी परिस्थिति को स्वीकार नहीं कर पा रही थी। क्या कोई और भी है, वह सोचती थी, जिसने उसकी तरह दुख झेला हो, जिसे उसकी जैसी स्थिति का सामना करने के लिए मजबूर होना पड़ा हो?

Three

डॉ. रॉयचौधरी और उनकी पत्नी अपनी बेटी के प्रति हमेशा बहुत सतर्क रहते थे और अगर उसके चेहरे पर दुःख या उदासी का जरा सा भी संकेत दिखाई देता तो वे तुरंत चौकन्ने हो जाते। एक सुबह अनुपमा ने ऐसे ही संकेत देखे और तुरंत सतर्क हो गई। देवघरी बाबा मानसरोवर स्थित अपने निवास से नीचे आए थे और उस समय ब्रज में ठहरे हुए थे। पवित्र नदी के ऊपर बने चबूतरे पर उनका शिविर स्थानीय लोगों के बीच चर्चा का मुख्य विषय था। अनुपमा ने सोचा कि इस विशेष समय पर उनका ब्रज आना एक दुर्लभ अवसर है—शायद वे उनकी बेटी के दुखी मन को शांति और सुकून दे सकें। उत्सुकता से वह बाबा के आगमन की सूचना सौदामिनी को देने गई और फिर एक दिन माता-पिता यमुना नदी के रेतीले किनारों की ओर चल पड़े। दोनों चुपचाप चलते रहे।

सौदामिनी को एक अजीब सी खुशी का एहसास हो रहा था। वह सोच रही थी कि इसका क्या मतलब है। क्या यह उसकी जिज्ञासा का परिणाम था? या क्या वह उसी तरह की भक्ति का अनुभव कर रही थी जिसने कभी गौरिया भैष्णवों, भगवान श्री कृष्ण के भक्तों को, एक प्रकार के दिव्य परमानंद में विलीन कर दिया था? सौदामिनी ने पाया कि वह अपनी इस भावना को तुच्छ और महत्वहीन नहीं मान सकती थी। बांके बिहारी में मूर्ति को देखते ही उसे यह अनुभूति होती थी। वास्तव में, उसने ब्रजधाम में कम से कम एक और व्यक्ति को इसी तरह के असीम प्रेम में डूबे हुए देखा था। और वह थी मंदिर की वृद्ध नर्तकी।

जब भगवान रंगनाथ ब्रज देश के नियमित भ्रमण के दौरान अपने भाले को लेकर अमराकुंज जाते थे, तो उनके पीछे एक रंगारंग जुलूस निकलता था। ऐसे समय में, वह बूढ़ी नर्तकी पुजारियों के घर के पास बनी अपनी जर्जर झोपड़ी से बाहर आती थी। उसके कमजोर और निर्बल शरीर ऐसे उत्साह और आनंद से भर जाते थे कि ऐसा लगता था मानो केवल उसका नृत्य ही भीड़ को मंत्रमुग्ध कर देता हो। यह भक्ति और प्रेम अद्भुत और अद्वितीय था। यह पूरी तरह से निस्वार्थ प्रेम था जो सौभाग्य और दुर्भाग्य, भाग्य और दुर्भाग्य में कोई भेद नहीं करता था। जब भी सौदामिनी उस बूढ़ी स्त्री से मिलती, उसकी आँखों में आँसू भर आते। वह सोचती, आखिर ये आँसू अनायास ही क्यों बहने लगते हैं?

अनुपमा और उसकी बेटी सूखी, चिकनी रेत पर चुपचाप चल रही थीं। उन्होंने कई विशाल कछुओं को किनारे पर चढ़ते देखा। एक बड़े अर्जुन वृक्ष के नीचे उन्होंने मोरों के एक समूह को अपने सुंदर पंख फैलाते हुए देखा।

वे पीपर के तालाब के पास पहुँचे और देखा कि यमुना नदी पहले की तरह भरी हुई नहीं थी। पानी सूखने लगा था और नदी के बीचोंबीच रेत का एक गोलाकार टीला बन गया था। उन्हें दूसरे किनारे पर बाबा का शिविर दिखाई दिया। उन्होंने देखा कि वहाँ भक्तों की भीड़ अभी भी कम थी।

पानिगाँव, राया, बोरसोना आदि से आए अधिकांश तीर्थयात्री सुबह ही बाबा के दर्शन कर चुके थे, और बल्लमगोर और हाथरस जैसे अन्य स्थानों से आने वाले तीर्थयात्री दिन में बाद में आने वाले थे।

खाली घड़ों से बने पुल से बाबा के शिविर तक जाना संभव नहीं था क्योंकि जगह-जगह गंदा रुका हुआ पानी जमा था। ऊँची जगह पर चढ़कर सौदामिनी और उनकी माँ ने देखा कि नदी के बीचोंबीच गहरे पानी में तेज़ धारा बह रही थी और श्रद्धालुओं को नदी पार कराने वाले नाविक अपनी नावें बाँधकर जाने ही वाले थे। वे नाविकों के पास गईं और पूछा कि क्या वे उन्हें नाव से बाबा के शिविर तक पहुँचा सकते हैं। नाविकों ने कहा कि अगर और यात्री होंगे तो वे उन्हें नदी पार करा देंगे। माँ और बेटी ने पीछे मुड़कर देखा तो कुछ और लोग आते हुए दिखाई दिए, जिनमें गोविंदजी मंदिर की नेत्रहीन माली और लुइबाजार के अस्तबल की देखभाल करने वाले बूढ़े गोबर्धन बाबू भी शामिल थे। सौदामिनी ने एक और व्यक्ति को अपनी ओर आते देखा—ब्रज के प्रसिद्ध कलाकार चंद्रभानु राकेश। वे राधाबर्ग से ऊबड़-खाबड़ और कठिन रास्ते से यमुना नदी के किनारे आ रहे थे। राकेश राधाबर्ग में ताड़ के पत्तों की छतरी के नीचे बैठकर प्रसिद्ध अष्टधातु धातु में मूर्तियाँ तराशते थे। उन्होंने श्री कृष्ण की रास लीला के सुंदर चित्र भी बनाए थे, जो निकुंजबन में रखे हुए हैं। उनके पूर्वज कलिंग से आए थे और राकेश अक्सर ताड़ के पत्तों की छतरी के नीचे बैठकर अपने पूर्वजों और उन भयानक दिनों की बातें करते थे जब अफगानी हिंदूकुश के पहाड़ी रास्तों से नीचे आए थे। अभी कुछ ही दिन पहले आचार्य शांतिभद्र ने कहा था, “उस समय कलिंग के राजा गंगा वंश के नरसिंहदेव थे। उड़ीसा में बाहरी व्यापार बिल्कुल नहीं होता था और हालात बहुत खराब थे। कलाकारों के पास रहने के लिए छत नहीं थी और खाने के लिए भोजन भी नहीं था। चित्रकला और अन्य कलाएँ अतीत की बात हो गई थीं। इसी दौरान चंद्रभानु के पूर्वज मथुरा के कुछ खंडहर मंदिरों में शरण लेने आए थे। और आक्रमणकारियों के नारे, ‘मस्जिदें बनाओ! मंदिर तोड़ो!’ उनके कानों में लगातार गूंजते रहे।”

चंद्रभानु राकेश के कई पूर्वजों का इन मंदिरों के परिसर में ही नरसंहार किया गया था। अपनी छतरी की छाँव में बैठे, अपनी मूर्तियों के लिए इस्तेमाल की जाने वाली अष्टधातु में भगवान कृष्ण की पत्नी राधा की सुंदर आकृति को जीवंत करते हुए, चंद्रभानु ने अचानक इस बिंदु पर अपनी कथा रोक दी। और जैसे-जैसे राधा की आकृति में चमक और सुंदरता बढ़ती गई, कलाकार का चेहरा उदासी से भरता चला गया, मानो वह जानता हो कि निकट भविष्य में उसकी सुंदर धातु की मूर्तियाँ भी यमुना की रेत में डूब जाएँगी और हमेशा के लिए खो जाएँगी। जिस प्रकार अक्रूर घाट और चिरहरण घाट, जो कभी कीमती पत्थरों, हीरों, माणिकों और मोतियों से जड़े हुए थे और जिन्हें देखने और प्रशंसा करने के लिए सम्राट अकबर आए थे, अब पवित्र नदी के किनारे इधर-उधर बिखरे लाल पत्थर के टुकड़ों मात्र रह गए थे, उसी प्रकार उसकी कलाकृति भी लुप्त हो जाएगी।

शुष्क मौसम में, दिसंबर और जनवरी के महीनों में, जब यमुना नदी का जल चिरहरण घाट से बहुत दूर तक पीछे हट जाता था, तो इस पवित्र नदी के किनारे बिल्कुल अलग दिखते थे। प्राचीन स्मारकों के खंडहर, जो मनुष्य या प्रकृति की मनमानी से नष्ट हो गए थे और वर्षा ऋतु में नदी में

डूबे रहते थे, अब उजागर हो जाते थे और भयानक दिखते थे। उन पर मृत कछुओं के खोल, वहाँ दाह संस्कार की गई विवाहित महिलाओं की अधजली चादरें और इसी तरह की अन्य भयावह चीजें बिखरी पड़ी होती थीं।

“क्या सब लोग यहाँ हैं?” नाविक चिल्लाया। “जल्दी करो, पश्चिम का आकाश बादलों से भर रहा है।”

चिहररण घाट से श्रद्धालुओं का एक और समूह नीचे आता हुआ दिखाई दिया। लेकिन वे अभी भी काफी दूर थे, और नाविक ने अनुमान लगाया कि उसके पास इस समूह को घाट तक पहुँचाने और दूसरे समूह को लेने के लिए वापस आने का पर्याप्त समय है।

जैसे ही नाव दूसरे किनारे के पास पहुँची, बाबा का शिविर और अधिक स्पष्ट दिखाई देने लगा। संन्यासी के चबूतरे के नीचे कुछ अस्थायी झोपड़ियाँ बन गई थीं, जो भक्तों से भरी हुई थीं। बाबा के अनुयायियों में से कुछ स्वयंसेवक भीड़ के बीच जाकर उनकी जरूरतों का ध्यान रखने लगे। जैसे ही नए लोग नावों से उतरे, पूरा इलाका "जय यमुनाजी, जय!" के नारों से गूंज उठा।

जब सभी लोग नंगी रेत पर बैठकर बाबा के चबूतरे पर आने का इंतज़ार कर रहे थे, तभी एक बूढ़े व्यक्ति ने पुकार कर कहा, “बाबा, कृपया बाहर आइए और हमें दर्शन दीजिए।” तुरंत ही पूरी भीड़ ने एक साथ चिल्लाकर कहा, “बाबा, कृपया बाहर आइए। कृपया हमें दर्शन दीजिए।”

बाबा अपने छोटे से कमरे से बाहर आए। उन्होंने कोई वस्त्र नहीं पहने थे। उनका शरीर नंगा था। उनके उलझे हुए बाल सूखी रेत के रंग के थे। अपने गुफा जैसे कमरे से बाहर आते ही वे किसी इंसान से ज़्यादा जंगली जानवर जैसे लग रहे थे।

लोगों की भीड़ रेत पर घुटने टेककर बैठ गई। फिर, कुछ देर बाद, श्रद्धालु एक-एक करके खड़े हुए और अपने दुख-दर्द बताने लगे।

बाबा के कुछ शिष्य बड़ी-बड़ी बेंत की थालियाँ लेकर भीड़ में घूम-घूम कर चढ़ावे, जिनमें ज़्यादातर फल थे, इकट्ठा कर रहे थे। वे उन्हें संन्यासी के सामने रख रहे थे। आशीर्वाद देते हुए उन्होंने प्रसाद के रूप में चढ़ावे को भक्तों पर फेंक दिया और तीर्थयात्रियों ने उत्साहपूर्वक जितना हो सका, उतना ग्रहण कर लिया। अब बाबा को अपने नग्न होने का एहसास हुआ और उन्होंने अपने आप को हिरण की खाल से ढक लिया। कुछ देर बाद जब वे अपने कमरे में वापस जाने की तैयारी कर रहे थे, तभी भीड़ में से किसी ने ज़ोर-ज़ोर से विलाप किया, जिससे न केवल बाबा बल्कि वहाँ उपस्थित सभी लोग स्तब्ध रह गए।

एक दुबला-पतला बूढ़ा आदमी मंच के एक खंभे को कसकर पकड़े हुए विलाप करते हुए खड़ा हो गया।

“अरे,” लोग आपस में फुसफुसाने लगे, “ये तो वही बूढ़ा आदमी है जो रामगोपाल मंदिर में तोमल के पत्तों के पैकेट बनाता है! आखिर उसे क्या हो गया है?”

भीड़ में से किसी ने कहा, "उसे कैंसर है।"

बूढ़े ने फिर पुकार लगाई, “बाबा, मेरे बच्चे अभी बहुत छोटे हैं। मेरे मरने के बाद उन्हें रंगाजी मंदिर में भिखारियों की कतार में लगना पड़ेगा। कृपया मेरी मदद कीजिए!”

बूढ़ा आदमी रेत पर गिर पड़ा और रोने लगा।

बाबा रुक गए। वे शांत हो गए। भक्तों में एक अजीब सी अनुभूति छा गई। कुछ पल की खामोशी के बाद, उन्होंने चबूतरे के एक कोने से कुछ फल उठाए और बूढ़े आदमी की ओर फेंक दिए। बीमार बूढ़ा आदमी अत्यंत प्रसन्न हुआ। यह उसकी अपेक्षा से कहीं अधिक था। उसने श्रद्धा और कृतज्ञता में सिर झुकाकर गहरा प्रणाम किया। जैसे ही संत अपने कमरे में वापस जाने वाले थे, एक ऊँची विनती भरी आवाज़ गूँजी और उन्हें पीछे मुड़कर देखना पड़ा।

सौदामिनी अचंभित रह गई। यह अनुपमा थी।

“बाबा,” वह गिड़गिड़ा रही थी। “कृपया मत जाइए। आपको मेरी प्रार्थना सुननी ही होगी, अवश्य ही सुननी होगी।”

वह भीड़ से उठी और आगे बढ़ी। उसका पूरा रूप बदल चुका था। उसकी आँखें लाल थीं और उसका पूरा शरीर भावनाओं से काँप रहा था। सौदामिनी की ओर इशारा करते हुए उसने लगभग चिल्लाते हुए कहा, “गुरुजी, मुझे अपने लिए कुछ नहीं चाहिए। लेकिन इस लड़की की ज़िम्मेदारी आप पर डाल दीजिए। नियति ने यह ज़िम्मेदारी मेरे कंधों पर डाली है। लेकिन मुझे डर है कि मैं उसे सही रास्ते पर नहीं ले जा पाऊँगी। मुझे डर लग रहा है, गुरुजी, मुझे बहुत डर लग रहा है!”

भीड़ में कानाफूसी शुरू हो गई: “क्या वह विधवा है? अगर है, तो उसका आगे का समय लंबा और कठिन होगा। वह बहुत जवान है और ब्रज में दुष्ट और व्यभिचारी लोगों की कोई कमी नहीं है...”

किसी ने चेतावनी देते हुए कहा, “चुप रहो। बाबा उसे आशीर्वाद दे रहे हैं।”

बाबा ने कहा, “हाँ, यह सच है कि वह भेड़ियों जैसे इंसानों के बीच रह रही है। लेकिन इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। क्या तुम्हें सीता याद नहीं? हालात ने उसे भी भेड़ियों जैसे दुष्ट लोगों के बीच ला खड़ा किया था। लेकिन उनमें से किसी ने भी उसके सिर के एक बाल को भी छूने की हिम्मत नहीं की। याद रखो, तुम खुद अपनी दोस्त या दुश्मन हो, और अपनी प्यारी माँ भी। हर इंसान अपने भाग्य का खुद निर्माता है। अब जाओ। पश्चिम का आकाश बादलों से घिर रहा है और नाविक जाने के लिए बेचैन हैं। अपने-अपने घरों को लौट जाओ।”

भक्तों ने बाबा को प्रणाम करने के लिए घुटने टेके और वापस लौटने की तैयारी करने लगे। नाव पर चढ़ते समय सौदामिनी ने पीछे मुड़कर देखा कि संत और उनके शिष्य चबूतरे पर बने कमरों में चले गए थे। दोबारा पीछे मुड़कर देखने पर उसने पाया कि एक व्यक्ति अभी भी वहाँ खड़ा था, चबूतरे के एक खंभे से टेक लगाए हुए। वह दुबला-पतला चंद्रभानु था, जो एक मूर्तिकार था।

नाव से किसी ने चिल्लाकर कहा, "राकेश, वापस आ जाओ।" लेकिन कलाकार ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया।

“वापस आ जाओ, इसके बाद तुम्हें नाव नहीं मिलेगी,” किसी और ने चिल्लाकर कहा, जबकि दूसरे ने मजाक में कहा, “कोई बात नहीं, उसे तैरना आता है।”

लेकिन राकेश जरा भी नहीं हिला।

एक तीर्थयात्री ने कहा, “कलाकार पिछले कुछ दिनों से कुछ खोया-खोया सा रहता है... क्या आप में से किसी को वह घटना याद है जब हरेखावाला बाबा का पार्थिव शरीर यमुना नदी के किनारे लाया गया था? उनके शिष्यों और भक्तों ने वहाँ जमा हुए भिखारियों पर कांसे और चाँदी

के सिक्के उछालने शुरू कर दिए थे। और उस दिन, चिरहरण घाट पर बैठे हुए, इसी कलाकार ने भिखारियों का एक चित्र बनाया था जिसमें वे सिक्कों और यहाँ तक कि बाबा के शरीर के लिए भी लड़ रहे थे। वे भिखारी इंसानों से ज़्यादा कसाई की दुकान पर मांस के टुकड़ों के लिए लड़ रहे गिद्धों जैसे लग रहे थे! वह एक भयावह चित्र था, और मुझे याद है कि मैंने उसे उसे फाड़ देने की सलाह दी थी।"

"हां, यह वाकई एक भयावह पेंटिंग थी," किसी ने कहा।

एक अन्य तीर्थयात्री ने टिप्पणी की, "इन दिनों उनकी दुकान में बहुत कम ग्राहक आते हैं। क्या आपने ध्यान दिया है कि उन्हें अपनी अष्टधातु मूर्तियों में से एक को तराशने में कितना समय लगता है?"

"आजकल धातु की मूर्तियों का बाज़ार अच्छा नहीं है," किसी ने टिप्पणी की। "सिर्फ़ राकेश ही इस समस्या से जूझ नहीं रहा है। ज़्यादातर कलाकारों के पास रहने के लिए छत नहीं है। चलो, हमें चलते हैं। हमें उसका और इंतज़ार नहीं करना चाहिए। मौसम बिगड़ रहा है।"

एक-एक करके तीर्थयात्री नाव में चढ़ गए। अनुपमा का मन एक अजीब उदासी से भर गया था। उसकी हार्दिक विनती के उत्तर में, देवघरी बाबा ने केवल मैथिली की कहानी सुनाई थी। संसार में ऐसी सैकड़ों स्त्रियाँ जन्म लेती हैं और ब्रज की भूमि ऐसी असंख्य मैथिली की कहानियों से भरी पड़ी है।

किसी ने नहीं सोचा था कि इतनी जल्दी बारिश शुरू हो जाएगी। हवा तेज़ हो गई थी और एक आदमी ने कहा कि केसीघाट तक जाने के बजाय बंगशीबोट में नाव रोकना बेहतर होगा। अचानक, यमुना के रेतीले किनारों पर तेज़ बारिश की बूँदें ज़ोर से गिरने लगीं और जैसे ही नाविक ने बंगशीबोट घाट पर नाव बाँधी, यात्री किनारे कूद गए और आश्रय की ओर भागे। सौदामिनी और उसकी माँ पास ही एक जर्जर इमारत में शरण लेने गईं। मूसलाधार बारिश के कारण बाबा का शिविर दिखाई देना बंद हो गया और एक अदृश्य पर्दा सा छा गया। बलभद्र अखाड़े का द्वारपाल, जो एक पुरानी इमारत के कोने में भक्तों के एक समूह के साथ बैठा था, बोला, "सचमुच, बारिश अचानक हम पर टूट पड़ी है, बिलकुल बेमौसम।"

दूसरे ने जवाब दिया, "यह सब अच्छे के लिए है। क्या आपने ध्यान नहीं दिया कि धरती कैसे सूख रही थी?"

किसी और ने टिप्पणी की, "तो इस साल यमुना के किनारे तरबूज बहुत अच्छे होने चाहिए।"

"जी हां, इस साल बूढ़े राधेश्यामियों की भूख तरबूजों से ही मिट जाएगी," एक और तीर्थयात्री ने मजाक में कहा। "जब तरबूज बीस एक पैसे में बिक रहे हैं तो उन्हें और खाने की क्या जरूरत है!"

"आप सही कह रहे हैं! उनमें से कुछ लोग इतनी अधिक मात्रा में फल खाते हैं कि वे भीड़ भरे मंदिरों की सीढ़ियों पर बैठ जाते हैं और तीर्थयात्रियों के सामने अपच और उल्टी से मर जाते हैं और इस प्रकार उनकी सहानुभूति प्राप्त कर लेते हैं।"

"और जब शव दाह संस्कार के लिए वहाँ पड़े होते हैं," बलभद्र ने कहा, "वे कुख्यात शव ढोने वाले दो समूह उन बूढ़ी महिलाओं के पास मौजूद पैसों या अन्य सामानों के लिए आपस में लड़ने

लगते हैं। वे मारपीट करने से भी नहीं हिचकिचाते, मैंने तो उनके कुछ वार शवों पर भी पड़ते देखे हैं! लेकिन ब्रज में इन सब बातों की परवाह कौन करता है?"

"जी हां। ब्रज में जो कुछ घटित होता है! और यह सबसे पवित्र स्थान है! ब्रह्मांड का केंद्र!"

ये लोग एक साथ झुककर बैठे थे, जो इंसानों से ज्यादा आटे की बोरियों जैसे दिख रहे थे, और अपनी ही बातों पर खिलखिलाकर हंस रहे थे।

अंततः बारिश रुक गई और बाबा का चबूतरा फिर से दिखाई देने लगा। एक-एक करके तीर्थयात्री जर्जर इमारत की शरण से बाहर आने लगे।

Four

बेहरिमोहन कुंज गोपीनाथ बाजार के ठीक बीच में स्थित था। यहाँ एक प्राचीन मंदिर था और उसके बगल में एक पुरानी इमारत थी। रहस्यमयी हराबारी भी बेहरिमोहन कुंज के सामने ही स्थित थी। हराबारी का प्रवेश द्वार एक साधारण लकड़ी का दरवाजा था। लेकिन उसके पीछे एक अलग ही दुनिया थी। वहाँ प्रसिद्ध राधा-दामोदर मंदिर स्थित था और मंदिर के पीछे कई छोटे और अंधेरे कमरे थे। इन कमरों में दुबली-पतली और कमजोर बूढ़ी विधवाएँ रहती थीं, जो राधेश्यामियों के रूप में अपना जीवन यापन करती थीं। बेहरिमोहन कुंज के मंदिर के प्रभारी पुजारी आलमगढ़ के रहने वाले थे और उन्हें हमेशा 'आलमगढ़ी' कहा जाता था। मंदिर के संचालन पर निगरानी रखने वाला कोई नहीं था और उन्होंने इस आजादी का पूरा फायदा उठाया। कहा जाता था कि देवी-देवताओं के कीमती सोने के आभूषण भी उनके लालच से सुरक्षित नहीं थे। लेकिन हाल ही में, वृंदावन के कुछ युवकों ने उसके खिलाफ मोर्चा खोल लिया था और मंदिर के सामने चाय की दुकान पर शामें बैठकर गपशप करते हुए उस पर नजर रखना शुरू कर दिया था। सर्दियों में वे मंदिर की सीढ़ियों पर ही बैठ जाते थे।

इन युवकों ने वाकई कुछ उल्लेखनीय कारनामे किए थे। जब चौरागी मंदिर के एक कर्मचारी ने देवता की आभूषणों से सजी कमरबंद चुरा ली थी, तो इन लड़कों ने उसे पकड़ लिया और रेतिया बाजार के जौहरियों की सारी लोहे की जंजीरें उसके गले में लटका दीं। फिर उन्होंने उसे एक सजे-धजे गधे पर बिठाकर वृंदावन की गलियों में घुमाया। आलमगढ़ी अपने मंदिर की सीढ़ियों पर खड़े होकर उन्हें फटकारते हुए बोले कि ये सब कुत्ते बन गए हैं! लेकिन उस दिन से वे भयभीत हो गए थे और उन्होंने उन युवकों को अपने मंदिर की सीढ़ियों पर यथासंभव प्रसन्न और संतुष्ट रखने का भरसक प्रयास किया।

शशिप्रोवा नाम की एक युवा विधवा आलमगढ़ी को मंदिर के कामों में मदद करती थी। कुछ समय बाद वह उनके साथ कमरे में रहने लगी। यह कोई नई बात नहीं थी, और आलमगढ़ी को इस मुद्दे पर लड़कों की किसी भी प्रतिक्रिया का डर नहीं था। इससे पहले भी कई पुजारी बेसहारा विधवाओं को अपने कमरों में रखते थे। इस व्यवस्था से दोनों पक्षों को फायदा होता था। गरीब महिलाओं को यह तसल्ली रहती थी कि उनके मरने के बाद उनकी जरूरतों का ख्याल रखने वाला कोई होगा और पुजारियों का काम और घर का कामकाज, जो भी थोड़ा-बहुत होता था, पूरा हो जाता था। लेकिन आलमगढ़ी का भाग्य इतना सुखद नहीं था। एक दिन, बिना किसी चेतावनी के, कुछ ऐसा घटित हुआ जिसने उनके सुखी और चिंतामुक्त जीवन की सारी उम्मीदों को चकनाचूर कर दिया।

रात के काफी पहर थे। मंदिर के दरवाजे बंद थे। दुकानें और स्टॉल भी बंद थे, और यहाँ तक कि बेघर लोग, जो सड़कों पर सोने को मजबूर थे, गहरी नींद में सो रहे थे। मंदिर के सामने वाली एक

दुकान में हल्की रोशनी थी। पुजारी सो नहीं रहे थे, जबकि शशिप्रोवा उनके पास ही पलंग पर शांति से सो रहे थे। अचानक उन्हें मंदिर की ओर आते घोड़ों के खुरों की आहट और तांगे के पहियों की स्पष्ट आवाज सुनाई दी। आवाजें उनके दरवाजे पर आकर रुक गईं। खिड़की खोलकर नीचे देखने पर उन्होंने पाया कि एक तांगा ठीक उनके दरवाजे पर रुका हुआ है। हाथ में लालटेन लिए आलमगढ़ी जल्दी से नीचे गए और बिहारी कुंज के मालिक कृष्णकांत ठाकुर, जिन्हें ठाकुर साहब के नाम से जाना जाता था, को तांगे में देखकर आश्चर्यचकित रह गए। उनके साथ उनकी चालीस वर्षीय अविवाहित बेटी मृणालिनी और उनकी मानसिक रूप से विक्षिप्त पत्नी भी थीं, जो अपनी लंबी यात्रा की थकान से थकी हुई लग रही थीं।

आलमगढ़ी ने मृणालिनी की ओर मुड़कर पूछा, "तुम सब बिना किसी पूर्व सूचना के इस तरह कैसे आ गई?"

“मैं तुम्हें बाद में सब कुछ बताऊंगी,” उसने जवाब दिया। “पहले पिताजी की देखभाल में मेरी मदद करो। वे पिछले दस वर्षों से बिस्तर पर हैं और लगभग अंधे हो चुके हैं।”

उन्होंने मिलकर ठाकुर साहब को गाड़ी से नीचे उतारा। उतरते समय ठाकुर साहब के लंबे समय से निष्क्रिय और सूखे घुटनों से चरमराहट की आवाज़ आई। इसी बीच जाग चुकी शशिप्रोवा ने अपना पलंग खींच लिया ताकि थके हुए यात्री बैठ सकें। जब मृणालिनी तांगेवाले को पैसे देकर और सामान का इंतज़ाम करके अंदर आई, तो पुजारी ने कहा, “ट्रेन आज बहुत देर से आई होगी। खाने का क्या हुआ?”

“नहीं, खाने की कोई जरूरत नहीं है,” मृणालिनी ने उत्तर दिया।

उन्होंने कहा, "तो शायद एक कप गर्म चाय सर्दी और थकान से राहत दिलाने में मदद करेगी।"

शशिप्रोवा चूल्हा जलाने गया, वहीं मृणालिनी कुएँ पर नहाने चली गई। तरोताज़ा होकर वह शशि के पास आकर बैठ गई और बोली, “आप शशिप्रोवा हैं ना? किसी ने पिताजी को पत्र लिखकर उनसे विनती की थी कि वे आपके लिए हस्तक्षेप करें और आपको मंदिर में भोग लगाने से रोकें। देखिए, पिताजी देख नहीं सकते, इसलिए मुझे उनके लिए सब कुछ करना पड़ता है। सच में, इन दोनों की देखभाल करना मेरे लिए बहुत मुश्किल हो रहा है।”

शशिप्रोवा हैरान थी, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। आलमघरी आया और चूल्हे के पास बैठ गया। उसने कहा, "आपके सामान से लगता है कि आप यहाँ कुछ समय बिताने का इरादा रखती हैं।"

“कुछ समय के लिए नहीं,” मृणालिनी ने उत्तर दिया। “हम अपना सारा सामान लेकर आए हैं। हम यहीं स्थायी रूप से बसने का इरादा रखते हैं। क्या आपको हमारी स्थिति के बारे में पता नहीं है?”

“जी हां, बिल्कुल। हमें कुछ तीर्थयात्रियों से ऐसी बातें सुनने को मिलती हैं। लेकिन आपके दोनों भाइयों का क्या हुआ?”

“जिन बातों से तुम भली-भांति परिचित हो, उन्हें न जानने का नाटक क्यों करती हो?” मृणालिनी ने उत्तर दिया। “बड़े भाई मौलानापुर में हुए दंगों के दौरान मारे गए थे। उनके साथी अंधेरे में भाग निकले और एक दिन आकर हमें बताया कि उन्होंने पार्टी के नाम पर गुंडागर्दी की थी! उनकी मृत्यु के बाद उनका शव मौलानापुर की सड़कों पर पड़ा मिला। मुझे जाकर उनकी पहचान करनी पड़ी।

मैं वह दिन कभी नहीं भूल सकती।"
शशिप्रोवा हैरान रह गई। उसने चाय बनाना बंद कर दिया था और मृणालिनी के चेहरे को घूर रही थी।
"मैंने सुना है कि छोटा वाला भी भटक गया है," पुजारी ने टिप्पणी की।
"वह उसी पार्टी में था," मृणालिनी ने कहा। "कभी-कभी वह अब भी रात में हमसे मिलने आता है। लेकिन वह बिल्कुल दुबला-पतला दिखता है, और इतना भूखा रहता है कि जब भी वह आता है, मैं हम तीनों के लिए जो खाना बनाती हूँ, सारा उसे दे देती हूँ। खाते-खाते वह कहता है, 'दीदी, क्रांति आ रही है। सैकड़ों लोग मरेंगे। आपको कभी इस बात का अफसोस नहीं करना पड़ेगा कि आपने जीवन की अच्छी चीजों को खो दिया। मुझे पूरा यकीन है कि आप क्रांति देखेंगी! यही आपका बड़ा सौभाग्य है!' आलमगढ़ी, मुझे बहुत डर लगता है कि कहीं एक दिन वह लोगों को मारकर न आ जाए।" यह कहते हुए मृणालिनी का चेहरा पीला पड़ गया और वह काफी बूढ़ी लग रही थी। उसके जीवन का सबसे बड़ा डर यही था कि उसका भाई हत्यारा बन जाएगा।
शशि उठी और ठाकुर साहब और उनकी पत्नी को चाय देने चली गई। वापस आकर तीनों एक साथ बैठ गए और चाय पीने लगे। कुछ देर तक वे चुप रहे। मृणालिनी चाय की चुस्की लेते हुए शशि को निहार रही थी। शशि जवान और सुंदर थी। वह आलमगढ़ी और अपने बीच के विशाल अंतर के बारे में सोच रही थी।
पुजारी ने तीनों गिलास समेटे और कहा, "अब सोने का इंतज़ाम करने का समय हो गया है। मैं ऊपर सोऊंगा, और शशि को ज़मीन पर सोने की आदत है। हमारा कमरा साफ़ है, आप लोग उसका इस्तेमाल कर सकते हैं। वैसे भी, मुझे लगता है कि लगभग सुबह हो गई है।"
मृणालिनी ने कहा, "मुझे अब सोने का मन नहीं कर रहा है। हमें बस बूढ़े दंपत्ति के लिए बिस्तर लगाने हैं। श्रृंगार बॉट मंदिर की घंटियाँ बजने का समय लगभग हो गया है।"
शशि ने भी कहा कि अब उसे सोने का मन नहीं है। उसने कुछ देर पहले आश्रम के पांडा को स्नान घाटों की ओर जाते हुए खांसते हुए सुना था।
"तो अब आपके लिए भी नदी पर जाने का समय है। अच्छा, मैं भी आपके साथ चलूंगा और डुबकी लगाऊंगा। लीजिए, मुझे दीपक दीजिए। लगता है मैं पिछले कुछ वर्षों में सब कुछ भूल गया हूँ।"
दीपक लेकर वह बाहर गई और चारों ओर देखा। उसने ईंटों का कुआँ, ऊपरी मंजिलों तक जाने वाली टूटी हुई सीढ़ियाँ और एक पुराना नीम का पेड़ देखा। आकाश में तारे अभी भी चमक रहे थे। अभी भी काफी अंधेरा था और भोर होने में अभी कुछ समय लग रहा था। उसने सोचा कि शायद थोड़ी देर सो लेना बेहतर होता। लेकिन उसे संदेह था कि अगर वह बिस्तर पर चली भी जाती तो शायद सो पाती। मृणालिनी का मन एक अनजान डर से भरा हुआ था और कुछ समय से वह बेबसी से घिरी हुई थी। उसे ऐसा लग रहा था जैसे वह बोझ ढोने वाला जानवर हो, जैसे कोई लदा हुआ गधा अपनी रस्सी के अंत तक पहुँच गया हो!
कुएँ के दक्षिण में कुछ छोटे, अँधेरे कमरे थे। वहाँ कुछ बूढ़ी राधेश्यामियाँ और कुछ वैष्णव भिखारी रहती थीं। मृणालिनी ने देखा कि सभी दरवाजे बंद थे। उसने अंदर किसी के खांसने की आवाज़

सुनी। ये बेचारी बूढ़ी औरतें ज़्यादा देर सो नहीं सकती थीं। उन्हें मंदिर में भजन गाने जाना था और उन्हें समय पर पहुँचना था। मृणालिनी ने दीपक उठाया और सबसे छोटे कमरे की ओर देखा। पिछली बार जब वह यहाँ आई थी, तो उसने एक बूढ़ी राधेश्याम को वहाँ रहते देखा था। वह इतनी बूढ़ी थीं कि उन्हें स्नान के लिए नदी तक ले जाने के लिए दो लोगों को सहारा देना पड़ता था। फिर भी, अपनी उम्र और स्पष्ट कमजोरी के बावजूद, वह एक पलंग पर बैठी थीं और अभागी सीता और धनी राजा की संगिनी बनकर रहने वाली तीन सौ सती महिलाओं की कहानियाँ सुनाती थीं। और उन गोस्वामी की भी जिन्होंने वृंदावन को बचाया था, और मीराबाई, बल्लभाचार्य, रूप सनातन, मान सिंह और कई अन्य महानुभावों की भी। मृणालिनी को याद आया कि उस बूढ़ी औरत के पास एक पालतू तोता था। कभी-कभी चिड़िया खिलखिलाकर हंसने लगती और तुरंत ही उसकी मालकिन अपनी कहानी सुनाना बंद कर देती। ऐसा लगता था मानो यह एक तरह का संकेत हो।

मृणालिनी आखिरी कमरे तक गई और यह देखकर हैरान रह गई कि पुराना, टूटा हुआ दरवाजा थोड़ा खुला हुआ था।

शशि की आवाज आई, “दीदी, आप वहां अंधेरे में क्या कर रही हैं? हमारे वापस जाने का समय हो गया है।”

मृणालिनी ने पूछा, "क्या मेरे माता-पिता के लिए व्यवस्था कर दी गई है?"

“पुजारी ने सब कुछ देख लिया है। मैंने ऊपर वाले कमरे से पलंग नीचे लाने में उनकी मदद की। अब जल्दी करो, नहीं तो यमुना में जगह मिलना मुश्किल हो जाएगा! जैसा कि आप जानते हैं, आज राधा अष्टमी है।”

“ठीक है। एक मिनट रुको। मैं अपने कपड़े ले आती हूँ और तुम उन्हें अपने कपड़ों के साथ बाँध लेना। मुझे लगता है हमें लैंप भी साथ ले जाना होगा—गलियाँ बहुत अंधेरी हैं।”

“अगर हम केशी घाट से नीचे जाएंगे तो इसकी जरूरत नहीं पड़ेगी। वहां इतना अंधेरा नहीं होता।”

जब वे घाट के पास बरगद के पेड़ के पास पहुँचे, तब भोर हो रही थी और हल्की, नम रोशनी थी। उन्होंने देखा कि वहाँ पहले से ही गंजे सिर वाली, दुबली-पतली विधवाओं का जमावड़ा था।

साशी ने चेतावनी देते हुए कहा, “रुको। यहाँ सावधानी से नीचे जाओ। यहाँ बहुत खतरनाक जगह है।”

“खतरनाक से तुम्हारा क्या मतलब है?” उसके साथी ने पूछा।

“लोग कहते हैं कि यमुना नदी के इस हिस्से में बुरी आत्माओं का वास है और यहाँ कई लोगों की जान जा चुकी है। बोरसाना मंदिर की महिला माली की भी दो दिन पहले इसी जगह पर मृत्यु हो गई। कछुओं द्वारा खा लिए जाने के बाद उसके शरीर की हालत इतनी भयावह थी कि उसका वर्णन करना भी मुश्किल है।”

तो क्या हमें इस जगह से बचना नहीं चाहिए?

“नहीं, चिंता मत करो। क्या तुम्हें उस पुराने अर्जुन के पेड़ की जड़ें दिख रही हैं? उस तरफ ध्यान से चलो। बस! हमने खतरनाक इलाका पार कर लिया है! अब, चलो।”

उन्होंने रेत पर कदम रखा। रेत ठंडी और सुहावनी थी। नदी भी शांत और स्थिर थी।

एक जगह पर शशिप्रोवा ने कहा, "बहन, यह जगह सुविधाजनक लग रही है" और जवाब का इंतज़ार किए बिना ही उसने अपने कपड़े उतारने शुरू कर दिए। जब उसने कपड़े उतार दिए, तो उसके शरीर पर केवल एक पतली चादर ही बची थी।

फिर उसने पूछा, "दीदी, क्या आपको पानी में आने से डर लग रहा है? आइए, मैं आपकी मदद करती हूँ।" लगभग नग्न अवस्था में ही उसने मृणालिनी को पकड़ लिया और उसे नदी में खींचने की कोशिश की। मृणालिनी उसके स्पर्श से ऐसे पीछे हट गई मानो कोई भूत उसे पकड़ने की कोशिश कर रहा हो!

"मुझे इस तरह मत छुओ!" वह चिल्लाई। "और लगभग सुबह हो चुकी है। नदी में उतरने से पहले खुद को अच्छे से ढक लो।"

"क्यों, बहन? अभी सुबह होने में काफी समय है। मैं हमेशा ऐसे ही नहाती हूँ। मेरे पास ज्यादा कपड़े नहीं हैं, तुम्हें पता है ना..."

यहां तक कि अर्ध-अंधेरा भी शशि के सुंदर युवा शरीर को पूरी तरह से छिपा नहीं सका और उसे देखकर मृणालिनी को बीस साल पहले के अपने शरीर की याद आ गई।

भावुक स्वर में वह लगभग चिल्लाई, "जल्दी करो! पानी में जाने से पहले अपने कपड़े ठीक से पहन लो। नहीं तो कहीं और जाओ जहाँ मैं तुम्हें देख न सकूँ और वहीं नहा लो। मुझे यहाँ अकेले नहाने दो... तुम क्या घूर रहे हो? जल्दी जाओ, मुझे यहाँ अकेले नहाने दो।"

शशि वहां से चली गई और काफी देर तक दूर से मृणालिनी को देखती रही। इसके बाद उसे एहसास हुआ कि वह उस बुजुर्ग महिला के साथ सहज महसूस नहीं कर सकती।

यमुना नदी का पानी दिन के इस समय हमेशा सुखद रूप से गुनगुना रहता था, और शशि नदी में तैरने और नाव चलाने में काफी समय बिताना चाहती थी, शायद तब तक जब तक श्रृंगार बोट की घंटियाँ सुबह की प्रार्थना के लिए न बज जाएँ। लेकिन घंटियाँ अभी तक नहीं बजी थीं...

चुपचाप, शशि और मृणालिनी ने अपने गीले कपड़े बदले और केशी घाट होते हुए घर की ओर चल पड़े। कुछ देर बाद, मृणालिनी ने चुप्पी तोड़ी, "हमारा लगभग सारा सामान खो चुका है। अब हमारे लिए घर वापस जाना नामुमकिन है।"

"तुम्हारा क्या मतलब है?" शशि ने पूछा।

मेरा मतलब यह है कि पच्चीस साल तक जो हमारे पास था उसी से गुजारा करने के बाद अब कुछ भी नहीं बचा है।

"हमने सुना है कि आपके पिता आंदोलन में शामिल हो गए हैं?"

"तो आपने गलत सुना। पिताजी अंग्रेजों के प्रशंसक थे, उनकी बहुत प्रशंसा करते थे। वास्तव में, वे आज भी उनकी प्रशंसा करते हैं। यह कहना बिल्कुल गलत है कि वे आंदोलन में शामिल हुए थे। पिताजी कभी इतने देशभक्त नहीं थे।"

"रुको," शशि ने चेतावनी देते हुए कहा। "यह खतरनाक जगह है। हम खाली काले बैरलों से बने पुल, पीपर तालाब तक पहुँच गए हैं, है ना? बेहतर होगा कि तुम मेरा हाथ पकड़ लो। यह सुरक्षित जगह नहीं है।"

"कोई बात नहीं," उसकी साथी ने जवाब दिया। "मुझे डर नहीं है। मुझे लगा कि पीछे से कोई

आवाज़ लगा रहा है।"
"वो तो सिर्फ चौकीदार है। मैं हल्दी-कुमकुम लगाना भूल गई, जो उसे लगाने के लिए कहा जाता है।"
"क्या तुम हमेशा हल्दी-कुमकुम लगाती हो?" मृणालिनी ने पूछा।
"वह चाहता है कि मैं इसका इस्तेमाल हर दिन करूं, इसलिए मैं उसे निराश न करने की कोशिश करता हूं। इसके अलावा, वह हर सुबह तड़के नदी किनारे आता है, इस उम्मीद में कि इसे बेचकर कुछ पैसे कमा लेगा।"
उस खतरनाक रास्ते को पार करते हुए, वे दोनों सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। ये सीढ़ियाँ कम से कम एक हजार साल पुरानी थीं और कुछ पुरानी और टूटी हुई सीढ़ियाँ लगभग रेत के नीचे दब चुकी थीं।
मृणालिनी ने टिप्पणी करते हुए कहा, "इस बार हम यहां बिहारी कुंज बेचने आए हैं।"
यह सुनकर शशि स्तब्ध रह गई, लेकिन उसने कुछ नहीं कहा। इसके बजाय उसने पूछा, "अगर आप मंदिर बेच देते हैं, तो आप कहाँ रहेंगे?"
"राधेश्यामियों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले कमरों में से एक कमरा खाली हो गया लगता है। शायद हम उसका इस्तेमाल कर सकते हैं?"
"क्या! उस गंदे कमरे में रहना? क्या आपको पता है कि जब उस बुढ़िया की मृत्यु हुई थी तब वह कमरा कितना गंदा था? शव ढोने वालों ने भी उसमें प्रवेश करने से इनकार कर दिया था।"
"इसका कोई उपाय नहीं है। वैसे भी, हम इसके बारे में कुछ नहीं कर सकते। हम पूरी तरह से बेबस हैं। मंदिर बेचने के बाद हमें ट्रस्ट फंड और उस पर मिलने वाले ब्याज से ही गुजारा करना पड़ेगा। इसलिए आप समझ सकते हैं कि हमारे पास वास्तव में कोई दूसरा विकल्प नहीं है।"
शशि को कोई जवाब सूझ नहीं रहा था। उसकी आँखों में गुस्सा झलक रहा था। उसके लिए मंदिर बेचना सब कुछ का अंत था।
मृणालिनी ने कहा, "साशी, मंदिर के द्वार खुल गए हैं। मैं वहां जाकर प्रार्थना करना चाहती हूं।"
"तो आप आगे बढ़िए," शशि ने उत्तर दिया। "मैं एक मिनट में आपके पीछे आ जाऊँगा।"
जब वे मंदिर की ओर जा रहे थे तब भी काफी अंधेरा था। लेकिन विभिन्न मंदिरों में सुबह की प्रार्थना के लिए बजने वाली घंटियों और शंखों की आवाज वृंदावन में गूंज रही थी। आमतौर पर, सुबह की ये पवित्र ध्वनियाँ शशिप्रवा के मन को दुखों के बीच भी आनंद से भर देती थीं। लेकिन आज, वह कोई शांत और एकांत जगह ढूंढ रही थी जहाँ वह बैठकर मनन कर सके।

Five

देवघरी बाबा से मिलने के बाद अनुपमा पूरी तरह से थक चुकी थीं। वह कमजोर और थकी हुई लग रही थीं, लेकिन उन्हें आराम करने की कोई गुंजाइश नहीं थी क्योंकि ब्रज की प्रसिद्ध चौरासी-क्रोष की शुभ परिक्रमा का समय हो चुका था और पांड इस संबंध में बैठकों में व्यस्त थे। पुराने, फीके पड़ चुके तंबू खोलकर उनकी जांच की गई और उन्हें हवादार बनाया गया। अनेक मंदिरों के झंडे लिए हुए पुरुष घोड़ों पर सवार होकर आए थे और अपने आश्रम स्थापित कर रहे थे। ब्रज की पवित्र भूमि का हर इंच, जिस पर सदियों से सैकड़ों-हजारों तीर्थयात्री चलते आ रहे थे, एक बार फिर इस पवित्र नगर की महान शुद्धिकारी परिक्रमा में भाग लेने वाले लोगों से भर जाएगा। अनुपमा ने इसमें भाग लेने का दृढ़ निश्चय कर लिया था। वह इतनी कमजोर हो रही थीं कि उन्हें यकीन था कि उन्हें इस पवित्र परिक्रमा का दूसरा मौका नहीं मिलेगा। अनुपमा का दृढ़ संकल्प सुनकर उनके लिए पानी लाने वाले राधेश्याम ने कहा, "महोदय, आपको पालकी में जाना चाहिए। आज सुबह मैंने कलाकार राकेश को कई पालकी बनाते देखा।"

अनुपमा मुस्कुराई। वह महिला सही कह रही थी। अगर वह चार बलवान पुरुषों द्वारा खींची जाने वाली उन गाड़ियों में से किसी एक में जाती, तो रास्ते में बीमार पड़ने पर भी कोई समस्या नहीं होती। उसने बूढ़े और बीमार तीर्थयात्रियों को ले जाने वाली छोटी, साधारण पालकियों में से एक बुक करने का फैसला किया। अगर उसने जल्दी नहीं की, तो नंदीग्राम और बोरसाना के अपंग या विकलांग धनी तीर्थयात्रियों द्वारा वे भी बुक हो जाएँगी।

खिड़की खोलकर अनुपमा ने देखा कि भीड़ बढ़ती जा रही थी। उसे कई सजे-धजे झंडे लहराते तांगे दिखाई दिए। कृष्ण अष्टमी थी, और शायद इसी वजह से भक्तों की इतनी बड़ी भीड़ उमड़ी थी। अचानक अनुपमा उठ बैठी। उसे सौदामिनी को बांके बिहारी ले जाना था। कहते हैं कि कभी-कभी पवित्र अवसरों पर व्यक्ति का अंतर्मन, आत्मा का द्वार, प्रकट हो जाता है। लेकिन उसकी बेटी तो इतनी छोटी थी! अनुपमा के लिए इतनी कम उम्र की बच्ची के 'अंतर्मन' या 'आत्मा के द्वार' के बारे में सोचना भी मुश्किल था। अनुपमा ने परिक्रमा के लंबे और कठिन मार्ग के बारे में भी सोचा, सोलह सौ मील से भी अधिक धूल भरा और मुश्किल रास्ता! क्या वह इसे सहन कर पाएगी? क्या वह तीन महीने तंबुओं और भैंसगाड़ियों में बिता पाएगी?

कुछ समय बाद, माता-पिता नंदा उत्सव देखने के लिए बांके बिहारी की ओर चल पड़े। पवित्र वृंदावन की सभी सड़कें और गलियाँ हरिद्वार, द्वारका, अयोध्या, लथाबन आदि स्थानों से आए तीर्थयात्रियों से भरी हुई थीं। कुष्ठ रोगियों की कतारों में खड़े लोगों के भिक्षापात्र सिक्कों से भरे हुए थे।

अनुपमा और उसकी बेटी जब वहाँ पहुँचीं, तब तक उत्सव शुरू हो चुका था और सिंह द्वार से मंदिर परिसर में प्रवेश करना असंभव था। यहाँ तक कि जूते रखने की जगह भी लोगों से भरी हुई

थी। चारों ओर देखते हुए, सौदामिनी ने अचानक देखा कि कोई आँखें उसकी माँ और उसे घूर रही हैं, उनकी बेबस हालत को देख रही हैं। वह उन आँखों को पहचानती थी, लेकिन तुरंत याद नहीं कर पाई। फिर उसे याद आया कि उसने उन आँखों को मथुरा छावनी स्टेशन पर देखा था।

भीड़ को चीरते हुए, पांडा चरणबिहारी उनके सामने आकर खड़ा हो गया। उसने कहा, “अगर तुम यहाँ ऐसे ही खड़े रहोगे, तो तुम्हें कुछ भी दिखाई नहीं देगा। आओ, मेरे पीछे चलो।”

भीड़ को चीरते हुए, वह उन्हें एक छोटी सी गली से ले गया और बरामदे पर चढ़ गया। यहाँ अपेक्षाकृत कम लोग थे; केवल गौतम वंश के कुछ पाण्डों के परिवार ही मौजूद थे। बरामदा इस तरह से बनाया गया था कि नीचे मंदिर परिसर में जो कुछ भी हो रहा था, वह बिना किसी रुकावट के स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। चरणबिहारी ने कहा, “यहाँ केवल मंदिर के अपने पुजारियों को ही प्रवेश की अनुमति है। यह स्थान मेरे परिवार के लिए रखा गया था। लेकिन वे नहीं आ सके, इसलिए आप यहाँ बैठकर बिना किसी बाधा के उत्सव देख सकते हैं।”

अनुपमा ने कहा, "मैं आपका शुक्रिया अदा कैसे करूं, यह मुझे नहीं पता।"

“ऐसा मत कहो,” पांडा ने उत्तर दिया। “तुम्हारी मदद करना हमारा कर्तव्य है। और जब तुम वापस जाओ, तो तुम्हें भीड़ के बीच से नहीं जाना पड़ेगा। तुम इस मंदिर के रास्ते से होकर मदन मोहन मंदिर के पास से बाहर निकल सकते हो।”

मंदिर के प्रांगण में भारी मात्रा में तेल और पानी डाला जा रहा था। पूरा स्थान इतना तेलयुक्त और फिसलन भरा हो गया था कि फिसलने पर कहाँ गिरेगा, यह कहना मुश्किल था। फिर उत्सव शुरू हुआ। भव्य वस्त्र पहने एक पांडा ने ऊँची और सुरीली आवाज़ में घोषणा पढ़ी: “इस बार रामनिवास सेठनी को बांके बिहारी के प्रांगण में सोने का हार उछालने का विशेष सौभाग्य और सम्मान दिया गया है। विजेता को सम्राट अकबर द्वारा शुरू की गई परंपरा के अनुसार भगवान श्री राम और माता सीता के चित्रों से खुदा हुआ सोने का सिक्का दिया जाएगा।”

भीड़ में उत्सुकता की एक हल्की फुसफुसाहट उठी और अनुपमा ने अपने पास खड़ी एक महिला से पूछा, "क्या सेठनी ब्रज से हैं?"

“मुझे नहीं पता,” महिला ने जवाब दिया।

पास ही बैठी एक और महिला ने कहा, “जी हां, वह ब्रज में रहती हैं। वह बहुत धार्मिक और दानशील हैं। हर मदन उत्सव में, वह अपने हाथों से सभी राधेश्यामियों और विधवा भिखारियों को कंबल बांटती हैं।”

एक गोली चलने की आवाज़ सुनाई दी और सबकी निगाहें आंगन की ओर मुड़ गईं। सेठनी ने बांके बिहारी को प्रणाम किया और एक अर्धवृत्ताकार सोने का हार बड़ी ताकत से फिसलन भरे आंगन में फेंक दिया। देखते ही देखते, वहाँ इंतज़ार कर रहे कुछ नंगे बदन ब्राह्मण लड़के आंगन में दौड़ पड़े और हार तक पहुँचने के लिए धक्का-मुक्की करने लगे। लेकिन, रंगाजी के लोखार मेले के प्रतियोगियों की तरह, वे कुछ ही कदम चल पाते और फिसलते-फिसलते वापस वहीं पहुँच जाते जहाँ से शुरू किया था! लड़के चारों हाथों-पैरों के बल रेंग रहे थे, इसलिए वे बिल्कुल बंदरों जैसे लग रहे थे! ऐसा लग रहा था कि उनमें से किसी के लिए भी हार के पास पहुँचना असंभव है, उसे उठाना तो दूर की बात है! इतनी ज़ोरदार हँसी और उत्साहवर्धन हो रहा था कि कोई अपने

पड़ोसी की बात भी नहीं सुन पा रहा था! कुछ देर बाद, हार तक पहुँचने के व्यर्थ प्रयासों से युवा प्रतियोगी हाँफने लगे।

अनुपमा के बगल में खड़ी महिला ने कहा, "पिछले तीन दिनों से आंगन में तेल और पानी डाला जा रहा है। मुझे नहीं लगता कि कोई भी हार निकाल पाएगा।"

प्रतियोगियों को बांके बिहारी के पवित्र जल से बने ठंडे पेय पिलाए गए। फिर, थोड़े आराम के बाद, खेल दोबारा शुरू हुआ। इस बार, हालांकि, दर्शकों के जयकारे लगाने से पहले ही, ज्ञान गोदारी पांडा का युवा पुत्र तीर की तरह आगे बढ़ा और हार छीनकर वापस अपने पुराने स्थान पर लौट आया।

दर्शकों की विशाल भीड़ से जोरदार तालियाँ बज उठीं। भगदड़ मचने का डर देखकर अनुपमा ने सोचा कि अब उनके जाने का समय हो गया है। उत्तेजित भीड़ को चीरते हुए जब वे किसी तरह आगे बढ़े तो वे थक चुके थे। कुष्ठ रोगी लगभग कुचले जाने वाले थे, लेकिन वे वहीं बैठे रहे। अनुपमा और सौदामिनी को राहत मिली जब उन्होंने देखा कि मदन मोहन मंदिर का द्वार खुला है। चरणबिहारी वहाँ उनका इंतज़ार कर रहे थे।

वे तीनों पुरानी सीढ़ियों पर चढ़ने लगे। उन्होंने दो परित्यक्त द्वार देखे जो अब चमगादड़ों का घर बन चुके थे। ऐसा प्रतीत होता था कि मंदिर तक जाने के कई रास्ते रहे होंगे। लेकिन अब सब कुछ खंडहर हो चुका था और कंटीली झाड़ियों से ढका हुआ था। वे एक प्राचीन नीम के पेड़ के पास पहुँचे, और चरणबिहारी ने उन्हें बताया कि यह वही पेड़ है जिसके नीचे महान कवि-संत तुलसीदास बैठकर प्रार्थना करते थे। आखिरी सीढ़ी चढ़ने के बाद, चरणबिहारी ने कहा, "भोग शुरू हो गया होगा, लेकिन वहाँ बहुत भीड़ होगी। थोड़ी देर यहाँ विश्राम करो, फिर हम जाकर भोग लेंगे।"

लेकिन इसी बीच आदित्य मंदिर के द्वार खुल गए। अनुपमा ने सौदामिनी से कहा, "मैं कुछ देर मंदिर के द्वार पर जाकर ध्यान लगाऊंगी। आप मंदिर की परिक्रमा कर सकती हैं।"

चरणबिहारी फूल और प्रसाद लेने मंदिर के अंदर गए, और सौदामिनी मंदिर के पास एक फूलदार पेड़ के नीचे बैठ गईं। वह जगह शांत थी और ज्यादा भीड़भाड़ नहीं थी, और वातावरण सुकून भरा था। उन्हें उम्मीद थी कि वह यहाँ कुछ समय अकेले बिता सकेंगी। लेकिन ऐसा नहीं हो सका। चरणबिहारी परछाई की तरह उनके पीछे-पीछे चलते रहे।

"इस जगह से नदी की खूबसूरती दिखती है," उन्होंने कहा। "देखो, कछुए धूप सेंकने निकले हैं। याद है जब तुम पहली बार वृंदावन आई थीं, तो मैं तुम्हारे पीछे-पीछे आया था? मुझे लगा था कि तुम तीर्थयात्री हो। तब मुझे नहीं पता था कि तुम यहाँ स्थायी रूप से रहने आई हो। तो क्या तुम सच में यहीं रहने का इरादा रखती हो? तुम्हारे जैसी सैकड़ों युवतियाँ ब्रज में रहने आती हैं। क्या तुम्हें पता है लोग उनके बारे में क्या कहते हैं? वे कहते हैं कि वे मानसिक रूप से बीमार हैं और उन्हें मनोचिकित्सक की मदद की ज़रूरत है।"

सौदामिनी ने कोई जवाब नहीं दिया। जिन चमेली के फूलों से उसने अपने बालों को सजाया था, वे मुरझा गए थे। उसने उन्हें तोड़कर फेंक दिया।

Six

ठाकुर साहब का बेहरिमोहन कुंज अभी तक बिका नहीं था, और उनका पैसा तेज़ी से खत्म हो रहा था। कुछ खरीदार आए थे, लेकिन वे जो कीमत देने को तैयार थे, वह वास्तविक मूल्य के आसपास भी नहीं थी, और उनके सौदेबाजी का तरीका ठाकुर साहब के लिए असहनीय था। ब्रज में हर खरीदार पैसे के मामले में लालची राक्षस जैसा लगता था। इसके अलावा, मंदिर बिकने की खबर सुनकर, कुछ पुराने पाण्डों ने स्थिति का फायदा उठाया और बिचौलिए का काम शुरू कर दिया। जैसे ही ठाकुर साहब लंगड़ाते हुए बाज़ार की ओर वाली सीढ़ियों पर गए और बैठ गए, ये पाण्ड उनके चारों ओर जमा हो गए और सौदेबाजी करने लगे।

इन सीढ़ियों पर बैठे-बैठे ठाकुर साहब तरह-तरह की बातें सुनने लगे थे। एक दिन राधा-दामोदर मंदिर का एक युवा पाण्ड उनके पास आया और बोला, "बहरमोहन कुंज राधा-दामोदर की ज़मीन पर बना है और मंदिर ने अब तक ज़मीन का किराया चुकाया है। इसलिए जब मंदिर बिकेगा, तो राधा-दामोदर के पुजारियों को बिक्री से प्राप्त राशि का एक चौथाई हिस्सा मिलेगा।"

मृणालिनी ने उसे याद दिलाया, "हमारे पास एक महीने का ही खर्च चलाने लायक पैसा है। उसके बाद, जब हमें उन छोटे कमरों में से किसी एक में रहना पड़ेगा, तो हमें ट्रस्ट से मिलने वाले पैसों से ही गुजारा करना पड़ेगा। याद है तुम्हें अच्छे खाने, नशीले पदार्थों और शराब के लिए कितना लालच था? खैर, भगवान ने तुम्हें तुम्हारे जीवनकाल में ही दंड देना उचित समझा है। अब तुम्हें उन आम भूखे भक्तों की तरह एक अंधेरे, सीलन भरे कमरे में रहना पड़ेगा। अन्नकूट उत्सव के बाद हमारे पास एक पैसा भी नहीं बचेगा..."

ब्रज का वातावरण हमेशा उत्सवपूर्ण रहता था, और जल्द ही अन्नकूट का त्योहार आ गया। इसे बड़े हर्षोल्लास और धूमधाम से मनाया गया। वहाँ एक भी बूढ़ी विधवा अपने जर्जर कमरे में बैठी हुई नहीं दिखी। पवित्र नगरी के हर मंदिर में कलात्मक रूप से सजाए गए विभिन्न प्रकार के भोजन का प्रदर्शन हो रहा था। और हर वृद्ध महिला को भोजन के बीच विराजमान राधा-कृष्ण की सुंदर मूर्तियों के दर्शन करने जाना ही था! गोविंदजी मंदिर के सामने खड़ी मृणालिनी ने एक आवाज सुनी, "देखो, अपनी आँखें खोलो और देखो! अन्नकूट का यह पवित्र दृश्य पूरे वर्ष की भूख को दूर कर देगा!"

उसने मुड़कर देखा तो उसे फटे-पुराने कपड़ों में एक बूढ़ी औरत दिखाई दी, जो शायद राधेश्याम के रूप में या सड़कों पर भीख मांगकर अपना पेट पालती थी। बेचारी औरत चल नहीं सकती थी, लेकिन किसी ने उसे उठाकर दरवाजे के पास बिठा दिया था।

भीड़ बढ़ती ही गई। उनमें से अधिकतर भूखी राधेश्यामियाँ थीं। उनकी आँखों में लालच की चमक थी और वे भोजन के विशाल पहाड़ों पर झपटने को तैयार लग रही थीं। लेकिन यह चमक ज़्यादा देर तक नहीं टिकी। जैसे बारिश से बंजर, सूखी और गर्म धरती ठंडी हो जाती है, वैसे ही इन भूखी

विधवाओं की भूखी आँखें समय बीतने के साथ-साथ धुंधली पड़ गईं और लालच की गर्मी कम हो गई। अचानक करुणा दिखाते हुए, उनकी स्वस्थ सहेलियों ने उन बूढ़ी महिलाओं को भी बाहर निकाल लिया जो अपनी-अपनी झोपड़ियों में मृत्यु और मोक्ष की प्रतीक्षा कर रही थीं। भला, पवित्र नगर के चारों ओर रहने वाली लगभग तीन हज़ार निर्धन विधवाएँ इस मनमोहक दृश्य को देखने के लिए बाहर क्यों नहीं आतीं? उन सभी का यह अंधविश्वास था कि अगर कोई इस त्योहार को एक बार देख ले, तो वह पूरे साल भूख से मुक्त हो जाएगा!

मृणालिनी गोविंदजी मंदिर के फर्श पर बैठ गई। शशि ने कहा था कि वह मंदिर के बाहर गोबर और मिट्टी से बनी गोबर की मूर्ति देखना चाहती है। लेकिन वह भी आकर मृणालिनी के पास बैठ गई। उसने पूछा, "क्या आप राधारमण और राधाभल्लभ मंदिर देखने नहीं जाना चाहते?"

“नहीं। मुझे लगता है मैं यहीं गोश्ती का इंतजार करूंगी,” मृणालिनी ने उत्तर दिया।

“लेकिन अच्छे और सम्मानित परिवारों की महिलाएं इस तरह नहीं बैठतीं,” शशि ने कहा।

“तुम मुझे हंसा रही हो,” मृणालिनी ने जवाब दिया। “सचमुच, सम्माननीय! क्या लोग हमें तब भी सज्जन परिवार का कहेंगे जब हमें मंदिर की छोटी सी कुटिया में रहना पड़ता है? हम अब भिखारियों से कम नहीं हैं। ऐसे भिखारी जिनके पास दिन में दो वक्त का खाना भी नहीं है। यह बहुत मुश्किल है।”

घंटियाँ बज उठीं और पुजारी आकर बैठे हुए कुछ लोगों को छोड़कर बाकी सभी को भगा दिया। कुछ लोग पत्तों की थालियाँ लेकर बैठे थे। सिंह द्वार बंद कर दिया गया। मृणालिनी भी किसी और की परवाह किए बिना अपनी थाली लेकर बैठ गई। मानो इतना ही काफी नहीं था, उसने जोर से पुकार कर पुजारी को चौंका दिया, “यह काफी नहीं है, मुझे थोड़ा और दीजिए।”

जल्द ही भूखी-प्यासी राधेश्यामियों ने भी चिल्लाना शुरू कर दिया, “हमें और दीजिए। आपको क्या डर है कि गोविंदजी का भंडार खत्म हो जाएगा?”

पुजारी ने उन पर झल्लाते हुए कहा, “जाओ, चली जाओ, तुम सब बूढ़ी औरतें! यहाँ ऐसे बैठे रहने का कोई फायदा नहीं। राधा-दामोदर जाओ, नहीं तो वहाँ भी खाना खत्म हो जाएगा।”

यह सुनकर स्त्रियाँ अपने पत्तों पर जो कुछ भी था, उसे चटकारे लेकर खाने लगीं। मृणालिनी के बगल में बैठी राधेश्यामिनी ने अपनी एक सहेली से पूछा, “क्या तुम्हें पता है कि आज राधा-दामोदर में कौन सा भोग चढ़ाया जा रहा है?”

“बूंदिया के लड्डू और पूरियां,” दूसरी महिला ने जवाब दिया।

महिलाओं ने जल्दी-जल्दी अपना खाना खत्म किया और चली गईं।

मृणालिनी ने कहा, “मैंने आज सभी मंदिरों के दर्शन करने का सोचा था। लेकिन मुझे कहीं और जाने का मन नहीं है। मैं यहीं किसी आरामदायक जगह पर शांति से बैठना ज़्यादा पसंद करूंगी।”

शशि को यह देखकर खुशी हुई। उसे थोड़ी शर्मिंदगी महसूस होने लगी थी।

मृणालिनी ने कहा, "तुम बहुत समझदार और भोली-भाली लड़की लगती हो। अगर तुमने आलमगारी के साथ मंदिर में रहने का विकल्प न चुना होता, तो शायद तुम्हारा जीवन अच्छा होता।"

शशि ने अपना सिर नहीं उठाया। उसने कहा, “मेरे पास कोई और रास्ता नहीं था। लेकिन

आलमगरी ने मुझे किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुँचाया या बिगाड़ा नहीं है। ब्रज में मेरे जैसी कई औरतें हैं, जो जुगल उपासना के नाम पर पुजारियों या पांडों के साथ रहती हैं और जोड़े के रूप में ईश्वर की पूजा करती हैं। ऐसी औरतें जिनका इस विशाल संसार में कोई अपना नहीं है, ऐसी औरतें जो अपने अंधकारमय भविष्य के निरंतर भय में जीती हैं। आप इन बातों को नहीं समझ पाएँगी। केवल वही लोग समझ सकते हैं जिन्होंने हमारे जैसी स्थिति का अनुभव किया हो।"

"तो आलमगरी ने आपको कोई नुकसान नहीं पहुंचाया या बिगाड़ा नहीं है?"

"मैं समझ गई कि तुम क्या कहना चाह रहे हो," शशि ने उत्तर दिया। "एक दिन उसने मुझे अपने सामने पूरी तरह से कपड़े उतारने को कहा और मैंने ऐसा किया। उसने दीपक की रोशनी में मेरे शरीर को अच्छी तरह से परखा। फिर उसने दीपक बुझा दिया और जाकर अपने बिस्तर पर सो गया।"

"तो आलमगारी ने आपको नुकसान नहीं पहुंचाया, नुकसान पहुंचा ही नहीं सकता था," मृणालिनी ने टिप्पणी की।

सौदामिनी ने सोचा था कि शायद दिन बीतने के साथ-साथ उसके मन में कुछ बदलाव आ जाए। लेकिन ऐसा नहीं हुआ। उसने निःसंकोच और बिना किसी झिझक के एक नर्स का सारा काम किया, परिक्रमा के दौरान बीमार तीर्थयात्रियों को स्नान कराया, और कभी-कभी तो बेहद बीमार लोगों को गंदी जगहों से उठाकर ले जाती थी। वह डॉ. रॉयचौधरी के साथ लालाजी मंदिर के पास एक जगह गई, जहाँ एक आदमी पेड़ के नीचे मरणासन्न अवस्था में पड़ा था, और उसकी देखभाल की। चूंकि वह आदमी हिल-डुल नहीं सकता था, इसलिए वह भजन के लिए जा रही राधेश्यामियों को बार-बार पुकारता था, "देवियों, कृपया मुझे कुछ दीजिए।"

एक दिन सौदामिनी अपने पिता के साथ उस व्यक्ति के पास गईं और उसके चोटिल पैर धोने के बाद उसे कुछ भोजन दिया। वह चिल्लाया, "नहीं माँ, मुझे बचाने की कोशिश मत करो। मैं ब्रज में मरने की उम्मीद में बहुत दूर से आया हूँ। अब मेरी जान बचाने की कोशिश मत करो। मैं यहीं मरूँगा और ब्रज की पवित्र मिट्टी में विलीन हो जाऊँगा।" कुछ ही देर बाद उस व्यक्ति की मृत्यु हो गई। उन्होंने लुई बाज़ार में घोड़े के अस्तबल के फर्श पर एक और व्यक्ति को मृत्यु की प्रतीक्षा करते हुए देखा। रॉयचौधरी ने उसकी जाँच की और पाया कि वह भोजन और चिकित्सा उपचार की कमी के कारण मर रहा था। यह पहली बार था जब सौदामिनी ने किसी व्यक्ति को भूख से मरते देखा था। पहले कुछ दिनों तक सौदामिनी डॉक्टर के साथ एक तरह के नशे में चूर होकर काम करती रहीं। उन्हें ऐसा लग रहा था मानो जीवन बचाने का यह काम उन्हें संतुष्टि दे रहा हो।

दो लंबे महीनों तक वह अपने पिता के साथ हर तरह की जगहों पर गई। ऐसी जगहें जहाँ बीमार, मरणासन्न और बेसहारा लोगों की भरमार होने की संभावना थी। वह उन लोगों की तलाश में थी जिन्हें उनकी सेवाओं की सख्त ज़रूरत थी। अनगिनत अधमरे और भूखे-प्यासे लोग थे, जो दूर-दूर

से आए थे और पवित्र ब्रज में मरने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनमें से कई लोगों के पास केवल अंतिम संस्कार के लिए आवश्यक धन ही कमर पर बंधा हुआ था। ये लोग सबसे गरीब थे।

एक दिन, बहुत समय बाद, सौदामिनी को यमुना नदी में स्नान करने का समय मिला। धूप इतनी तेज़ थी कि पहरेदार भी नदी किनारे से हटकर आश्रय लेने चले गए थे। बस दो-तीन समूह इधर-उधर बिखरे हुए दिखाई दे रहे थे। ये वे लोग थे जो भगवान या अपने मृत प्रियजनों को धार्मिक अर्पण करने नदी पर आए थे। पीपर कुंड के पास शशिप्रोवा को अकेले खड़े देखकर सौदामिनी उनके पास गईं और बोलीं, “मैं बहुत समय से तुम्हारे साथ बैठकर अकेले में बातें करना चाहती थी। लेकिन समय नहीं मिल पाया।”

वे जाकर तालाब के एक सुनसान कोने में बैठ गए। लोगों द्वारा अर्पण के रूप में अर्पित किए गए कुछ फूल और अन्य वस्तुएँ नदी में बहकर उस कोने में जमा हो गई थीं और उनके चारों ओर छोटी-छोटी चांदी जैसी मछलियाँ सूर्य की रोशनी में चमकती हुई इकट्ठा हो गई थीं।

“नहाने का यह सबसे अच्छा समय है,” शशि ने कहा। “आस-पास बहुत कम लोग हैं।”

सौदामिनी ने सिर हिलाया और दोनों उठ खड़ी हुईं। उन्होंने अपने कपड़े बदले और नदी में उतरकर कुछ देर तक आनंदपूर्वक पानी में छपछपाती रहीं।

बाहर निकलने के बाद, शशि ने अचानक सौदामिनी से पूछा, "बताइए, क्या आपको ब्रजधाम आने के बाद सचमुच शांति मिली है? मेरा मतलब है, क्या आप इस बारे में कोई निष्कर्ष निकाल पाई हैं कि आप अपना शेष जीवन कैसे व्यतीत करेंगी?"

सौदामिनी के पास कोई जवाब नहीं था। उनकी सहेली ने कहा, “मुझे पता था कि आपके पास कोई जवाब नहीं होगा। मैं भी कुछ समय से अनिश्चितताओं से घिरी हुई हूँ। मैंने सुना है कि आपने बहुत दुख और पीड़ा झेली है। बताइए, आप अपने शेष दिन कैसे बिताना चाहती हैं?”

सौदामिनी ने शशि के सवाल से बचने की कोशिश की और खुद को सुखाने और गीले कपड़े बदलने पर ध्यान केंद्रित किया। इसी बीच, तर्पण करने आए कुछ लोग पास ही जमा हो गए थे और एक बूढ़ा आदमी एक पुराने अर्जुन के पेड़ की जड़ों को खोद रहा था।

“वह क्या खोद रहा है?” उसने पूछा।

“सांप,” शशि ने उत्तर दिया।

शशि हँसी और बोली, “हाँ, साँप। फिर वह लोगों के घरों में साँप छोड़ देगा। बाद में, जब साँप मिल जाएँगे, तो वह खुद सपेरा बनकर जाएगा, उन सरीसृपों को पकड़ेगा और अपने इस नेक काम के बदले इनाम के तौर पर पैसे लेगा!”

“आपने मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया,” शशि ने कहा।

“मैं क्या उत्तर दे सकती हूँ? कोई उत्तर नहीं है,” सौदामिनी ने उत्तर दिया।

क्या आपका सामना अभी तक ब्रजचंद्र से नहीं हुआ है?

सौदामिनी ने नज़रें नीचे कर लीं और चुप रहीं। फिर अचानक, वह उत्तेजित होकर बोलने लगीं, “ठीक है। मेरी बात ध्यान से सुनो। मैं तुम्हें स्पष्ट-स्पष्ट बता रही हूँ। सत्य का अनुसरण करो, और सत्य में विलीन हो जाओ। यही मेरे जीवन का परम सत्य है।”

रेत पर घुटने टेककर शशि ने कहा, “मैं कुछ समय से असहनीय पीड़ा और मानसिक कष्ट झेल

रही हूँ। आपको पता ही होगा कि मंदिर एक-दो दिन में बिक जाएगा। मैंने लंबे समय तक मंदिर के भगवान दामोदर की सेवा में अपना जीवन व्यतीत किया है। अब मुझे आलमगरी के साथ उसकी रखैल बनकर रहना होगा। हमारा विवाह नहीं हुआ है, लेकिन हमें पति-पत्नी की तरह रहना होगा। क्या आप इससे बदतर कुछ सोच सकते हैं? कुछ बूढ़ी औरतें जो अब राधेश्यामियों के रूप में भजन नहीं गा सकतीं, अक्सर इस उम्मीद में ऐसे ही रहती हैं कि कोई पुरुष उनके अंतिम संस्कार का प्रबंध करेगा, या डर के मारे। लेकिन मैं?! नहीं, आप शायद इन बातों को नहीं समझ पाएँगे।"

"लेकिन तुम अभी भी शादी कर सकते हो," सौदामिनी ने सांत्वना देते हुए कहा।

शशि लगभग चिल्लाते हुए बोली, "अलमगरी एक हिजड़ा है! इससे मेरी दुनिया खत्म नहीं हो जाती। लेकिन दिक्कत ये है कि मुझे उससे प्यार हो गया है।"

शशि की आवाज भावनाओं से भर गई। फिर उसने सौदामिनी के हाथों को अपने हाथों में पकड़ लिया और ऐसे रोने लगी मानो उसका दिल टूट रहा हो।

Seven

भजन आश्रम राधेश्यामियों से भरा हुआ था। यहाँ तक कि वे वृद्ध भी, जो अब मंदिरों के द्वार पर भीख मांगकर अपना जीवन यापन करते थे, आकर मंदिर की सीढ़ियों पर बैठ गए थे। शेराफी सेठनी वस्त्र बाँटने आई थीं। शशि भी आकर उनके साथ बैठ गईं। उन्होंने गोमस्ता (राजस्व संग्राहक) को सेठनी से यह कहते हुए सुना, "क्या आप जानती हैं कि वे आपके दिए हुए वस्त्र कम दाम में बेच देते हैं और फिर पीपर के तालाब के पास जाकर बैठ जाते हैं और अपने औद्ध देहिक (अंतिम संस्कार) के लिए जमा किए गए धन का हिसाब लगाने लगते हैं। यदि आप उन्हें कंकालनुमा शरीर और लालच से चमकती धँसी आँखों के साथ वहाँ बैठे हुए देखेंगी, तो आपको लगेगा कि वे सचमुच आत्माओं का समूह हैं।"

शशि थोड़ी दूरी पर एक सुनसान सीढ़ी पर बैठी सुन रही थी। उसकी इच्छा थी कि वह सेठनी से अकेले में बात कर सके, लेकिन इसकी कोई संभावना नहीं थी। ब्रज में लगभग हर कोई इस मानव रूप धारण किए हुए भेड़िये जैसे गोमस्त के बारे में जानता था, और वे बड़े दुख से इस बात पर चर्चा कर रहे थे कि उसने कुछ युवा और सुंदर राधेश्यामियों का सौदा कैसे किया था।

शशि घर लौटने के इरादे से सड़क पर आकर खड़ी हो गई। आगे आने वाली विपत्ति के बारे में सोचकर उसका हृदय फिर से पीड़ा से भर उठा। हे ईश्वर, उसने मन ही मन प्रार्थना की, कृपया किसी और को मेरी जैसी स्थिति में न आने देना। किसी को भी मेरी तरह अकेला और असहाय न बनाना। उसके पिता भारत के विभाजन के दौरान शहीद हो गए थे और उसकी माता ब्रज में वर्षों पहले आए अकाल में जीवित नहीं रह पाई थीं। हालात इतने खराब हो गए थे कि ग्रामीणों को तरबूज की जड़ों और अन्य खाने योग्य पत्तियों पर ही गुजारा करना पड़ा था। एक दिन, उसकी माता ने खून की उल्टी की और वही उनकी मृत्यु का कारण बन गया।

ब्रज की गलियाँ उसका घर बन गई थीं और वह वहीं पली-बढ़ी। उसने कहा, "बोनखंडी की तंग गलियों में भूख से तड़पते हुए भी मुझे अपनी पवित्रता पर गर्व था। और आज भी वह गुप्त गर्व मुझे सुख देता है। मुझे इस बात की परवाह नहीं कि लोग मेरे बारे में क्या कहेंगे। लेकिन समय बीत रहा है। और अब, एक और दुख मेरे दिल को खा रहा है।"

"मुझे विश्वास है कि आप और मैं आपकी भावनाओं को समझ सकते हैं। लेकिन मंदिर बिकने के बाद आप क्या करेंगे? क्या आप आलमगढ़ी में रहना जारी रखेंगे?"

"अगर कोई और रास्ता न बचे तो ही। शेराफी सेठनी जल्द ही राधेश्यामियों को कंबल बांटने आ रही हैं। तब मैं उनसे पूछूंगी कि क्या वह मेरे लिए कोई रास्ता निकाल सकती हैं।"

दोनों कुछ देर चुप रहे। और भी तीर्थयात्री आ रहे थे। उन्हें तांगे की घंटियों की आवाज और घोड़ों के खुरों की आवाज सुनाई दी।

"चलो घर चलते हैं।" वे उठकर जाने लगे। जैसे ही वे रथ भवन के पास पहुँचे जहाँ रंगाजी मंदिर

के रथ रखे जाते थे, उन्होंने तालबोन के साधुओं का हाथी देखा। उसका हौदा खूबसूरती से सजा हुआ था और हाथी के गले में चमेली की मालाएँ थीं।

“आज बानाखानी के धर्मनिष्ठ पुरुष पवित्र परिक्रमा करेंगे,” शशिप्रोवा ने टिप्पणी की।

गोपीनाथ बाजार अब लगभग सुनसान हो चुका था, और केवल इधर-उधर घूमते विक्रेताओं की तेज आवाजें ही सुनाई दे रही थीं।

इस समय तक रॉयचौधरी का औषधालय खूब फल-फूल रहा था। लेकिन वे धीर समीर के भंगियों, सफाईकर्मियों और धर्मनिष्ठ पुरुषों के बीच भी किसी भी प्रकार की समानता लाने में पूरी तरह असफल रहे।

शशि ने नदी पार खीर बेचने आए कुछ आदमियों को देखा। उनका सारा माल बिक चुका था और वे हनुमान मंदिर के प्रांगण में आराम कर रहे थे। वह उनके पास जाकर बैठ गई, लेकिन एक नज़र देखने के बाद उन्होंने उसे अनदेखा कर दिया और अपनी बातचीत में मग्न हो गए। उसकी आँखों में अनकहे आँसू भर आए। मंदिर की बिक्री लगभग तय हो चुकी थी। अब तक वह आलमगढ़ी के साथ शांति और निर्भयता से रह रही थी। वह निश्चिंत थी क्योंकि वह जानती थी कि आलमगढ़ी उसे नुकसान नहीं पहुँचा सकता। दूसरों की कही कोई भी बात उसे कभी प्रभावित या चिंतित नहीं करती थी, लेकिन साथ ही वह यह भी जानती थी कि आखिर किसी स्त्री से जुड़ा कोई भी घोटाला शर्मनाक होता है। यही वह बात थी जिसे लोग बड़े चाव से उजागर करते थे और उस पर गपशप करते थे।

उसे एहसास हो गया था कि अगर उसने कुछ दिनों के भीतर कोई हल नहीं निकाला तो वह गंभीर मुसीबत में पड़ जाएगी। उसके पीछे कई लोग पड़े होंगे!

मंदिर लौटते समय वह सोचती रही कि वह क्या कर सकती है। उसके पास पैसे नहीं थे। वह गोपीचंद्र मंदिर में तुलसी की मालाएँ बुनकर और दूसरे छोटे-मोटे काम करके थोड़ा-बहुत कमा लेती थी। लेकिन मंदिर बिकने की खबर सुनकर उसकी किसी काम में रुचि नहीं रही। वह जानती थी कि अगर वह इसी तरह जीती भी रही, तो इस पवित्रतम शहर में भूख से नहीं मरेगी। वह भंडारों पर भिखारियों की कतार में लग सकती थी, या भोग बाँटते समय मंदिरों में पत्ते की थाली लेकर बैठ सकती थी, या राधेश्यामियों के साथ भजन आश्रमों में जाकर आधे दिन भजन गाकर कम से कम पच्चीस पैसे कमा सकती थी। इस तरह उसे कभी भूख से नहीं मरना पड़ेगा। लेकिन इस तरह जीने के लिए उसे कम से कम बीस साल और बड़ा होना पड़ेगा! बीस साल बाद, जब उसका शरीर किसी बीमार गली के कुत्ते की तरह कमजोर और सूखा हो जाएगा, तब शायद वह बिना किसी शिकायत या चिंता के भंडारों पर बैठ पाएगी! आलमगढ़ी के साथ रहने जाने से पहले, वह राधेश्यामियों के साथ कुप्री में रहती थी। कई बार वह इन छोटे, सीलन भरे कमरों की गंदगी और दुर्गंध के बीच खड़ी होकर, मरणासन्न बूढ़ी महिलाओं को पानी पिलाती थी या उनके अंतिम सांस लेते समय उनका हाथ थामती थी। वह उन दिनों की पीड़ा और भयावहता को कभी नहीं

भूल पाएगी।
उसके बाद उसने अपने आप में एक अप्रत्याशित परिवर्तन पाया। वही लोग जो पहले बाज़ारों और मेलों में उसे एक कंकाल की तरह देखते थे, अब उसे जिज्ञासा और प्रशंसा की दृष्टि से देखने लगे। उसे स्वयं भी आभास हुआ कि उसका कंकालनुमा रूप बदल गया है। कुछ राधेश्यामियों ने कहा, "वह ब्रज के सुंदर चमेली के फूल में बदल गई है।"
बाजार के पास पहुँचते ही उसकी चाल तेज़ हो गई। बिहारी कुंज लोगों से खचाखच भरा हुआ था और बाजार की ओर मुख किए बरामदे में खड़ा गोविंदजी के पांडा का बेटा चिल्ला रहा था। आज आखिरी दिन था।
उसने आलमगढ़ी के साथ इस मंदिर में चार लंबे साल बिताए थे। मंदिर का हर कोना उसे प्रिय और परिचित था, वह दीमारू का पेड़ जो बंदरों के आतंक का शिकार होता था, वह विशाल आंगन जहाँ कोई भी जितनी देर चाहे बिना किसी बाधा के और बिना किसी की नजरों से ओझल होकर लेट सकता था...
जैसे ही शशि भीड़ को चीरते हुए मंदिर परिसर में दाखिल हुई, उसकी आंखों में आंसू भर आए।

Eight

अटल बिहारी वन, केवारी वन और गोपाल वन के घने और गहरे जंगल, जहाँ किंवदंती के अनुसार यशोदा ने गायों का दान किया था, और प्रसिद्ध राधाबाग, जहाँ राधा ने स्वयं अपनी सहेलियों के साथ वृक्ष और फूल लगाए थे, और सबसे सुंदर वन, निकुंज वन, जहाँ सुंदर सफेद फूल ब्रज की कीमती मिट्टी को गले लगाने के लिए झुके हुए प्रतीत होते हैं! ये झाड़ियाँ राधा द्वारा पहने जाने वाले झनझनाते पैरों के आभूषण, नूपुर जैसे चमकीले फूलों से खिल उठती हैं। कहते हैं कि यदि कोई श्रद्धापूर्वक सुने, तो मानो स्वर्ग के दो नूपुरों की मनमोहक झनझनाहट पूरे ब्रज में गूंज रही हो।

ऐसा कहा जाता था कि इस फूल की एक कली भी तीव्र दुःख और शोक को परम आनंद में बदल सकती है। सौदामिनी ने भी कई बार नूपुर की दिव्य ध्वनि सुनने का प्रयास किया था। उन्हें लगा कि शायद यह मधुर ध्वनि उनके कष्टों को भी दूर कर देगी। लेकिन धीरे-धीरे उन्हें यह एहसास हुआ कि शायद वे उन भाग्यशाली लोगों में से नहीं हैं। शायद उन्हें यह पवित्र करने वाली और उपचार करने वाली झंकार कभी सुनने को न मिले।

अनुपमा सोच रही थी कि वह कब तक ब्रज में बीमारों की तलाश में घूमती रहेगी? वह बेचैन और उदास होती जा रही थी। अनुपमा अपनी बेटी को परिक्रमा में शामिल करने के लिए मनाने में नाकाम रही थी। लेकिन बेटी को मनाने की कोशिश में नाकाम रहने के बावजूद, अनुपमा ने खुद परिक्रमा करने का मौका नहीं छोड़ा। और फिर एक दिन, उसने सारी कठिनाइयों और परेशानियों को सहते हुए पवित्र परिक्रमा पूरी की। लौटने पर अनुपमा ने सौदामिनी को दुखी और बेहद उदास पाया। उसने अपनी बेटी की आंखों के नीचे काले घेरे देखे। इसके बावजूद, सौदामिनी ने हमेशा की तरह अपनी मां की जरूरतों का ख्याल रखा, थका देने वाले और कठिन दिनों के बाद उनके स्नान के लिए गर्म पानी का इंतजाम किया, सभी चीजों को उनकी सही जगह पर रखा, यह देखने के लिए कि उन्हें बुखार तो नहीं है, अपना गाल मां के गाल से लगाया, और इसी तरह। संक्षेप में, सौदामिनी ने अनुपमा को उनकी लंबी और कठिन परिक्रमा के बाद आराम देने के लिए हर जरूरी काम किया।

खाना खाते समय अनुपमा अपने अनुभव बताने लगी। अचानक सौदामिनी सीधी होकर बैठ गई और अपनी माँ के चेहरे को इस तरह देखने लगी कि अनुपमा के शब्द थम से गए। उसने देखा कि उसकी बेटी का चेहरा किसी प्रकार की अत्यधिक मानसिक बेचैनी से भरा हुआ था।

औषधालय अभी भी मरीजों से भरा हुआ था, और डॉक्टर रॉयचौधरी अभी भी उनका इलाज कर रहे थे। अचानक, बिना किसी चेतावनी के, सौदामिनी उछलकर नीचे भागी और ज़मीन पर बैठकर ऐसे रोने लगी मानो उसका दिल टूट रहा हो। अनुपमा बालकनी में गई और डॉक्टर भी मरीजों की

भीड़ से निकलकर उसके पास खड़े हो गए। सौदामिनी थोड़ी देर रोई और फिर शांत हो गई। भावनाओं से रुंधे स्वर में वह चिल्लाने लगी, “मैं अपना पूरा जीवन इस तरह दान-पुण्य करते हुए नहीं बिता सकती... मैं कोई देवी नहीं हूँ, मैं एक साधारण लड़की हूँ, और मैं अपना सारा जीवन आप लोगों की तरह समाज की सेवा में नहीं गुज़ार सकती... मैं आत्मनिर्भर हूँ, और मुझे किसी से या किसी चीज़ से डर नहीं लगता! अगर आप सोच रहे हैं कि मैं बदल गई हूँ, तो...”

अपने पिता पर उंगली उठाते हुए उसने चिल्लाकर कहा, "तुम सब पाखंडी हो। तुम कसाईयों के समान हो।"

उसका शरीर एक घायल पक्षी की तरह बेचैनी से कांप रहा था। तभी बालकनी से अनुपमा की आवाज सुनाई दी, "वह ईसाई लड़का शायद यहाँ आ रहा है।"

उसके रोने और दीवार पर सिर पटकने की आवाज़ नीचे तक आ रही थी। अनुपमा गुस्से, निराशा और हताशा में रो रही थी।

Nine

ज्ञान गोदारी से भोर में मौनिदास के महल की घनी चारदीवारी तक जाने वाला कोई भी व्यक्ति यह सोचेगा कि ब्रज एक टूटे हुए साम्राज्य के खंडहरों का समूह मात्र है। चार सौ साल पहले औरंगजेब द्वारा किए गए भयानक रक्तपात और आतंक के निशान आज भी उस स्थान पर व्याप्त हैं। गोपीनाथ, मदनमोहन और राधाबल्लभ के प्राचीन मंदिरों के खंडहर सचेत यात्री को मानो चीख-चीख कर कह रहे हों, “वह भयानक रक्तपात और आतंक कुछ ही समय पहले हुआ था। ध्यान से सुनो, और तुम्हें आज भी खंडहरों के नीचे दबे पुजारियों की व्यथित चीखें सुनाई देंगी।”
भोर होने से पहले ही सौदामिनी घर से निकलकर यमुना नदी के किनारे टहलने लगीं, वे बेहद परेशान और व्याकुल थीं। उन्हें बिल्कुल नींद नहीं आई थी, और अब उलझे बालों और अस्त-व्यस्त कपड़ों में वे किसी पागल औरत की तरह इधर-उधर भटकती हुई लग रही थीं। अचानक वे रेत पर घुटने टेककर बैठ गईं। उन्हें केसी घाट के पास नदी के उस भयानक हिस्से की डरावनी आवाज़ सुनाई दी, मानो किसी भयानक और शक्तिशाली भंवर की आवाज़ हो। कहा जाता है कि सच्चे श्रद्धालु तीर्थयात्री वृंदा सखियों के रथों के पहियों की आवाज़ भी सुन सकते हैं। लेकिन उन्हें केवल वे डरावनी और रहस्यमयी आवाज़ें सुनाई दे रही थीं जो उनके चारों ओर गूंज रही थीं।
कुछ देर घूमने के बाद वह रंगाजी मंदिर के द्वार पर पहुँची। मंदिर के कार्यालय खुले थे और उसने देखा कि अधिकारियों ने अपना काम शुरू कर दिया था। वह मुख्य अधिकारी के पास गई और सिर झुकाकर पारंपरिक अभिवादन करते हुए बोली, "राधरानी की जय!"
सभी श्रमिकों ने सिर झुकाकर एक ही तरह से उत्तर दिया।
बूढ़े मैनेजर ने उसकी तरफ एक नजर डाली और कहा, "आप अंदर जा सकती हैं।"
लेकिन उसने जवाब दिया, “मैं दर्शन के लिए नहीं आई हूँ। मैं यहाँ नौकरी की तलाश में आई हूँ।”
मैनेजर चौंक गया। उसने कहा, "काम?"
सब लोग हैरानी से उसकी ओर देखने लगे। बूढ़े मैनेजर ने उससे पूछा कि उसने कितनी पढ़ाई की है। इससे वह थोड़ी असमंजस में पड़ गई। सीधे जवाब देने से बचते हुए उसने कहा, "मुझे कोई महत्वपूर्ण नौकरी नहीं चाहिए। कुछ भी चलेगा, भंडार के गोमास्ता की सहायक या रसोइए की हेल्पर, कुछ भी चलेगा..."
कमरे के एक कोने में बैठी कैशियर ज़ोर से हंस पड़ी। “हम इन नौकरियों में युवा महिलाओं को नहीं रखते। कभी-कभी, पढ़े-लिखे बूढ़े राधेश्यामियों को नौकरी की तलाश में आना पड़ता है, लेकिन जहाँ तक संभव हो, हम उन्हें भी प्रोत्साहित नहीं करते। आजकल सब कुछ बहुत पेचीदा हो गया है। कुछ दिन पहले, ब्रज के दो स्नातक ज़मीन का किराया वसूलने की साधारण नौकरी के लिए आए थे। जबकि कुछ साल पहले तक, ब्रज के स्नातकों की संख्या उंगलियों पर गिनी जा सकती थी—इतनी कम थी।”

अचानक कैशियर ने ऊपर देखा और बोला, “अरे, आप डॉक्टर रॉयचौधरी की बेटी हैं ना? मैंने आपको उनके औषधालय में उनके साथ काम करते देखा है। मेरी बात सुनिए। इससे बेहतर नौकरी आपको नहीं मिल सकती। जाइए, मेरी बच्ची, भगवान आपका भला करे।”

सिंह द्वार की ओर दोबारा जाते हुए सौदामिनी ने चारणबिहारी को रथघर से बाहर आते देखा। उन्हें देखकर चारणबिहारी ने बड़े उत्साह से उनका अभिवादन करते हुए कहा, “राधा रानी की जय हो!”

सौदामिनी ने अभिवादन में अपना सिर झुकाया और अभिवादन दोहराया।

“ऐसा लगता है कि आजकल आपका सारा दिन औषधालय में ही बीतता है। आप अपने काम में इतने व्यस्त और मग्न रहते हैं कि शायद आपने वृंदावन के पांच हजार मंदिरों के दर्शन करने का अपना पुराना उत्साह खो दिया है,” उन्होंने टिप्पणी की।

उस खास पल में सौदामिनी को चरणबिहारी से मिलकर बहुत खुशी हुई। वह जानती थी कि अगर वह अब घर लौटी तो उसे अपनी छोटी, अंधेरी कोठरी में अकेले ही रहना पड़ेगा। उसे वहाँ घुटन महसूस होने लगी थी और उसे लगा कि अगर उसने जल्द ही कुछ नहीं किया तो एक दिन वह वहीं जिंदा दफन हो जाएगी।

उसने कहा, "अगर आप खाली हैं, तो शायद हम अभी शुरू कर सकते हैं।"

“तो फिर, थोड़ी देर यहीं रुकिए। मैंने अभी-अभी एक आदमी को रथ के पहिए साफ करने के लिए लगाया है। मैं जाकर उसे बता देता हूँ।”

खाली रथ की सफाई कर रहे व्यक्ति ने उसकी ओर देखा और पूछा, "तो आप वृंदावन के पांच हजार मंदिरों के दर्शन करना चाहती हैं। लेकिन आज अचानक आप इतनी उत्सुक क्यों हैं?"

“मेरे घर लौटने का समय लगभग हो गया है,” उसने जवाब दिया।

“तुम जा रहे हो?” चरणबिहारी लगभग चिल्लाते हुए बोले। “रंगजी की रथयात्रा, नवंबर में होने वाली रामलीला, जनवरी में होने वाला बैकुंठ उत्सव, ब्रह्म उत्सव जैसे वे सारे त्योहार जो तुमने नहीं देखे, उनका क्या? नहीं, नहीं, इन त्योहारों को देखे बिना तुम ब्रज से नहीं जा सकते। तुम्हें रंगजी की रथयात्रा अवश्य देखनी चाहिए।”

वे दोनों आगे बढ़े। वे गोबिंदजी मंदिर के सामने से गुज़रे। असहनीय गर्मी थी और मंदिर के लाल पत्थरों से उमस निकल रही थी। ऐसा लग रहा था मानो किसी भी क्षण दीवारों से आग की चिंगारियाँ फूट पड़ेंगी। चुपचाप वे रंगनाथ उद्यान और ज्ञान गोदारी से गुज़रते हुए यमुना नदी की ओर बढ़े। ज्ञान गोदारी की प्राचीन दीवारों पर कुछ कागज़ चिपके हुए थे। वे बहुत पुराने और पूरी तरह सूखे हुए थे। उनका रंग और बनावट प्राचीन भूर्जपत्र पांडुलिपियों जैसा हो गया था। वे किसी प्रकार के नोटिस या पोस्टर प्रतीत होते थे।

“ये नोटिस किस बारे में हैं?” सौदामिनी ने पूछा।

“आप कह सकते हैं कि ये बांके बिहारी के प्रांगण में हुए रक्तपात के पूर्वसूचक थे,” चरणबिहारी ने उत्तर दिया।

सौदामिनी ने पोस्टर पढ़ने की कोशिश की: “वित्तीय मामलों की देखरेख करने वाली समिति को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि भक्तों द्वारा दान किए गए धन का दुरुपयोग न हो। हम अदालती

मामलों आदि के नाम पर मंदिर के धन की बर्बादी का कड़ा विरोध करते हैं। हम पुलिस बल को मंदिर परिसर में प्रवेश नहीं करने देंगे। तीर्थयात्रियों द्वारा देवताओं को अर्पित की गई विभिन्न वस्तुएं, जैसे वस्त्र, बर्तन, सोना, चांदी और कीमती रत्न, कभी भी सही ढंग से उपयोग नहीं किए गए हैं। इसके बजाय, उन्हें हमेशा अवैध रूप से बहुत अधिक कीमतों पर बेचा गया है। राधा की मूर्ति को सुशोभित करने वाले सुंदर कढ़ाई वाले वस्त्र ले लिए गए हैं, उन्हें जला दिया गया है और जिस सोने के धागे से उन पर कढ़ाई की गई थी, उसे बहुत ऊंची कीमतों पर बेच दिया गया है। हमें विश्वास है कि सभी लोग जानते हैं कि बिहारी महाराज के महल को जलाना एक अक्षम्य आपराधिक अपराध था, इत्यादि..."

वहाँ ऐसे कई और कागज़ के टुकड़े थे जिनमें अनेक शर्मनाक घटनाओं और घोटालों का वर्णन था। इनमें से कई अपेक्षाकृत नए थे और अभी तक प्राचीन पांडुलिपियों की तरह रंग-रूप नहीं धारण कर पाए थे। लेकिन सौदामिनी को अब और पढ़ने की इच्छा नहीं थी। वे नदी किनारे की रेत पर उतर आए। पिछली बार जब वह यहाँ आई थीं, तब से यहाँ कुछ लताएँ उग आई थीं। अब यहाँ कोई तीर्थयात्री पूजा-अर्चना या अन्य धार्मिक अनुष्ठानों में लीन नहीं थे, इसलिए विशाल कछुए निडर होकर झाड़ियों की छाया में रेंग रहे थे।

चरणबिहारी ने कहा, "यमुना नदी के किनारे एक अत्यंत अद्भुत दृश्य देखने का यही सही समय है। ध्यान से और एकाग्रता से देखिए, आपको नदी के जल से एक अनोखी रोशनी उठती हुई दिखाई देगी, जो धीरे-धीरे पूरे क्षेत्र को अपनी चपेट में लेकर रोशन कर देगी। देखिए, ध्यान से देखिए..."

"नहीं, नहीं, आज मेरा इन सब बातों में पड़ने का मन नहीं है..." सौदामिनी ने उत्तर दिया।

"मैं देख रहा हूँ कि आप उदास और निराश होने लगे हैं। यह ठीक नहीं है," चरणबिहारी ने कहा।

लड़की चुप रही। दीवार से पुराने कागज़ के कुछ टुकड़े उड़कर हवा में सरसराए। सांपों की तलाश कर रहे आदमी के दिमारू के पेड़ की जड़ों को खोदने की आवाज़ सुनाई दे रही थी।

"चलो, वहाँ उन सीढ़ियों पर बैठते हैं। इससे तुम्हें शांति मिलेगी। क्या तुम उन टूटी हुई सीढ़ियों को देख रही हो? अभी कुछ दिन पहले ही वहाँ भगवान की एक मूर्ति मिली थी। सात नागों के सिर से घिरी एक मूर्ति, जिसके हाथों में एक सुंदर बर्तन है। यही वह प्रसिद्ध धीर समीर घाट है जहाँ गोकुलचंद्र ने राधा से विनती की थी कि वह अपने आहत अभिमान को भूलकर उनके पास आ जाएँ। जैसा कि कवि जॉयदेव ने कहा है:

"Smara garala khnadanang, mama shirashi mandanang,
"देहि पदापल्ब मुदरम्!!" *

सौदामिनी और चरणबिहारी सीढ़ियों की ओर बढ़े। अचानक, अप्रत्याशित रूप से, उसने उनसे पूछा, "आप वृंदावन में बहुत समय से रह रहे हैं। बताइए, क्या मुझ जैसी कोई स्त्री पहले कभी वृंदावन आई है?"

"तुम्हारा मतलब 'तुम्हारे जैसा' से क्या है?" उसकी सहेली ने पूछा।

जवाब देने के बजाय, उसकी आँखों में आंसू भर आए।

“आपको मुझे वो बातें बताने की ज़रूरत नहीं है जिनसे आपको इतना दुख होता है। मैं आपको समझती हूँ। आप जैसी कुछ महिलाएं जो यहाँ आई हैं, उन्होंने मेरी गहरी सहानुभूति जगाई है और मुझे दुखी किया है। और मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ, आप जैसी कुछ महिलाएं शायद यहाँ आई होंगी...”

“सहानुभूति! मुझे सहानुभूति नहीं चाहिए। क्या तुम्हें मेरे लिए कोई इच्छा नहीं है? लोग कहते हैं कि मैं अभी तक उन बूढ़ी और मुरझाई हुई महिलाओं जैसी नहीं हुई हूँ...”

एक समय था जब चरणबिहारी सचमुच अकेली और चरित्रहीन महिलाओं के साथ बड़े चाव से मेलजोल रखते थे। यह उनके लिए शराब के नशे में होने जैसा एक मदहोश कर देने वाला शौक था। लेकिन इस समय, इस सुंदर युवती के साथ बैठे हुए, उन्हें उसके प्रति कोई शारीरिक इच्छा नहीं हो रही थी। इसके बजाय, उन्हें उसके चेहरे में अपनी उस छोटी बेटी का चेहरा दिखाई दिया जो चमेली की मालाओं से सजी मंदिरों में जाया करती थी।

“तुम मुझे ऐसे क्यों देख रहे हो?” सौदामिनी ने उससे पूछा। “क्या मैं सचमुच बूढ़ी औरत जैसी हो गई हूँ? एक समय था, ज़्यादा समय नहीं बीता, जब पुरुष मेरे शरीर की सुंदरता और आकर्षण की प्रशंसा करते थे। लेकिन समय बीतने के साथ... बताइए, क्या आपको कुछ भी महसूस नहीं होता... आपने कुछ देर पहले मुझसे कहा था कि आपको यमुना नदी के जल से एक अनोखी, अलौकिक चमक दिखाई देती है—एक ऐसी चमक जो केवल आपको ही दिखाई देती है। मैं बिल्कुल आपकी ही तरह हूँ। कुछ समय से एक अजीब सा अंधकार मेरे पूरे अस्तित्व और जीवन को घेर रहा है... लेकिन कभी-कभी मुझे लगता है कि यह अजीब सा अंधकार प्रकाश से भी ज़्यादा प्रकाशमान है। यकीन मानिए,” सौदामिनी आगे नहीं बोल सकीं। उनकी आवाज़ भावनाओं से भर गई।

“तो क्या उस ईसाई व्यक्ति ने—मुझे क्षमा करें, मैं उसका नाम नहीं जानता—आपको कुछ हद तक सांत्वना दी?”

सौदामिनी फिर चुप हो गई। अपने पैरों के बीच सिर झुकाकर वह रेत पर तेज़ी से लिखने लगी, "हिंदू, मुसलमान, ईसाई, हिंदू, मुसलमान, ईसाई"।

“क्या आपके पति की याद आपको किसी भी तरह की उत्तेजना देती है?” उसने पूछा।

“नहीं, ऐसा नहीं है। वास्तव में, मुझे अब उसका चेहरा मुश्किल से ही याद है। समय ने सब कुछ मिटा दिया है। फिर भी, कभी-कभी ऐसा लगता है मानो और कुछ भी वास्तविक नहीं है, मानो उसकी स्मृति ही एकमात्र वास्तविकता है...”

“तो फिर, आपको जीने के लिए कौन या क्या प्रेरित करता है?” चरणबिहारी ने पूछा।

“आपने अभी-अभी उस ईसाई का ज़िक्र किया। एक तरह से, वही मुझे प्रेरित करता है, मेरी प्रेरणा का स्रोत है। वह सचमुच मेरे साथ है। जी हाँ, वह मेरे साथ है! मुझे नहीं लगता कि मैं आपको समझा सकती हूँ कि उसके 'वहाँ होने' का मेरे लिए क्या मतलब है। आप नहीं समझ पाएँगे। मुझे नहीं लगता कि कोई भी इसे समझ पाएगा। मुझे उससे प्यार नहीं हुआ है। फिर भी, उसका वहाँ होना ही मेरे लिए काफ़ी प्रेरणा है। लेकिन, बताइए: क्या मेरे जैसा कोई कभी इस

पवित्र भूमि पर आया है?”
चरणबिहारी ने पाया कि वह उसका चेहरा नहीं देख पा रहा था। एक अनचाहा दुख और दर्द उसके हृदय में भर गया। एक बार फिर अनायास ही उसकी अपनी बेटी का कोमल, युवा चेहरा उसके मन में आ गया, वह प्यारी युवती जो आजकल सुगंधित चमेली की मालाएं गले में सजाकर मंदिरों में घूमती थी।

हे प्रभु, मुझे अतीत के सभी विष और कष्टों को भुलाने में सहायता कीजिए। मुझे अपने पवित्र चरणों की धूल आशीर्वाद के रूप में प्रदान कीजिए।

Ten

अंततः एक दिन, बेहरिमोहन कुंज बिक गया। पाण्डों और बिचौलियों ने मुनाफे का एक बड़ा हिस्सा अपने अधिकार के रूप में ले लिया और सभी बकाया चुकाने के बाद ठाकुर साहब के पास जो थोड़ी सी रकम बची, उसका एक हिस्सा आलमगढ़ी को देना पड़ा। वास्तव में, ठाकुर साहब सोने के आभूषण और सोने की बांसुरी ले सकते थे, जिनसे उनके परदादा ने राधा-दामोदर की मूर्तियों को सजाया था। मूर्तियों के वस्त्र और अन्य वस्तुएँ बेचने वाला व्यक्ति, जो कभी-कभी ठाकुर साहब के साथ बैठकर बातें करता था, अक्सर उनसे आग्रह करता था कि वे भावनाओं में न बहें। उसने कहा था, "महोदय, अपने हृदय को कठोर कीजिए, अन्यथा आपका जीवन यापन कठिन हो जाएगा। आपको यह समझना होगा कि यह अब पुराना ब्रज नहीं रहा। यह इतना भ्रष्ट हो गया है कि लोग मूर्तियों से वस्त्र तक छीनकर मथुरा के बाजार में बेचने से नहीं हिचकिचाते।"

लेकिन ठाकुर साहब ने पाया कि वे अपने दिल को कठोर नहीं कर सकते। वे मूर्ति पर सजे कीमती आभूषण और शुद्ध सोने की बांसुरी को उतारने के लिए खुद को तैयार नहीं कर पा रहे थे। कुछ समय से वे अपनी विवेकशक्ति खोने लगे थे—यानी सही और गलत के बीच अंतर करने की क्षमता खो रहे थे। यह मंदिर उनके पूर्वजों की गौरवशाली परंपरा का अंतिम अवशेष था। उनके परदादा ने अपनी मृत्युशय्या पर परिवार से कहा था, "तुममें से कोई भी इस मंदिर को कभी न छुए, चाहे तुम्हें भीख मांगनी ही क्यों न पड़े। और ट्रस्ट से मिलने वाले धन का लालच कभी न करो। जो भी ऐसा करेगा, उसे दुर्भाग्य ही मिलेगा।"

ठाकुर साहब के परिवार को उन छोटी-छोटी, अंधेरी झोपड़ियों में से एक में जाकर रहना पड़ा, जहाँ आमतौर पर राधेश्यामियों का निवास होता था। उनके परदादा के ज़माने में, घोड़ों का चारा इसी कमरे में रखा जाता था। ठाकुर साहब के परिवार के तीनों अभागे सदस्यों में उस छोटे, अंधेरे और सीलन भरे कमरे में कुछ दिन रहने के बाद बहुत बड़ा बदलाव आ गया, जिसमें न तो खिड़कियाँ थीं और न ही हवा आने-जाने की कोई व्यवस्था। ऐसा लगा जैसे उनमें कोई अजीब परिवर्तन आ गया हो। पास की झोपड़ियों में रहने वाली राधेश्यामियों ने देखा कि मृणालिनी पूरी रात गीले फर्श पर लेटी जागती रहती थी। कुछ समय बाद वह भी दूसरी राधेश्यामियों की तरह सड़क किनारे से पुराने टिन और बोतलें इकट्ठा करने लगी। जल्द ही, पड़ोसियों में कानाफूसी होने लगी कि मृणालिनी अपनी मानसिक रूप से विक्षिप्त माँ जैसी होती जा रही है। उसने झोपड़ी के एक कोने को टिन, बोतलों और ऐसी ही बेकार चीज़ों से भर दिया, जिन्हें वह उठाती थी।

जब वे मंदिर में रहते थे, तब ठाकुर साहब अपनी कमज़ोर दृष्टि के बावजूद अक्सर लंगड़ाते हुए बाहर निकल जाते थे और इधर-उधर टहलते थे। कभी-कभी वे बाज़ार की ओर वाली सीढ़ियों पर जाकर बैठ भी जाते थे। लेकिन अब वे बाहर नहीं जा सकते थे क्योंकि टूटी ईंटों, कूड़े और टूटे कुएँ के बीच उनकी छड़ी बेकार हो गई थी। दृष्टिहीन साहब की छड़ी मंदिर की ओर जाने वाली

टूटी सीढ़ियों पर चढ़ने में उनकी मदद नहीं कर सकती थी, और उन्होंने अपना सारा समय उस अंधेरे, हवा रहित कमरे में बिताना शुरू कर दिया। जल्द ही भीषण गर्मी का मौसम आ गया। उस झोपड़ी में लगभग कैद हो चुके तीनों व्यक्ति, जो इस तरह रहने के बिल्कुल आदी नहीं थे, ऐसा महसूस कर रहे थे जैसे उन्हें जिंदा भूना जा रहा हो।

राधेश्यामियों को इस भीषण गर्मी की आदत पड़ चुकी थी। वे अपने कमरों में पूरी तरह नग्न अवस्था में रहते थे, ताकि वे उच्च तापमान की तीव्रता को सहन कर सकें। जी हाँ, तीन हज़ार से अधिक बेघर राधेश्यामियों को ब्रज की ग्रीष्म ऋतु की भीषण गर्मी में अपने झोपड़ियों में नग्न अवस्था में रहने के लिए विवश होना पड़ा था।

लेकिन ठाकुर साहब के परिवार के लिए गर्मी असहनीय थी। वे गुस्से में, फँसे हुए जानवरों की तरह व्यवहार करने लगे। अक्सर वे एक-दूसरे पर गंदी गालियाँ बरसाते सुनाई देते थे। एक दिन, मानसिक रूप से विक्षिप्त अनुपमा को ठाकुर साहब पर गुस्से से आरोप लगाते हुए सुना गया, "इन सबके लिए आप ही ज़िम्मेदार हैं! हाँ, बिल्कुल! मैं आपके बारे में और आपके व्यवहार के बारे में सब जानती हूँ। मुझे पता है कि आप किस वेश्या के पास गए थे और कब। मुझे सब याद है! 1966 में, कलकत्ता में पेशेवर वेश्यावृत्ति के खिलाफ कानून के तहत केवल पाँच मामले थे। 1967 में, उन्नीस मामले हो गए। और 1966 में, उस बंदर जैसे केंद्रीय मंत्री ने एक खुली सभा में वेश्याओं से मुलाकात की और उन्हें आश्वासन दिया कि उनके खिलाफ पुलिस अत्याचार बंद कर दिए जाएँगे।"

वह एक बहुत ही बुद्धिमान और ज्ञानी व्यक्ति की तरह बातें करती रही, और फिर अचानक जोर से हंस पड़ी।

फिर ठाकुर साहब की ओर उंगली करते हुए वह चिल्लाई, "मुझे कुछ और बातें पता हैं। 1962 में मेरी मातृभूमि के पुरुषों ने आयातित शराब पी थी, 27,68,236 लीटर। फिर 1964-65 के दौरान यह मात्रा बढ़कर 34,20,748 लीटर हो गई! मुझे ठीक से याद नहीं कि मात्रा कितनी थी। लेकिन मुझे याद है कि आपने किस दुकान से और कब शराब खरीदी थी। ओह, हाँ, मुझे यह बहुत अच्छी तरह याद है!"

ठाकुर साहब ने संयमित स्वर में कहा, "ठीक है। अब बाहर जाकर बैठो। ठंडी हवा चल रही है।"

"अरे! आपको लगता है कि नीम के पत्ते पेड़ों से गिर रहे हैं, इसलिए हवा चल रही है। लेकिन असल में पत्ते पेड़ों पर बैठे बंदरों की वजह से गिर रहे हैं। क्या आपको वो बदसूरत, टेढ़ी गर्दन वाला बंदर पेड़ पर उछलता हुआ नहीं दिख रहा? नीम के पत्ते उसी की वजह से गिर रहे हैं, न कि किसी हवा या हल्की-हल्की हवा की वजह से।"

यह कहकर कि वह बंदरों को देखने के लिए बाहर गई है, ठाकुर साहब ने इसका फायदा उठाते हुए लंगड़ाते हुए दरवाजे तक जाकर अपनी पत्नी के लिए दरवाजा बंद करने की कोशिश की। लेकिन, उनका इरादा भांपते हुए, वह एक उग्र शेरनी की तरह वापस अंदर भाग गई।

"नहीं, तुम दरवाजा बंद नहीं कर सकते," वह चीखी। "सब लोग जहर खाकर मर जाएंगे! सब, सब नरक में जाएंगे! लेकिन रस्सी से लटकने से क्या फायदा? तुम्हारा पूरा दिमाग पाप से भरा हुआ है!"

उसने फिर से अंधे ठाकुर साहब को उनकी टिन की कुर्सी पर बैठने के लिए कहा। और उस कुर्सी पर बैठे-बैठे ही उन्हें उसके द्वारा अपने खिलाफ की जा रही आधी पागल जैसी बातों को सुनना पड़ा।

बेहद भावुक स्वर में उसने आगे कहा, "मुझे पता था कि भगवान एक दिन मुझे ये सब कहने का मौका जरूर देंगे। बहुत पहले, जब तुम शराब और औरतों में मशगूल थे, मैंने भगवान से प्रार्थना की थी कि मुझे एक मौका दे, बस एक मौका, ताकि मैं तुम्हें इस कुर्सी पर बिठा सकूँ और अपनी 'मीठी' बातें सुना सकूँ! मैंने अपनी जवानी तो बहुत पहले ही खो दी। तुम भी बूढ़े हो चुके हो, और अब हमारे बीच 'मीठी' बातें करने का कोई सवाल ही नहीं उठता! अब मुझे किसी बात का अफसोस नहीं है। लेकिन मुझे अफसोस तब होता है जब तुम कहते हो कि किसी ने तुम्हें धक्का देकर ब्रज में धकेल दिया था।"

उसके होंठों पर मुस्कान आ गई। लेकिन धीरे-धीरे, वह मुस्कान सिसकी में बदल गई, और वह रोने लगी और कमरे की अंधेरी दीवारों पर अपना सिर पटकने लगी। फिर, मृणालिनी द्वारा जमा किए गए डिब्बे और बोतलें उठाकर, उसने ठाकुर साहब पर फेंकना शुरू कर दिया।

राधेश्यामियों ने अपनी झोपड़ियों से बाहर आकर एक-दूसरे से चिल्लाकर कहा, "उसे रोको, उसे रोको! नहीं तो वह बूढ़े आदमी को मार डालेगी!"

लेकिन उनमें से किसी की भी हिम्मत नहीं हुई उस अधमरी औरत के पास जाने की। बूढ़ी औरतें उस अजीबोगरीब दृश्य को देखकर स्तब्ध खड़ी रहीं, डर और सदमे से एक-दूसरे का हाथ थामे हुए! ठाकुर साहब की पत्नी ने अपने कपड़े फाड़ दिए और नग्न खड़ी हो गईं। लेकिन किसी भी राधेश्यामियों में उनके पास जाने का साहस नहीं था...

Eleven

स्वयं गोदम्मा ने रंगाजी के जोगिराहन स्वामीजी जैसे महान स्वामियों के सम्मान में निकाली गई शोभायात्रा में भाग लिया। फिर आश्विन महीने में प्रसिद्ध नवरात्रि उत्सव शुरू हुआ और गोदम्मा की शोभायात्रा स्वर्ण स्तंभ से फिर से शुरू हुई।

शशि और आलमगढ़ी नवरात्रि उत्सव के अंत तक साथ रहे। लेकिन उसके बाद, शशि ने बाणखंडी के राधेश्यामियों के आवास वाले कमरों में से एक में रहने की व्यवस्था की, और आलमगढ़ी भी बिहारी कुंज छोड़कर यमुना नदी के पास एक सुनसान घर में रहने वाले एक आध्यात्मिक गुरु के पास चले गए, जो ज्योतिषी के रूप में अपनी कला का विज्ञापन करते थे। जब तक उन्हें कोई नई नौकरी नहीं मिल जाती, आलमगढ़ी भाग्य जानने आने वाले लोगों की देखभाल करके अपना जीवन यापन करने में संतुष्ट थे। लेकिन बाणखंडी में अपनी झोपड़ी में शशि के लिए हालात धीरे-धीरे और भी मुश्किल होते चले गए, क्योंकि कुछ बेकार बैठे युवक, जिनके पास करने के लिए कुछ बेहतर नहीं था, अपना समय उनके कमरे के बाहर घूमने या उसके सामने खड़े होकर उनके बाहर आने का इंतजार करने में बिताने लगे।

जब गोदाम्मा को गरुड़ स्तंभ के चारों ओर जुलूस में ले जाया जा रहा था, तब शशि उत्सुकता से भीड़ को देख रही थी। उसने सोचा, शायद शेराफी सेठनी आ रही हों। तब शायद वह उन्हें अपने गोपाल की देखभाल के लिए काम पर रखने के लिए मना ले। कितनी अच्छी किस्मत होगी! त्योहार के दौरान हर सुबह शशि रंगाजी के द्वार पर खड़ी रहती थी। लेकिन सेठनी का कोई अता-पता नहीं था, न ही उनके सजे-धजे तांगे का, न ही उनकी पालकी का।

हताश और निराश होकर शशि अपने कमरे में जाकर लेट गई और दरवाजा बंद कर लिया। नवरात्रि के हर्षोल्लास भरे उत्सव अभी समाप्त नहीं हुए थे और उसे केसीघाट में रामलीला उत्सव के रावण की तेज, कर्कश आवाज सुनाई दे रही थी।

अचानक उसे एक और आवाज़ सुनाई दी, भयानक हंसी की आवाज़! वह अपने बिस्तर पर उठ बैठी। रामलीला देखने न गए दो-तीन बूढ़े राधेश्यामियों की झोपड़ियाँ खर्राटे ले रही थीं। लेकिन वह जानती थी कि उनमें से अधिकतर रामलीला के मैदान में बैठे थे।

कोई आया और उसने उसके दरवाजे पर जोर से दस्तक दी और उसे दरवाजा खोलने के लिए चिल्लाया।

“तुम कौन हो?” उसने पलटकर पूछा।

“दरवाजा खोलो, फिर मैं तुम्हें बताऊंगा कि मैं कौन हूं,” उस व्यक्ति ने चिल्लाकर जवाब दिया।

“मुझे बताओ तुम कौन हो। वरना मैं इतनी रात को दरवाजा नहीं खोलूंगी,” उसने जवाब दिया।

“सावधान रहो। जरूरत पड़ने पर मैं एक ही लात से तुम्हारा दरवाजा तोड़ सकता हूँ! सुनो, मैं आलमगढ़ी का मित्र हूँ। तुम खतरे में हो। इसीलिए मैं रामलीला उत्सव से यहाँ आया हूँ, इस

उम्मीद में कि मैं तुम्हारी कुछ मदद कर सकूँ।"

शशि के जवाब का इंतज़ार किए बिना ही वह आदमी दरवाज़े पर लात मारने लगा। शशि को डर था कि खर्राटे लेते बूढ़े राधेश्यामियों की नींद किसी भी पल खुल जाएगी और अगर उन्होंने यह सब देख लिया तो सुबह उसे अपना कमरा छोड़ने के लिए मजबूर कर देंगे।

उसने दरवाजा खोला और देखा कि एक अनजान आदमी वहाँ खड़ा है। "मैं आलमगढ़ी की अनुमति से आया हूँ," उसने कहा। "हम जानते हैं कि तुम उससे अलग हो गई हो, लेकिन यह सब तुम पर निर्भर करता है। मैं भी एक प्रस्ताव लेकर आया हूँ। मेरा भी एक मंदिर है, और मैं तुम्हारे जैसी स्त्री से अपने काम में मदद चाहता हूँ। अगर तुम मेरा प्रस्ताव स्वीकार करती हो, तो तुम्हें मेरी मदद करनी होगी, जैसे तुमने आलमगढ़ी की की थी। मतलब, अगर ज़रूरत पड़ी, तो तुम्हें मेरे साथ सोना भी पड़ेगा। और यकीन मानो, रामलीला मैदान में कुछ लोगों को तुम्हारी असुरक्षित हालत का पता चल गया है और वे इसका फायदा उठाने के लिए घात लगाए बैठे हैं। लेकिन मैं दृढ़ निश्चयी हूँ, और मैं किसी भी हद तक जा सकता हूँ..."

जब वह आदमी बोल रहा था तो हवा में एक भयानक दुर्गंध फैल गई, उसने शायद बासी दही में भांग मिलाकर पी ली थी!

उंगलियां चटकाते हुए उसने उस पर चिल्लाते हुए कहा, "मैं तुमसे कहता हूँ, अगर तुम मेरा प्रस्ताव नहीं मानोगी तो तुम्हें पछतावा होगा। तुम्हें ज़हर का सहारा लेना पड़ेगा! तो, इससे पहले कि जंगली कुत्तों का वह झुंड आ जाए... मैं शांतिप्रिय इंसान हूँ, उनके जैसे खूंखार भेड़िये जैसा नहीं। मुझे यकीन है कि तुम अच्छी तरह जानती हो कि ऐसे बाघ कितने क्रूर हो सकते हैं! वे तुम्हें पूरी तरह खत्म कर देंगे!"

"रंगाजी में सुबह की पूजा और दर्शन शुरू हो गए होंगे," उसने कुछ देर बाद कहा। "अगर बूढ़े राधेश्यामियों ने मुझे आपके कमरे के सामने खड़ा देखा तो उन्हें अच्छा नहीं लगेगा। इसलिए मैं चलता हूँ। लेकिन मेरे प्रस्ताव पर विचार कर लीजिएगा..." वह आदमी भांग के नशे में चूर लग रहा था। वह मुश्किल से सीधा चल पा रहा था!

इस समय तक, रंगाजी का जुलूस सिंह द्वार पार कर चुका था, और बंगशीगोपाल और राधा-दामोदर मंदिरों से सुबह की आरती के शंखों और घंटियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। शशि ने युवा रंगाजी स्वामीजी को नंगे पैर जुलूस के पीछे चलते देखा, वे पूरी तरह मंत्रमुग्ध थे। उन्हें याद आया कि पिछले साल, जब वे रंगाजी के रथ की रस्सियाँ खींच रहे थे, तब वे उनके बहुत करीब खड़ी थीं! वास्तव में, उन्होंने इस बाल ब्रह्मचारी, जो अब एक युवा स्वामीजी बन चुके थे, को पिछले कई वर्षों में ब्रज के अनेक धार्मिक उत्सवों और समारोहों में कई बार देखा था। युवा स्वामीजी को देखकर शशि का बीस वर्षीय हृदय और शरीर एक असाधारण, दिव्य आनंद और परमानंद से कांप उठा। वह जितनी अधिक झिझकती और संकोच करती गई, उतना ही उसका मोहित हृदय उस युवा साधु से मिलने के लिए तड़पता रहा!

जुलूस चिरहरण घाट से होते हुए जमुना नदी के पास पहुँचा। वह नदी की कई टूटी सीढ़ियों में से एक पर बैठीं और स्वामीजी को पवित्र नदी से जल भरते हुए मंत्रमुग्ध होकर देखती रहीं। शहनाई की मधुर ध्वनि और प्रार्थनाओं के जाप से पूरा इलाका गूंज उठा। स्वामीजी जल से बाहर आए

और एक विशाल सजे हुए छाते के नीचे बैठ गए।

कुछ देर बाद जब वह अपने कमरे में लौटी, तो उसने देखा कि दो राधेश्यामियाँ उसके सामने खड़ी उसका इंतज़ार कर रही थीं। जैसे ही वह पास पहुँची, दोनों बूढ़ी औरतें आपस में बोलने लगीं, “दो आदमी तुम्हें ढूँढ़ते हुए आए थे, और उनमें से किसी ने भी कंठी माला नहीं पहनी थी, जो पुरोहितों द्वारा हमेशा पहनी जाने वाली पवित्र माला होती है। वे ज़रूर आवारा कुत्तों जैसे निकम्मे आदमी होंगे, जो हमेशा बेसहारा महिलाओं की तलाश में रहते हैं।”

उसके चेहरे के भावों में कोई बदलाव न देखकर, महिलाओं ने पूछा, "तो फिर तुम आलमगढ़ी वापस जाओगी?"

“नहीं, मैं ऐसा नहीं करूंगी,” उसने जवाब दिया।

राधेश्यामियों को बहुत गुस्सा और असंतोष हुआ। यदि शशि अपनी झोपड़ी में यहीं रहती, तो इसका अर्थ यह होता कि उन्हें भी उन उद्दंड और अभद्र युवकों की बदतमीज़ी सहनी पड़ती, जिन्हें ब्रज के जंगली कुत्तों के नाम से जाना और उनसे डरा जाता था। वे शशि से बेहद असंतुष्ट होकर चले गए।

Twelve

यह चमेली के फूलों का मौसम था। सुबह-सुबह ब्रज में घना कोहरा छाया रहता था, और जिन बुजुर्ग राधेश्यामियों को ठीक से दिखाई नहीं देता था, उन्हें सुबह की प्रार्थना सभा के लिए अपने भजन आश्रमों में जाते समय एक-दूसरे का हाथ पकड़ना पड़ता था।

सौदामिनी ने औषधालय में काम करना छोड़ दिया था। उन्होंने नदी में सुबह स्नान करना भी लगभग बंद कर दिया था, और रंगाजी के त्योहारों में भी वे नज़र नहीं आती थीं। रॉयचौधरी की डॉक्टर के रूप में प्रतिष्ठा बहुत कम समय में ही बहुत बढ़ गई थी। जब लोग उनसे गलियों और संकरी सड़कों पर मिलते, तो सम्मानपूर्वक सिर झुकाकर उनका अभिवादन करते। उनके मरीज़ों की संख्या बढ़ती गई। इतनी कि कई बार उन्हें मंदिर के खाली कमरों का इस्तेमाल करना पड़ता था। लेकिन लाख कोशिश करने के बावजूद, वे एक बात नहीं बदल सके। वे ब्राह्मण मरीज़ों को हरिजन मरीज़ों के साथ एक ही पानी का घड़ा इस्तेमाल करने के लिए मजबूर नहीं कर सकते थे। इसलिए, उन्हें दो घड़े एक-दूसरे से कुछ दूरी पर रखने पड़ते थे।

साथ ही, उनकी यह आशा भी धराशायी हो गई कि ब्रज में जीवन, और विशेष रूप से उनके छोटे चिकित्सा केंद्र में उनकी बेटी की भागीदारी, उसके व्यवहार में कुछ बदलाव लाएगी। वह उसके व्यवहार से निराश और हताश थे। औषधालय के प्रति उसका शुरुआती उत्साह काफी समय पहले ही समाप्त हो चुका था। फिर भी, रॉयचौधरी को यह आभास हो गया था कि उसकी भावनाओं के किसी एक कोने में मानवीय सहानुभूति का अथाह भंडार छिपा हुआ है—वंचितों और बेसहारा लोगों के प्रति सहानुभूति। जिस तरह से उसने एक बेसहारा कुष्ठ रोगी महिला की देखभाल की और उसके प्रति उसका कोमल, सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार एक दुर्लभ बात थी—ऐसा कुछ जो उन्होंने अपने लंबे चिकित्सा करियर में अभी तक नहीं देखा था।

इसके विपरीत, बीते सात वर्षों ने मानो उसे एक भटकती हुई बुढ़िया में बदल दिया था। आजकल कभी-कभी एक अजीब सी भावना उसे घेर लेती थी। उसके मन में दुर्भावना की एक विचित्र, प्रबल लेकिन मौन भावना घर कर जाती थी। कभी-कभी तो यह अजीब सी अनुभूति सुबह-सुबह यमुना नदी के कोमल, रेशमी जल को भी रोशन कर देती थी! क्या किसी और ने कभी ऐसी असामान्य और विचित्र भावनाओं का सामना किया है, वह सोचती थी?

भोज के धनी राजा के श्मशान घाट पर एक विचित्र और रहस्यमय सन्नाटा छाया हुआ था, जहाँ दो हज़ार साल पुराने बौद्ध बिहार के कुछ अवशेष और उज्जैनी के प्रसिद्ध कलाकारों की कृतियाँ कांटेदार झाड़ियों और घनी वनस्पतियों से लगभग छिपी हुई थीं। अब वहाँ केवल एक कठोर, लेकिन मौन पीड़ा ही गूंजती प्रतीत होती थी और सौदामिनी को कभी-कभी लगता था कि वह भी किसी रहस्यमय ढंग से इस अनकही, फिर भी स्पष्ट पीड़ा से जुड़ी हुई है।

ऐसा नहीं था कि वह अकेलेपन और अलगाव की भावना से अपरिचित थी। दरअसल, सुब्रतो से

विवाह के बाद ही सौदामिनी की हमेशा रहने वाली अकेलेपन की भावना अचानक और रहस्यमय तरीके से गायब हो गई थी, शायद प्रेम के कारण। और प्रेम की मुक्ति और शक्ति के कारण। लेकिन अब उस दिव्य प्रेम के प्रकाश का जरा सा भी अंश शेष नहीं रहा!

और उस ईसाई युवती का क्या हुआ? उसे कभी-कभी ऐसा लगता था कि वह सीधे एक गहरी और अंधेरी सुरंग की ओर बढ़ रही है। साथ ही, कभी-कभी उसे यह भी लगता था कि यह अंधेरा प्रकाश से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है! वह समझ नहीं पा रही थी कि उसके साथ क्या हो रहा है। क्या किसी और का मन इतना उथल-पुथल भरा और भ्रमित था? क्या ऐसी कोई महिला पहले कभी पवित्र ब्रज में आई थी?

एक सुबह, सूखी और मुरझाई हुई कागज़ों के तेज़ हवा में उड़ने जैसी आवाज़ से वह जाग उठी। ऊपर देखने पर उसने देखा कि एक साँप टूटी हुई ईंटों और लकड़ी की दरारों से धीरे-धीरे बाहर निकल रहा है। उसका पीला शरीर झोपड़ी के अँधेरे में चमक रहा था। लेकिन, शायद उसकी मौजूदगी का आभास पाकर, वह झट से दूसरी दरार में गायब हो गया।

सौदामिनी सोच रही थी कि सुबह-सुबह सांप का दिखना कोई अपशगुन था, किसी शुभ घटना का संकेत था। उसे क्या करना चाहिए? क्या उसे निकुंज बोन या लालाजी के मंदिर में टहलने जाना चाहिए? उसकी माँ ने उसे बार-बार सुबह इतनी जल्दी अकेले बाहर न जाने की चेतावनी दी थी। माँ कहती थी कि ब्रज अब सुरक्षित जगह नहीं रही। लेकिन इन दिनों उसकी माँ छोटी-छोटी बातों पर भी घबरा जाती थी। कुछ ही दिन पहले, एक राधेश्यामियों ने उसे बताया था कि एक ईसाई युवक को चिरहरण घाट की सीढ़ियों पर बैठे देखा गया था। तब से उसने पवित्र नदी में सुबह स्नान करना और गोपेश्वर में शुभ बेलपत्ती चढ़ाना छोड़ दिया था।

इसके बावजूद, सौदामिनी ने अपना दरवाजा खोला और चुपचाप बाहर कदम रखा। आजकल हर कोई यही कहता था: पुराने समय का सुरक्षित और महफूज़ ब्रज अब गायब हो चुका था। अब यह दुष्ट, भेड़ियों जैसे इंसानों से भरा हुआ था, जो भोले-भाले और बेखबर शिकारों पर झपटने के लिए तैयार रहते थे। उसने अपने सिर को साड़ी के एक किनारे से ढक लिया। उसे दिन के इस समय अकेले बैठने का ख्याल भी अच्छा नहीं लग रहा था। अकेलापन उसे लगातार सता रहा था। यह दिन-ब-दिन और भी गहरा होता जा रहा था।

स्थिर न रह पाने के कारण, वह ब्रह्मकुंड के पास से गुजरने वाले संकरे रास्ते पर चलती रही। रात का अंधेरा पूर्व दिशा की ओर धीरे-धीरे छंट रहा था। लेकिन, जैसे ही वह नए ब्रह्मा मंदिर के पास पहुँची, वह अचानक रुक गई और अपने चेहरे पर साड़ी का किनारा नीचे खींच लिया। मंदिर के सामने प्रकाश स्तंभ के नीचे एक आदमी खड़ा था। और थोड़ी दूर आगे ज़मीन पर एक और आदमी पड़ा था, एक बीमार आदमी, जो मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहा था। वह पूरी तरह नग्न था और भूत जैसा दिख रहा था।

सौदामिनी दीवार से सटकर खड़ी हो गई और उस खड़े आदमी को देखने लगी। ज़ोर से चीखने की इच्छा को उसने मुश्किल से दबाया, क्योंकि वह आदमी कोई और नहीं बल्कि उसके महान और वीर पिता, डॉ. रॉयचौधरी थे!

रॉयचौधरी नीचे झुके और मरणासन्न व्यक्ति की अच्छी तरह से जांच की। फिर उन्होंने कुछ ऐसा

किया जिससे सौदामिनी दंग रह गईं। उन्होंने ठंड से बचने के लिए अपने चारों ओर लपेटा हुआ गर्म कंबल उठाया और बीमार व्यक्ति को उससे ढक दिया। फिर उन्होंने उस व्यक्ति को अपनी बाहों में उठाया और तेजी से अपने औषधालय की ओर चल दिए। सौदामिनी ने सोचा कि उनके साठ वर्षीय पिता एक बूढ़े व्यक्ति की बजाय एक मजबूत युवक की तरह दिखते और व्यवहार करते हैं। क्या यह व्यक्ति—उनके पिता—वास्तव में एक महान व्यक्ति थे? ईस्ट इंडिया कंपनी के पूर्व दीवान, लालाजी, संन्यासी संभुरम अवस्थी के अंतिम वंशज?

वह टूटी हुई दीवार के पीछे से निकली और चलने लगी। हवा अब तेज़ हो रही थी। भूखे-प्यासे भिखारियों के समूह सिंह द्वार के सामने कतार में लगने लगे थे। शुक्रवार का दिन था, और वह पूरी सुबह मंदिर के किसी कोने में बैठकर बिता सकती थी, या कम से कम वेंकटेश्वर तिरुमंजन के उत्सव समाप्त होने तक। लेकिन उसके बाद वह अपने उस अंधेरे कमरे में कैसे लौट सकती थी? सच में, अगर उसका मन करता, तो वह पूरा दिन ब्रज में घूम सकती थी! अब वह स्वतंत्र थी, उसे कोई रोक नहीं सकता था।

उसने कंधे पर भिक्षापात्र लटकाए ब्रह्मचारियों के एक समूह को देखा। वे पूर्व दिशा की ओर मुख करके सूर्य की विधिपूर्वक पूजा में लीन थे। वे उत्तर काशी के स्वामी ब्रह्मानंद द्वारा हाल ही में स्थापित संस्कृत विद्यालय के विद्यार्थी होंगे। कुछ ही दिन पहले स्वामीजी ने मथुरा में आयोजित धर्म महासभा में एक अत्यंत प्रभावशाली भाषण दिया था, जिसमें उन्होंने संस्कृत को अपनी मातृभाषा बताने वालों की निंदा की थी। उनके अनुसार, संस्कृत आज भी ब्रज की प्रिय और पसंदीदा भाषा है।

एक तरह से यह आश्चर्यजनक था कि, हालांकि वे अत्यंत प्रतिष्ठित और आदरणीय स्वामीजी के छात्र थे, फिर भी वे भीख मांगने के लिए भिक्षापात्र लेकर घूमते थे। लेकिन फिर क्यों नहीं? ब्रज के प्रसिद्ध प्रेम विद्यालय के छात्र भी भिक्षा मांगते थे और दान के माध्यम से अपनी पढ़ाई जारी रखते थे। वे रामचरित मानस और केशव दास की रामचंद्रिका के श्लोकों का पाठ करके भी सिक्के कमाते थे। प्रतिष्ठित संस्कृत संस्थानों के छात्रों द्वारा ऐसे धार्मिक और आध्यात्मिक ग्रंथों के अंशों और श्लोकों का पाठ सुनना अनुभवहीन भक्तों और तीर्थयात्रियों के लिए एक दुर्लभ अनुभव होता था, और छात्र सिक्कों और फूलों से भरे भिक्षापात्र लेकर लौटते थे।

सौदामिनी ने देखा कि उसके कपड़े फटने लगे हैं और उसे समझ आ गया कि ये ज़्यादा दिन नहीं चलेंगे। डॉक्टर रॉयचौधरी ने अपने छोटे से चिकित्सा केंद्र में लगभग सारे संसाधन लगा दिए थे, और अनुपमा ने हाल ही में अपनी बेटी से फिर कहा था, “शाहजी के बालिका विद्यालय में एक सीट खाली है, और अगर तुम चाहो तो ज्ञान गोदारी के लक्ष्मीबाई बालिका विद्यालय में भी तुम्हें नौकरी मिल सकती है। याद रखना, तुम्हारे लिए कोई बड़ी विरासत नहीं छोड़ी है। तुम्हारे पिता तुम्हारे लिए सिर्फ़ अपने प्यारे औषधालय की ज़िम्मेदारी ही छोड़ेंगे।”

उसकी माँ बिल्कुल सही थी। उसे कोई पैसा या कोई और कीमती विरासत नहीं मिलने वाली थी। उसके विश्वविद्यालय के प्रमाणपत्र अभी भी उसके सूटकेस के किसी कोने में पड़े होंगे। उसने सोचा, उसने पढ़ाई क्यों की थी? क्या यह सिर्फ़ उच्च शिक्षा पाने की चाहत थी, या भविष्य की अनिश्चितता से बचने के लिए? उसके जैसी ज़्यादातर लड़कियाँ ऐसे सवालों के जवाब नहीं

सोचती थीं। उसके पास भी कोई जवाब नहीं था। कभी-कभी, अब जब वह बिल्कुल अकेली होती थी, और उसके चारों ओर सन्नाटा होता था, तो उसे अपने कानों में एक फुसफुसाहट सुनाई देती थी, “समय एक उड़ते हुए तीर की तरह तेज़ी से गुज़र रहा है। इसका सदुपयोग सोच-समझकर करो, वरना यह उड़ जाएगा और तुम्हें बीते दिनों की उलझी हुई और नुकीली झाड़ियों में पीछे छोड़ देगा!”

वह सोच रही थी कि क्या उसे तिरुमंजन उत्सव का इंतजार करना चाहिए, जब वेंकटेश्वर की मूर्ति पर ढाई मन दूध चढ़ाया जाता है। लेकिन उसके पास काफी समय था। मंदिर की प्राचीन दीवारों से सटी सुरंगों में बच्चे पहले से ही जमा हो रहे थे। वेंकटेश्वर पर चढ़ाया गया दूध उसी रास्ते से झरने की तरह बहेगा और बच्चे उसमें से काफी दूध इकट्ठा कर सकेंगे। भिखारियों की भीड़ भी सबसे अच्छी जगह पाने के लिए धक्का-मुक्की कर रही थी।

सौदामिनी उठी और नदी की ओर चलने लगी, तभी अचानक उसे कलाकार चंद्रभानु राकेश के कार्यस्थल का ख्याल आया। उसने मन ही मन सोचा कि यमुना नदी के रेतीले किनारों पर यूं ही भटकने से बेहतर होगा कि वहां समय बिताया जाए, क्योंकि ये किनारे अव्यवस्थित राधेश्यामियों से भरे रहते थे।

उसने राकेश के कमरे के फर्श पर विदेशी पर्यटकों के एक समूह को बैठे हुए पाया। राकेश के अधीन प्रशिक्षण ले रहा युवक कमरे के एक कोने में बैठा अपने काम में मग्न था। विदेशी पर्यटक उत्साह से भरे हुए थे और उनके मन में कई सवाल थे, जैसे भक्ति आंदोलन में ब्रज का स्थान, राम भक्ति साहित्य में वर्णित मनमोहक और आनंददायक उपासना, औरंगजेब और ब्रज, ब्रज में तुलसीदास और मीराबाई आदि। उनके पास अनगिनत प्रश्न थे!

एक बार मीराबाई ने तुलसीदास से पूछा था, "क्या मैंने अपने पति को छोड़कर पाप नहीं किया?" तुलसीदास ने मीराबाई को प्रसिद्ध उत्तर देते हुए कहा था, “भक्त प्रहलाद ने अपने पिता को, विविशन ने अपने भाई को, भरत ने अपनी माता को और बलि ने अपने गुरु को त्याग दिया। परन्तु इन सबने पुण्य अर्जित किया। तो तुम क्यों सोचती हो कि तुमने पाप किया है?” परन्तु बीसवीं शताब्दी के पंडितों ने तुलसीदास और मीराबाई की इस मुलाकात पर भी संदेह करना शुरू कर दिया है! परन्तु कोई भी विद्वान आज के ऐसे तथाकथित पंडितों की बातों पर विश्वास नहीं करेगा, चाहे वे अपने संदेह के समर्थन में कितनी भी विद्वत्तापूर्ण गवाही क्यों न दें।

एक विदेशी ने कहा, "शायद वह ब्रज पर शोध करना चाहता था।"

“तो फिर हमें किस पर विश्वास करना चाहिए?” दूसरे ने पूछा।

"ब्रज लगभग पूरी तरह से गायत्री, कृष्णगीतावली, बरवोई रामायण और जानकी मंगल जैसे महान काव्य साहित्य के प्रभाव में है।"

लेकिन विदेशी इससे संतुष्ट नहीं थे। वे कई अन्य बातों के बारे में जानने के लिए उत्सुक थे, जैसे कि ईस्ट इंडिया कंपनी के समय का ब्रज, अकबर और ब्रज का इतिहास, धनी और शक्तिशाली जमींदार और ब्रज के साथ उनके संबंध। वे उन धर्मनिष्ठ वेश्याओं की कहानियाँ सुनना चाहते थे जिन्होंने दो सौ साल से भी अधिक समय पहले ब्रज के कुछ मंदिरों और अन्य पवित्र स्थलों के निर्माण में सहायता की थी। वे उनके लगभग लुप्त हो चुके अस्तित्व को पुनः खोजना चाहते थे।

कुछ देर तक आपस में बहस करने के बाद, विदेशी राकेश को छोड़कर खाली बैरलों से बने पुल की ओर चल पड़े। उनमें से अधिकतर नंगे पैर थे, उनके बाल लंबे और बिखरे हुए थे और उनके चेहरे धूप से झुलसे हुए थे। उनकी पीठ पर लटके थैलों में किताबें और कुछ ज़रूरी कपड़े भरे हुए थे। उनके जाने के बाद, सौदामिनी राकेश के पास जाकर खड़ी हो गई।

“मैंने तुम्हें उस कदम के पेड़ के नीचे बैठे देखा था,” उसने कहा। “तुम्हारे आने से पहले वहाँ कुछ मोर नाच रहे थे। जब तुम चमेली की माला पहनकर मंदिरों में घूमती हो, तो तुम एक धर्मपरायण युवती जैसी लगती हो,” उसने बेतुकी बात जारी रखी।

सौदामिनी ने नीचे देखकर कहा, "धन्यवाद। किसी कलाकार से तारीफ मिलना एक दुर्लभ सौभाग्य है।"

राकेश ने घर के अंदर किसी को आवाज़ लगाई, “राधे, चाय लाओ।” ऊपर की मंज़िल पर एक बूढ़ी राधेश्यामिनी ने खिड़की खोली और नीचे देखा। सौदामिनी ने पिछली बार यहाँ आने पर इसी बूढ़ी औरत को देखा था।

जब राकेश अपनी नई पेंटिंग के लिए अपना सामान तैयार कर रहा था, तो उसने उससे पूछा, "तुम ब्रज में और कितने दिन रुकने का इरादा रखती हो?"

सौदामिनी ने कोई जवाब नहीं दिया। भला वो क्या जवाब दे सकती थी? वो खुद अगले दिन क्या करने वाली है, ये नहीं जानती थी। कलाकार ने ध्यान से उसका चेहरा पढ़ने की कोशिश की। ऐसा लग रहा था मानो दोनों एक-दूसरे को परखने की कोशिश कर रहे हों।

फिर उन्होंने कहा, “तुम एक पढ़ी-लिखी लड़की हो। अगर तुम ब्रज को अपना स्थायी घर बनाने की सोच रही हो, तो शाहजी के विद्यालय में शिक्षिका के पद के लिए आवेदन कर सकती हो।”

इस बार भी सौदामिनी की ओर से कोई जवाब नहीं आया। राधेश्याम चाय लेकर आए, और राधिका की मूर्ति बना रहा विद्यार्थी मूर्तिकार भी अपना काम रोककर उनके साथ चाय पीने बैठ गया।

"तो आजकल तुम दो वक्त का भरपेट खाना खा रही हो," सौदामिनी ने टिप्पणी की।

राकेश हँसे। उन्होंने कहा, “दसवीं शताब्दी में कलाओं का अभूतपूर्व पतन हुआ। कलाकार अपनी आजीविका के लिए भीख मांगने को मजबूर हो गए। आज अधिकांश अज्ञात कलाकार भी उसी स्थिति में हैं। उन्हें भीख मांगने के लिए सिंह द्वार के सामने कतार लगानी पड़ती है। आज कोई भी पंद्रहवीं शताब्दी के महमूद बेगरा जैसा नहीं है, जिन्होंने राजस्थानी शैली के कलाकारों का स्वागत किया और अपने खर्च पर उन्हें स्थापित किया। हुमायूँ जैसा भी कोई नहीं है, जो युद्ध के मैदान में भी चित्रों से भरी किताबें ले जाता था! बेशक, कला के एक-दो सच्चे प्रेमी आज भी दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ दिन पहले एक प्रतिष्ठित परिवार की महिला किराए के तांगे में आई। उन्होंने अपना परिचय महाराष्ट्र के प्रसिद्ध राव परिवार की वंशज के रूप में दिया। मैं राव परिवार की कहानी जानता हूँ। उनका ब्रज में एक विशाल उद्यान था, जिसे कदमखंडी कहा जाता था। अब उस उद्यान का कोई नामोनिशान नहीं है। इस महिला को मुगल शैली के दो चित्र चाहिए थे—सिर्फ दो पेंटिंग—इसके बदले में वह अपनी सारी संपत्ति देने को तैयार थीं!”

"आज आप बहुत अच्छे मूड में लग रहे हैं," उनके साथ काम कर रहे युवा मूर्तिकार ने कहा।

“जी हां, बिलकुल,” राकेश ने जवाब दिया। “जब भी मुझे उस महिला की याद आती है, मुझे अच्छा लगता है। उसने कहा था कि वह मेरे बारे में सब कुछ जानती है, कि मैं मुगल शैली का आखिरी प्रतिनिधि हूं। बेचारी महिला को जाहिर तौर पर ईश्वरी प्रसाद की कहानी नहीं पता थी। अभी कुछ ही दिन पहले, एक कलाकार सिंह द्वार के पास आया और बोला, ‘अगर आप मुगल कला शैली के आखिरी प्रतिनिधि को देखना चाहते हैं, तो काशी की उस संकरी गली में जाइए।’”

“दाढ़ी वाला वह बूढ़ा आदमी, थका-हारा और भूखा-प्यासा, गंदी और फटी हुई धोती पहने, दूसरों की बातों की परवाह किए बिना तेज़ी से गली में आगे बढ़ता है। उसे पहचानने का सबसे अच्छा तरीका है उसकी गांधी टोपी और कंधों पर पड़ी साफ चादर। वह सच्चे मुगल शैली के चित्रकारों में से आखिरी है। उमर खय्याम के उसके बेजोड़ चित्रों ने यूरोप के सबसे प्रसिद्ध कलाकारों को भी चकित कर दिया था। और वह चित्रकार आज काशी की सबसे गरीब गलियों में से एक में घोर गरीबी में जी रहा है!”

“उन विदेशियों ने मुझसे कहा कि हमें विद्रोह करना चाहिए। ब्रज में मंदिरों के आसपास और परिक्रमा करते हुए कुपोषित, बीमार, बेसहारा और मरणासन्न लोगों की भीड़ देखकर उन्होंने मुझसे कहा, ‘तुम विद्रोह क्यों नहीं करते?’ अठारहवीं शताब्दी के मध्य में भी ऐसी ही स्थिति थी, जब बादशाही कलाकारों को राजमहल छोड़कर कांगड़ा, नूरपुर, ग्वालियर और ब्रज जैसे स्थानों पर भिक्षापात्र लेकर घूमना पड़ा था। हाँ, उन विदेशियों ने मुझसे आग्रह किया, ‘तुम लोग विद्रोह क्यों नहीं करते?’ क्या आपने मथुरा, उत्तर काशी, कटक, भुवनेश्वर और यहाँ तक कि आगरा जैसे स्थानों से आए छात्रों को देखा है? वे इतने बेफिक्र हैं—जैसे उन्हें कुछ सोचना ही नहीं, कुछ चिंता ही नहीं। और विद्रोह के बारे में क्या? क्या आप जानते हैं, मुझे इन विदेशियों के लिए सचमुच बहुत दुख होता है। उन्होंने पिछली चार रातें मंदिर के प्रांगण में बिताई हैं; और भोजन के लिए वे निर्धन साधुओं की कतारों में खड़े रहे हैं। क्या आपने उन्हें इधर-उधर घूमते नहीं देखा? नंगे पैर? उनके पास जूते नहीं हैं। वे भूखे हैं, उनके कपड़े फटे-पुराने हैं। लेकिन क्या आपने उनकी आँखों पर गौर किया है? हमारे विद्यार्थियों की आँखों में ज्ञान की ऐसी भूख, ऐसी प्यास कभी नहीं दिखती। अगर आपको मेरी बात पर यकीन नहीं है, तो मथुरा के द्वारकाधीश मंदिर के द्वार के पास जाकर खड़े हो जाइए और सड़क पर आते-जाते विद्यार्थियों को देखिए। मैं आपको बता दूं, आप निराश और हताश हो जाएंगे। आप उनकी खाली, सूनी निगाहें, उनकी सूखी, कांस्य रंग की त्वचा देखेंगे। यह असहनीय है! और विद्रोह की ये सारी बातें! पिछले साल, मैं कुछ पैसे कमाने के लिए तंजौर से भुवनेश्वर तक घूमता रहा। यात्रा के दौरान मेरी मुलाकात कई विद्यार्थियों से हुई, और मैंने उनकी आँखों को ध्यान से देखने की कोशिश की, इस उम्मीद में कि शायद मुझे उनमें जीवन की कोई चिंगारी, कहीं कोई रुचि दिखाई दे। लेकिन मुझे वही खाली निगाहें ही दिखाई दीं। सच कहूँ तो, एक बार मैंने वैसी ही रुचि भरी निगाह देखी थी। कटक की गलियों में, दो युवकों की आँखों में। लेकिन वे मजदूर थे, काम की तलाश में बेताब थे। कोई भी काम जिससे उन्हें कुछ कमाई हो सके। उनकी रोजी-रोटी। लेकिन ऐसे युवाओं की आंखों में वो अनोखी चमक बंदरों के गले में मोतियों की तरह होती है, है ना?

कलाकार चंद्रभानु राकेश अपनी ही बातों पर जोर से हंस पड़े। उनकी हंसी से ऐसा लगा मानो

युवा मूर्तिकार जिस अष्टधातु की मूर्ति पर काम कर रहे थे, वह कांप रही हो!
पीपर का तालाब, बैरल से बना पुल, सुबह की धूप में चमक रहा था। मूर्तिकार ने कहा, “आज तुम बहुत समय बाद ऊर्जावान और तरोताज़ा दिख रहे हो। लगता है यह बेचारी औरत तुमसे कुछ कहना चाहती है। लेकिन तुम तो पूरी तरह अपनी ही चतुराई में डूबे हुए हो!”
चंद्रभानु ने कहा, “आज सुबह-सुबह तुम कदम के पेड़ के नीचे आकर बैठ गए। मुझे लगता है तुम्हें मुझसे कुछ पूछना है। क्या बात है?”
इस बीच मूर्तिकार का दिन का काम समाप्त हो चुका था और वह जाने की तैयारी कर रहा था। बूढ़े राधेश्याम ने भी खाली चाय के गिलास समेटे और कमरे से बाहर निकल गया।
राकेश ने कहा, “मैंने सुना है कि डॉ. रॉयचौधरी ने अपनी निस्वार्थ सेवा से ब्रज के लोगों का दिल जीत लिया है। अगर आप चाहें तो आसानी से उनके उत्तराधिकारी बन सकते हैं। क्या आपने कभी इस बारे में सोचा है? ब्रज को उनके जैसे लोगों की ज़रूरत है। आपको भी अपने दुख-दर्द भुलाकर उनके जैसा उदार हृदय बनना चाहिए। और खुद को तैयार कर लें, ताकि ज़रूरत पड़ने पर आप अपने पिता के औषधालय का कार्यभार संभाल सकें।”
ये शब्द सुनकर सौदामिनी का चेहरा पीला पड़ गया। उसने कहा, “अगर मुझमें वो साहस होता, अगर मुझमें वो महानता होती, तो शायद मुझे ऐसी मानसिक पीड़ा और बेचैनी का सामना न करना पड़ता। यकीन मानिए, मैं एक साधारण स्त्री हूँ, साधारण सोच वाली। और मुझे शक है कि भविष्य में भी मैं कुछ कर पाऊँगी। एक साल को छोड़कर, जीवन भर एक अजीब तरह की उदासी और अवसाद ने मेरा पीछा किया है। उस एक छोटे से साल के लिए, मैं उस निराशा, उस असंतोष से बिल्कुल मुक्त थी। वो बेरोक-टोक और आनंदमय बारह महीने आज भी मेरे मन में ताज़ा हैं। मेरी आत्मा और मन मुक्त थे, और मैं स्वतंत्र और बेहद खुश थी! और आज, मुझे देखिए! मैं यहाँ-वहाँ भटक रही हूँ, मंदिर-मंदिर जा रही हूँ, शांति की तलाश में, उस खुशहाल साल की कुछ यादें ताज़ा करने की कोशिश में। लेकिन, दिन उड़ते जा रहे हैं, और मैं यहाँ हूँ—मेरा मन और शरीर दिन-ब-दिन पीला और बदसूरत होता जा रहा है—जैसे पुराने, फीके कपड़ों का ढेर!”
उसने आगे कहा, “एक समय था जब मुझे इधर-उधर घूमना अच्छा लगता था। यकीन मानिए, मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं कई युगों से गुज़र कर इस अनजान जगह पर, एक अपरिचित समय में आ गई हूँ। सब कुछ बदल गया है। मेरी आत्मा का यहाँ किसी भी चीज़ या किसी भी व्यक्ति से कोई संबंध नहीं है। ऊपर वो आकाश है, वो आकाश जिसे देखने से मुझे डर लगता था। बहुत लंबे समय तक मैं आकाश की ओर देखने की हिम्मत नहीं कर पाई। क्या किसी और ने कभी ऐसी स्थिति का सामना किया है? ऐसी स्थिति जब कोई व्यक्ति आकाश की ओर देखने से भी डरता है! आप एक कलाकार हैं, और आप भावनाओं को समझती हैं। यकीन मानिए, मैंने खुद का गहराई से विश्लेषण किया है, और मैं जानती हूँ कि जीवन के प्रति मेरा उत्साह, मेरी भावनाएँ, मेरे जुनून और मेरी इच्छाएँ बिल्कुल नहीं बदली हैं। कुछ दिन पहले मैंने एक युवा जोड़े को देखा। वे परिक्रमा मार्ग पर एक दिमारू के पेड़ के नीचे सो रहे थे। यमुना नदी के पानी में एक अजीब सी गंध थी, मुझे नहीं पता वो कैसी गंध थी, लेकिन वो बिल्कुल भी अच्छी नहीं थी, जैसे किसी जानवर के नए-नए काटे गए मांस की गंध हो। मांस। मेरे साथ कुछ हुआ, पता नहीं क्या। नदी से

आती वो अजीब सी गंध, उस पेड़ के नीचे लेटा हुआ वो जोड़ा... मैं यमुना की रेत पर लेट गई और लोटपोट होने लगी। एक पल में मेरे कपड़े उतर गए। नंगे शरीर पर रेत का स्पर्श बहुत ही अजीब और अनोखा था। मुझे यकीन है कि आप समझ रहे हैं कि मैं क्या कहना चाह रही हूँ। आप समझ ही रहे हैं, उस समय भी मैंने कई सुनहरे सपने देखे थे। सौदामिनी ने कलाकार की ओर देखा और उसके होंठों के कोने सिसकियों से कांपने लगे।

राकेश ने कहा, "मैंने सुना था कि ईसाई युवक आपको सांत्वना दे सकते हैं।"

“सुनो, मैं तुम्हें सच बता रही हूँ,” उसने जवाब दिया। “हाँ, उसने मुझे वह सांत्वना और दिलासा दिया जो कोई और नहीं दे पाया था। मैं राहत और सुकून की तलाश में मंदिर-मंदिर भटकती रहती थी। कुछ भी काम नहीं आया, जब तक मैं उससे नहीं मिली... नहीं, नहीं! यह इतना आसान या सरल नहीं था। कभी-कभी वह सांत्वना पूरी होती थी, बल्कि उससे भी कहीं अधिक। और कभी-कभी मैं फिर से निराशा के अंधकार में डूब जाती थी। यह अजीब था। मुझे बताओ, तुम एक कलाकार हो और तुम समझोगी। क्या कभी किसी और लड़की को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा है? क्या कभी मेरे जैसी कोई इस पवित्र ब्रज भूमि पर आई है?”

राकेश कुछ पल चुप खड़ा रहा। फिर उसने ऊपर देखा और बोला, “मुझे यकीन है कि तुम समझते हो, तुम मेरे मित्र भी हो और शत्रु भी। और तुम मेरे सहयात्री भी हो।”

गर्मी बढ़ती जा रही थी और सूरज की गर्मी तेज होती जा रही थी। मेंढकों के तालाब के कुंड धूप में चमक रहे थे, मानो जंगली भैंसें हों जिनकी पीठ पर सूरज की रोशनी पड़ रही हो। राकेश एक व्यस्त व्यक्ति था। वह जाने के लिए उठी और बोली, “अगर आपको ब्रज में कभी मेरे जैसी कोई मिले, तो कृपया मुझे बता देना। मुझे ऐसी महिलाओं से बहुत सारे सवाल पूछने हैं। यकीन मानिए, मेरे लिए कुछ बातें जानना बहुत जरूरी है।”

इतना कहकर वह चली गई, और रेत पर अपने पदचिह्न छोड़ गई।

एक हरिजन युवती प्रतिदिन आकर बड़े कदम वृक्ष की जड़ों के चारों ओर सीमेंट से बने क्षेत्र की सफाई करती थी। वह रोज़ाना सफाई इसलिए करती थी ताकि कोई लापरवाह संन्यासी आकर उस सुविधाजनक स्थान पर कब्ज़ा न कर ले और कहीं से लाई हुई मूर्ति लेकर वहाँ न बैठ जाए। वह ऐसे तथाकथित संन्यासियों के प्रति हमेशा सतर्क रहती थी। वे ब्रज में जहाँ भी उन्हें उपयुक्त और सुविधाजनक स्थान दिखता था, वहाँ कब्ज़ा करने की कोशिश करते थे, यहाँ तक कि अस्तबलों के पानी के टैंकों के आसपास के सीमेंट से बने क्षेत्रों पर भी। राकेश ने देखा कि आज वह हरिजन युवती सफाई नहीं कर रही थी। इसके बजाय वह वृक्ष के चारों ओर नाचने लगी थी, मानो कोई यंत्रवत वस्तु हो।

यह दृश्य देखकर वह अत्यंत आश्चर्यचकित रह गया और उसे समझ नहीं आ रहा था कि क्या सोचे। उसे याद आया कि इस स्त्री ने रंगाजी के मंदिर में प्रवेश करने और श्री वेंकटेश्वर की प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित करने का प्रयास किया था। लाठियों से लैस सुरक्षाकर्मियों ने उसे खदेड़ दिया था और भीड़ उसके पीछे चिल्लाती हुई दौड़ी थी। वह अछूत थी और उसने पवित्र भगवान वेंकटेश्वर को छूने और पुष्पांजलि अर्पित करने की हिम्मत कैसे की! किसी ने तो उसकी छाती पर ज़ोरदार लात भी मारी थी! बेचारी स्त्री कोच हाउस के द्वार पर औंधे मुंह गिर पड़ी थी। हरिजनों

का यह समूह बहुत समय पहले ताम्रपानी नदी के किनारे से ब्रज आया था। वे तब आए थे जब कुरुक्षेत्र के पार्थसारथी, श्री कृष्ण को राधा और उनकी प्रेममयी गोपियों द्वारा यहाँ लाया गया था और उन्होंने भारतवासियों का दिल जीत लिया था। जी हाँ, ये 'भंगी', ये अछूत, उस सुदूर अतीत में आकर ब्रज में बस गए थे। उन्होंने ब्रज के बाहरी इलाके में कंटीली झाड़ियों और छोटे पौधों के बीच एक ज़मीन के टुकड़े पर अपनी बस्ती बसाई थी। और वे अब भी वहीं रहते हैं, क्योंकि उनकी संख्या बढ़ती गई और उनकी शाखाएँ और उपशाखाएँ भी बढ़ती गईं।

धीरे-धीरे वह स्त्री और भी अधिक जोश से नाचने लगी। उसके बाल खुल गए और उसके वस्त्र उसके स्तनों से फिसल गए। वह गोल-गोल घूमी और ज़मीन पर गिर पड़ी, और नरस मुद्रा, धनु मुद्रा, पद्म मुद्रा आदि विभिन्न मुद्राओं का नृत्य करने लगी। उसने सभी एक सौ साठ मुद्राओं का नृत्य किया। उसके पूर्वज ब्रज की कात्यायनी देवी के भक्त रहे होंगे। कुछ देर बाद वह रुकी और राकेश के यहाँ काम करने वाली राधेश्यामिनी से पानी माँगा। यह सुनकर वह बूढ़ी औरत गुस्से से उछल पड़ी।

“तुम वेश्या की तरह रहती और काम करती हो, और मुझसे पानी मांगने की हिम्मत करती हो! खुद पर काबू रखो, अपने कपड़े ठीक करो, खुद को ठीक से ढको। पुराने जमाने में, तुम जैसी औरतें हवस भरे नौजवान सैनिकों के रहमो-करम पर छोड़ दी जाती थीं!”

बेहद नाराज होकर राकेश ने कहा, "बस करो। चुप रहो और उस महिला को थोड़ा पानी दो और उसे जाने दो।"

महिला को जैसे होश आ गया हो। उसने जल्दी से अपने कपड़े समेटने और खुद को ढकने की कोशिश की।

वह कहाँ थी? उसके साथ क्या हुआ था? क्या वह पौराणिक मीराबाई की तरह समाधि में चली गई थी? ब्रज में एकमात्र पुरुष बांसुरी बजाने वाले भगवान श्री कृष्ण थे। बाकी सब प्रकृति थी।

"लो, अपना पानी ले लो।"

“मान लीजिए,” उस युवती भंगी ने कहा, “मुझे नहीं पता कि मेरे साथ क्या हुआ। मुझे पता ही नहीं था कि मैं आपके सामने लगभग नग्न अवस्था में नाच रही हूँ। कृपया मुझे क्षमा कर दीजिए।”

"क्या आप शादीशुदा हैं?"

नहीं, मैं विधवा हूँ।

“क्या तुम दोबारा शादी नहीं करना चाहती? प्राचीन काल में कहा जाता था, ऋग्वेद में लिखा है, कि विश्वबासु नामक देवता तुम जैसी स्त्रियों को पसंद करते हैं। इस देवता की आराधना और ध्यान किया जाता था। उन्हें बताया गया था कि उन्हें केवल उसी स्त्री की इच्छा करनी चाहिए जिसने अपनी नारीत्व को नहीं खोया हो, जो अपने पिता के घर में रहती हो। यही तुम्हारा भोग है।”

"लो, ये पानी ले लो।"

“मेरे लिए इसे डाल दो। मैं तुम्हारे बर्तन को हाथ नहीं लगाऊंगा।”

"ब्रज में हर कोई जानता है कि मैं जाति आदि में विश्वास नहीं करता। कलाकारों की कोई जाति या धर्म नहीं होता।"

"तो फिर मुझे माफ कर दीजिए।"
वह उठी, लेकिन जैसे ही वह नदी की ओर जाने लगी, उसने कहा, “ठीक है। अपने हाथों को जोड़कर पानी बना लो, मैं तुम्हारे लिए पानी डाल देता हूँ। तुम माझा रोग से पीड़ित लोगों की तरह हो... इसीलिए रामानन्द, जयशी और कबीर जैसे महान पुरुष भी कभी शांत नहीं रह सके।”
राकेश को उस स्त्री को देखकर अजीब सा दुख हुआ जो उसके सामने पानी पीने के लिए हाथ जोड़कर बैठी थी। जी भरकर पानी पीने के बाद उसने अपना चेहरा पोंछा और कृतज्ञता से भरी आवाज में बोली, “आप एक अच्छे और सरल इंसान हैं। ब्रज में ऐसे लोग बहुत कम मिलते हैं।”
“तो तुमने रंगाजी के पुराने नर्तकों के मार्ग का अनुसरण करने का निश्चय कर लिया है। मेरा मतलब है, तुमने तलवार और भगवान को अपना साथी बनाने का फैसला कर लिया है।”
हरिजन युवती मुस्कुराई। “मैं देवी को प्रसन्न करने वाली मुद्राओं में निपुण थी। मैं पूजा के दौरान उंगलियों को आपस में जोड़ने की सभी एक सौ आठ विधियों में निपुण थी। मैं उन सभी का नृत्य अकेले ही करती थी, क्योंकि मुझे मंदिर में प्रवेश करने और देवी को अपने हाथों से माला पहनाने का अधिकार नहीं था। जिस प्रकार गोपी बालिका ब्रजचंद्र को पाने के लिए देवी के चरणों में गिर पड़ी, उसी प्रकार मैं भी अपने पति के कल्याण के लिए उनके चरणों में नतमस्तक हुई। मेरे पति का निधन हो गया। और तब से देवी कात्यायनी ने मुझे आशीर्वाद दिया है, और मुझे मेरे स्वामी ब्रजचंद्र मिल गए हैं। वे ब्रज में प्रसन्न होते हैं। और सुनो, वे मुझमें भी प्रसन्न होते हैं! देखो, मेरे होंठों पर उनके होठों के निशान हैं!”
“क्या वह इससे आनंद लेता है? आपका क्या मतलब है?”
“आपने कुछ देर पहले मुझे भगवान विश्वबासु के बारे में बताया था। एक दिन, अतीला पहाड़ियों पर बैठकर पुराणों की कथाएँ सुनाकर जीविका कमाने वाला एक भक्त भंगी बस्ती में आया। उसने हमें बताया कि प्रेम केवल आँखों को भाने की बात नहीं है। यह भावनाओं और विचारों से भरा होता है। उसने कहा कि पुराणों और वेदों दोनों का अध्ययन करने के बाद उसे यह सत्य प्राप्त हुआ। उसने कहा कि ये दोनों महान ग्रंथ एक ही बात कहते हैं। मेरे पति मुझसे प्रेम करते थे और मुझमें आनंद पाते थे। और अब, गोकुलचंद्र भी उसी प्रकार मुझमें आनंद पाते हैं। इस प्रकार, अपनी सुरक्षा से, उन्होंने मेरे जीवन को सार्थक बना दिया है। अन्यथा, आप ही बताइए, महोदय, मेरे लिए जीवन और मृत्यु में क्या अंतर था?” उसकी आँखों में आँसू भर आए, लेकिन उसके होंठों पर मुस्कान थी। कलाकार के उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना, वह तेजी से शाहजी मंदिर की गली की ओर चल पड़ी।
सूरज बहुत तेज़ हो गया। कुछ विशाल कछुए नदी से बाहर निकले और धीरे-धीरे नदी के किनारे बढ़ने लगे। दूर से एक नाव में विदेशियों का एक समूह दिखाई दिया, जो नदी के दूसरे किनारे की ओर जा रहा था। किसी ने राकेश के कानों में फुसफुसाते हुए कहा, “यही सही समय है। मनुष्य को यह अनमोल जीवन केवल एक बार मिलता है। अभी भी समय है। आगे बढ़ो! और समय बर्बाद मत करो। जाओ, जाओ, हे अमर अमृत के पुत्र!”
राकेश को अचानक क्या हो गया? कुछ ही पल पहले उसने रेत पर सैकड़ों पदचिह्न देखे थे, और अब, एक पल में, हवा का एक झोंका आया और सारे पदचिह्न मिटा दिए। भंगियों, विदेशियों,

राधेश्यामियों और असंख्य भक्तों के पदचिह्न अचानक ऐसे ढक गए मानो किसी मृत शरीर को सफेद चादर से ढक दिया गया हो। राकेश वहीं खड़ा रहा, जैसे स्तब्ध और आहत हो। जाति, रंग या पद के भेदभाव के बिना, भंगी, चमार और ब्राह्मण, सभी एक ही कोमल सफेद चादर से ढके हुए थे।

Thirteen

अंततः शशि किसी जुनूनी व्यक्ति की तरह शेराफी सेठनी की तलाश में जुट गई। जिन राधेश्यामियों के साथ वह रहती थी, उन्होंने उसे गालियां देना शुरू कर दिया था, कहते थे कि वह कच्चे मांस के टुकड़े जैसी है, जो गिद्धों के लिए आसान शिकार है। उन्होंने शशि से कहा कि वे उसे अब और अपने साथ नहीं रख सकते। उसके कपड़े भी लगभग फट चुके थे और उसके लिए सेठनी को ढूंढना और उनसे सुरक्षा मांगना अत्यंत आवश्यक था।

एकादशी का दिन था और रविवार भी। ब्रज में चारों ओर 'जय, राधा रानी जय!' के नारे गूंज रहे थे, ब्रज की साम्राज्ञी राधा का आह्वान किया जा रहा था। बाजार से मंदिर तक तांगा ले जाना लगभग नामुमकिन था। शशि को हराबारी से मंडी जाने में आधा घंटा लग गया, भीड़ इतनी ज्यादा थी! आज वृंदावन की गंदी नालियों से बदबू नहीं आ रही थी। बल्कि, चमेली और इत्र की खुशबू हवा में फैली हुई थी।

सड़कों पर पांडाओं के समूह भरे हुए थे। आज उन्होंने अपने ऊपरी शरीर पर बेदाग सफेद उत्तरीय वस्त्र पहने हुए थे और गले में चमेली की मालाएं लपेटी हुई थीं। शशि अतीला पहाड़ियों की ओर गई और उसने देखा कि वहाँ जमा हुए अधिकांश पांडाओं ने पुराने धोती और गंदे फटे हुए बनियान पहने हुए थे। उनके उत्तरीय वस्त्र भी पुराने और फटे हुए थे। इन पुजारियों ने कभी भी धर्म के दिखावे या चापलूसी से तीर्थयात्रियों को आकर्षित करने की कोशिश नहीं की थी, इसलिए उन्हें अपनी रोजी-रोटी कमाना दिन-प्रतिदिन कठिन होता जा रहा था। फिर भी, उनमें गोपालजी उपाध्याय और सेठ बिशन सिंह सिंधु जैसे महान विद्वान भी थे। ये वे लोग थे जो अपने कर्तव्यों को एक प्रकार की पूजा मानते थे, जो भोले-भाले तीर्थयात्रियों का शोषण करना और उनसे जितना हो सके उतना धन वसूलना पाप समझते थे—ऐसा पाप जो गाय की हत्या करने या गुरु की पत्नी के साथ दुर्व्यवहार करने जितना ही भयानक था। आजकल अतीला में ऐसे पांडा कम ही देखने को मिलते हैं। वे झूलन बोन, गहबर बोन या मौनी बाबा के आश्रम के आसपास के छोटे बाज़ारों में पाए जाते थे। लेकिन आज शशि ने उन्हें अतीला पहाड़ियों पर देखा।

वे नंगे पैर थे। दीवान लालाजी के ज़माने में, ईस्ट इंडिया कंपनी के समय में, ऐसे पांडा लोग सोने के धागे से कढ़ाई किए हुए नागरी के जूते और रत्नों से जड़ी अंगूठियाँ पहनते थे। शायद उन गौरवशाली बीते दिनों का खून आज भी उनकी रगों में बहता था और कौन जानता है, शायद किसी दिन, दुख से उनका खून खौल उठे! वह दिन शायद ज़्यादा दूर नहीं था।

शेराफी सेठनी वहां मौजूद नहीं थीं। ऐसी अफवाह थी कि निःसंतान सेठनी, जिन्होंने वास्तव में पुत्र प्राप्ति के लिए ही अपनी सारी साधना और पूजा-अर्चना शुरू की थी, उनकी इच्छा पूरी हो गई थी। कहा जाता था कि इसी कारण उन्होंने कपूरथला के संन्यासी के साथ एक महीना बिताया था। शायद यह बात थोड़ी बढ़ा-चढ़ाकर कही गई हो, लेकिन यह सच था कि कपूरथला के संन्यासी ने

कई निःसंतान महिलाओं को संतान प्राप्ति का आशीर्वाद दिया था।

शशि को चक्कर आने लगे। वह रामनरेती सड़क पर थोड़ा और आगे बढ़ी। धर्मशाला लोगों से खचाखच भरी थी, भगवा वस्त्र पहने विभिन्न धार्मिक समूहों के साधु दिखाई दे रहे थे, जो निस्वार्थता और अहिंसा के प्रति समर्पित थे। इनमें श्री राम के उपासक लालदासी संप्रदाय, परमेश्वर की पूजा करने वाले सत्यनामी समूह, निराकार ब्रह्मा को समर्पित शिव-नारायणी संप्रदाय और केवल श्री कृष्ण की पूजा करने वाले गरीबदास शामिल थे। इन सभी संप्रदायों और ऐसे ही कई अन्य संप्रदायों के अनुयायी ब्रज के इस सुनसान इलाके में उमड़ रहे थे। शशि ने अपनी जवानी का अधिकांश समय ब्रज में ही बिताया था, और अपनी तमाम कठिनाइयों, पीड़ाओं और दुखों के बावजूद, उसे ऐसा महसूस हो रहा था मानो एक मजबूत लेकिन कोमल रेशमी धागा उसे तन और मन से इस स्थान से बांधे हुए हो।

उसे लगा कि अब उसे और आगे जाने की कोई ज़रूरत नहीं है। सेठनी यहाँ नहीं थी। वह सोच रही थी कि क्या उसे फिर से रंगाजी के पास जाना चाहिए। इसी बीच, सूरज और तेज़ हो गया था और उसकी कोमल किरणें हर चीज़ को छू रही थीं, जिससे केलिकडम में अपने बच्चों के साथ बैठी मोरनी के शरीर पर एक सुंदर सुनहरा रंग चढ़ रहा था। युवा बालब्रह्मचारी के प्रति उसके बढ़ते प्रेम ने उसे भी बदल दिया था। वह निडर हो गई थी और साथ ही जीवन के प्रति उसके मन में एक अजीब सी जिज्ञासा जाग उठी थी... उसने सिंहद्वार के पास भी वैसी ही विशाल भीड़ देखी।

एक शिक्षित, चश्मा पहने राधेश्यामिनी द्वार पर खड़ी थी। वह शशि के पास आई और बोली, "महादेव पंडित का मुकदमा आज चलेगा।"

“कौन सा मुकदमा?” शशि ने पूछा। “मैंने हमेशा सुना है कि वह बहुत ही धर्मनिष्ठ और नेक इंसान हैं। उन्होंने आखिर कौन सा पाप किया होगा?”

“नहीं, उन्होंने कोई पाप नहीं किया है। वे कुछ समय से मानसिक रूप से विक्षिप्त हैं। शास्त्रीजी का पुत्र गुरुकुल से स्नातक होने के बाद से ही बेकार बैठा है, उसके पास कोई काम नहीं है और शास्त्रीजी महादेव पंडित की इस मानसिक विक्षिप्तता का फायदा उठाने की कोशिश कर रहे हैं। शास्त्रीजी कौवे जैसी दृढ़ता और सारस जैसा धैर्य रखते हैं। वे ही महादेव पंडित की मानसिक स्थिति को बढ़ा-चढ़ाकर बता रहे हैं कि वे पागल हैं। वे कह रहे हैं कि उन्होंने पंडित को घोड़े का गोबर खाते देखा है, ठीक वैसे ही जैसे साधु लालाजी, जिन्होंने अपनी सारी भौतिक संपत्ति और जमींदारी का पद त्याग दिया था, खाया करते थे। और वे यह भी कह रहे हैं कि उन्होंने स्वयं पंडित को लीलाबाबा की रसमोंदली बजाने वाले बूढ़े पखावची से यह कहते हुए सुना है—‘तुमने अपना पूरा जीवन भगवान कृष्ण के लिए यह वाद्ययंत्र बजाते हुए बिताया है। लेकिन क्या तुम एक दिन भी भरपेट भोजन कर पाते हो? जाओ और अपना वाद्ययंत्र भगवान मुरलीधर के सिर पर पटक दो और उसे टुकड़े-टुकड़े कर दो।’ और दिन भर वाद्ययंत्र बजाते खड़े उस बूढ़े व्यक्ति के पास जाकर पंडित चिल्लाए, ‘एक दिन तुम सब ब्रज की किसी तंग गली में खून की उल्टी करते हुए मर जाओ! क्या तुमने ध्यान नहीं दिया कि तुम्हारे बेचारे पैर कैसे कांप रहे हैं? तुम सब किस बात से डर रहे हो? जाओ, जाओ और मुरलीधर को चढ़ाया गया सारा प्रसाद छीन लो और जी

भर के खाओ। क्या तुम्हें नहीं पता, मूर्खों, कि तुम्हारा मुरलीधर हजारों सालों से तुम्हारा खून चूस रहा है और तुम जैसे लोगों पर हंस रहा है?' शास्त्री बेचारे पंडित के बारे में ऐसी अफवाहें फैला रहे हैं...।"

जब वह बोल रही थीं, तो वृद्ध और शिक्षित राधेश्यामिनी की आँखों में आँसू भर आए। वे दोनों गजेंद्रमुख कुंड की ओर साथ-साथ चलने लगीं। परीक्षण स्थल, एक विशाल छतरीनुमा संरचना, जो सामान्य असोमिया बात सोरा या मुख्य द्वार के समान थी, इस पवित्र कुंड के सामने स्थित थी। स्वामीजी महाराज अक्सर इस छतरी के नीचे बैठकर रामायण, पुराण जैसे पवित्र ग्रंथों और रामानुज, रामानंद स्वामी आदि महान आत्माओं पर प्रवचन देते थे। छतरी की दीवार पर चंद्रभानु राकेश द्वारा बनाया गया एक विशाल तेल चित्र था, जिसमें अयोध्या के लोगों को भरत के साथ श्री राम को वापस बुलाने जाते हुए दर्शाया गया था। शोकग्रस्त प्रजाजनों के इस विशाल जुलूस के केंद्र में भरत थे—एक ऐसा भरत जिनके सिर पर राजसी चिन्हों का कोई निशान नहीं था, उनके सिर पर कोई भव्य छतरी नहीं थी, और उनके शरीर पर कोई राजसी आभूषण नहीं थे। उसके कोमल नंगे पैर छालों और अन्य घावों से चमक रहे थे, मानो वह कड़ी मेहनत करके आया हो... चंद्रभानु राकेश के अलावा और कौन इस तरह के दिव्य भाईचारे और भक्ति के दृश्य को चित्रित कर सकता था?

शशि और पढ़ी-लिखी महिला अंदर गईं। लकड़ी की एक पटिया पर कुछ शब्द लिखे थे जिनसे पता चला कि भोग शुरू हो गया है और मंदिर बंद है। लेकिन छतरी लोगों से खचाखच भरी हुई थी। महादेव पंडित का मुकदमा शुरू हो चुका था और रंगाजी के स्वामी न्यायाधीश की कुर्सी पर बैठे थे।

"परीक्षण छतरी की सीढ़ियों पर बैठी उस महिला को देखिए? वह महादेव पंडित की पत्नी हैं। क्या आप समझ सकते हैं कि पांच बच्चों के पिता के लिए अपनी नौकरी खोना कितना भयानक होता है?"

शशि की ओर देखते हुए उसने आगे कहा, "तुम इतनी चुप क्यों हो?"

शशि ने जवाब दिया, "पांच बच्चों के पिता को अपनी नौकरी खोते हुए देखना मुझे अच्छा नहीं लगता।"

"अब केवल न्यायाधीश द्वारा फैसला सुनाए जाने का ही इंतजार है। बाकी सब कुछ हो चुका है," राधेश्याम ने कहा।

शशि का खून खौल उठा। जिस व्यक्ति से वह प्यार करती थी, वही ऊपर बैठकर एक अभागे और असहाय व्यक्ति का फैसला कर रहा था! जहाँ वह खड़ी थी, वहाँ से अत्यंत बुद्धिमान और गरिमामय स्वामीजी स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे थे। वह क्या फैसला सुनाएंगे, उसने सोचा। उस बेचारे आदमी के लिए वे क्या नियति तय करेंगे? शशि बेचैन हो गई।

मंदिर के द्वार खुलने और रघुनाथ स्वामीजी के जुलूस द्वारा पवित्र गरुड़ स्तंभ की परिक्रमा शुरू होने से पहले परीक्षा समाप्त होनी थी। सभी की निगाहें उत्सुकता से स्वामीजी पर टिकी थीं। लेकिन स्वामीजी की आकर्षक आंखें दूर क्षितिज पर टिकी थीं, और चंदन से सुशोभित उनका माथा एकाग्रता और गहन चिंतन से तना हुआ था।

कुछ देर बाद स्वामीजी ने गहरी और भावुक आवाज में बोलना शुरू किया, “इस व्यक्ति ने पिछले बीस वर्षों से अत्यंत श्रद्धापूर्वक मंदिर विद्यालय की सेवा की है। अब उनकी स्थिति ऐसी है कि उनके लिए यह कार्य जारी रखना संभव नहीं है। इतने वर्षों तक मंदिर के प्रति उन्होंने जो भक्ति और कर्तव्यनिष्ठा दिखाई है, वह सभी के लिए एक उदाहरण है। इन गुणों को देखते हुए मंदिर अधिकारी उनके उपचार का दायित्व लेंगे। इतना ही नहीं, वे उनके पाँच बच्चों की देखभाल का भी दायित्व संभालेंगे। उन्हें पवित्र गरुड़ स्तंभ के आसपास के क्षेत्र को साफ-सुथरा रखने का अत्यंत प्रतिष्ठित कार्य सौंपा गया था। अब यह कार्य उनकी पत्नी को दिया जाएगा, और इसके लिए मंदिर अधिकारी यह सुनिश्चित करेंगे कि उन्हें नियमित रूप से दिन में दो बार मंदिर का प्रसाद मिले। फिलहाल हम शिक्षक की नियुक्ति के संबंध में कोई निर्णय नहीं लेंगे, क्योंकि मथुरा और अयोध्या के टोलों, संस्कृत विद्यालयों से अपनी पढ़ाई पूरी कर चुके कई बेरोजगार युवा हैं, जो रंगाजी विद्यालय में आने के इच्छुक हैं। इस महत्वपूर्ण मामले में कोई भी निर्णय लेने से पहले हमें गहन विचार-विमर्श करना होगा।”

स्वामीजी के बोलते ही शांत भीड़ में हल्की फुसफुसाहट गूंज उठी। पास में ही बैठे बनमहाराज संस्थान के विद्यार्थियों ने उत्साह से चिल्लाकर कहा, “जय, गरुड़ महाराज स्वामी, जय!” और पास ही घास पर बैठे ब्रजमाई समूह ने भी जोर से कहा, “जय, राधारानी जय!”

इसी बीच मंदिर के द्वार खुल गए और रंगाजी के पवित्र श्रृंगार के समापन का संकेत देते हुए शहनाई की ध्वनि मंदिर से बाहर आने लगी। गरुड़ स्वामीजी श्रद्धापूर्वक उपस्थित भीड़ को चीरते हुए मंदिर की ओर बढ़े।

शशि मुकदमे की जगह के पास एक विशाल स्मारक के नीचे खड़ी होकर ध्यान से सुन रही थी। वह स्वामीजी के शब्दों में इतनी मग्न थी कि उसे पता ही नहीं चला कि कब वह विद्वान राधेश्याम उसके पास से चले गए। अब वह गर्व से सोच रही थी कि यही वह व्यक्ति है जिससे वह प्यार करती है! वह बिल्कुल यही चाहती थी कि वह ऐसा हो। उसकी आँखों में अनायास ही आँसू भर आए। और वह मन ही मन बुदबुदाई, “हे ईश्वर, आप सदा ऐसे ही रहें, आपमें हमेशा दूसरों के दुखों को समझने और उनके हृदय की गहराई तक पहुँचने की गहरी मानवीय सहानुभूति बनी रहे!”

जैसे किसी टूटे हुए बांध से पानी बह निकलता है, वैसे ही भक्तों की विशाल भीड़ रंगाजी के घुड़सवारों के पीछे उमड़ पड़ी! ये घुड़सवार मंदिर परिसर के बगीचों का चक्कर लगा रहे थे। शशि के लिए वहां खड़े रहना अब संभव नहीं था। यहां तक कि मंदिर की रक्षा कर रहा सिपाही भी अपनी चौकी छोड़कर यह नजारा देखने के लिए दौड़ पड़ा था।

वह गरुड़ कुंड की सीढ़ियों की ओर चली और तालाब के पास काफी देर तक खड़ी रही। वह खुद से हैरान थी—आखिर वह यहाँ क्यों आई थी? अब इस जगह पर उसका कोई काम नहीं था। फिर वह यहाँ क्यों खड़ी थी? या क्या वह सीढ़ियों पर नाचते मोर को देखने आई थी? लेकिन नहीं, अब उसे ऐसी बातों में कोई दिलचस्पी नहीं थी। लेकिन बहाने क्यों बनाएँ? वह अच्छी तरह जानती थी कि वह इस जगह पर सिर्फ इसलिए इंतज़ार कर रही थी क्योंकि उसे उम्मीद थी कि स्वामीजी यहाँ से गुजरेंगे। अपराधबोध ने उसे घेर लिया। लेकिन वह बेबस थी...

उस रात राधेश्यामियों ने उसे फिर याद दिलाया, “ये बुरे दिन हैं। जाओ और रहने के लिए कोई सुरक्षित और स्थायी जगह ढूंढो। अब तुम्हारे लिए यहाँ रहना सुरक्षित नहीं है।”

उस रात वह बहुत कम सोई, और जब सोई तो उसे अजीबोगरीब, असंबद्ध सपने आते रहे। उसने हनुमान जी की प्राचीन प्रतिमा के पास अक्रूर घाट में एक भयानक आकृति को घूमते हुए देखा, जहाँ श्री कृष्ण और बलराम के रथ के अवशेष बिखरे पड़े थे। अपशगुन की यह धुंधली आकृति स्वामीजी दिगंबरी के अखाड़े और माधवाहरी संप्रदाय के बलभद्र अखाड़े के चारों ओर घूमती रही, और अंत में रामनरेती के खंडहर हो चुके बौद्ध बिहार के पास आकर खड़ी हो गई।

उस धुंधली आकृति का चेहरा देखकर वह दंग रह गई! यह शेराफी सेठनी का चेहरा था, जिसे वह दिन भर से ढूंढ रही थी! शेराफी सेठनी ने तिरस्कार भरे स्वर में उस पर चिल्लाते हुए कहा, “मैं स्वामीजी के साथ बीस दिन रही, और अब मैं गर्भवती हूँ। लेकिन मैं इस तरह क्यों भटक रही हूँ? मुझे कहीं भी शांति क्यों नहीं मिल रही?”

फिर शशि की ओर उंगली करते हुए वह चिल्लाई, “जाओ, चले जाओ, अभी भी समय है! अपने हृदय में एक मंदिर बना लो। बहुत दर्द है, बहुत दर्द! इसे कोई और नहीं समझ सकता।”

फिर वह आकृति कंटीली झाड़ियों के बीच गायब हो गई...

वह एक कर्कश चीख के साथ जाग उठी। उसे लगा कि कोई उसके दरवाजे पर दस्तक दे रहा है, इसलिए वह घबराकर उठ बैठी और कुछ देर तक सुनती रही। लेकिन वहाँ कोई नहीं था।

उसे याद आया कि एक बार उत्तर काशी के एक छात्र ने कहा था, “ऋक् ने घोषणा की है कि यद्यपि किसी दूसरे पुरुष से संतान उत्पन्न करना असभ्य है, पर पाप नहीं है। केवल असत्य बोलना ही पाप है।”

मनु, पाराशर, बृहस्पति और अन्य जैसे धार्मिक व्यक्तित्वों द्वारा हज़ार वर्ष पूर्व स्थापित वे सभी नियम और रीति-रिवाज समय की धूल में दब गए हैं। लेकिन सत्य सदा अपरिवर्तित रहा है, और न तो ऋग्वेद, न मनु, न पाराशर और न ही कोई अन्य सत्य को प्रभावित या परिवर्तित कर सका है। शायद इसीलिए उसने बौद्ध बिहार के खंडहरों में शेराफी सेठनी की धुंधली आकृति को विचरण करते देखा।

नहीं, इस सन्नाटे में कोई आवाज़ नहीं थी। झोपड़ी के फर्श पर सो रही राधेश्यामियों के खर्राटे भी उसे सुनाई नहीं दे रहे थे। लेकिन अब उसे नींद नहीं आ रही थी। उसने इस पवित्र ब्रजधाम में बहुत सी अजीबोगरीब चीजें देखी थीं। मृणालिनी भी इन दिनों उसकी तरह ही भोजन की तलाश में सत्रों में घूम रही थी। वह मिट्टी के बर्तन लेकर रंगाजी मंदिर में तिरुमंजन अनुष्ठान के दौरान दूध लेने के लिए खड़ी रहती थी।

सचमुच, जब से वह पहली बार ब्रज आई थी, तब से ब्रज में बहुत परिवर्तन हो चुके थे। अचानक उसे एक बुलंद आवाज में घोषणा सुनाई दी जिसने उसके विचारों को विराम दे दिया। एक दिन, परीक्षा स्थल की सीढ़ियों पर बैठे हुए, उसने रंगाजी मंदिर के स्वामीजी को यह कहते हुए सुना था: ब्रजधाम में आनंदमयी प्रेम लीलाओं में लिप्त रहने वाले वह कृष्ण कौन थे? ब्रह्मपुराण कहता है कि वे देवताओं के अवतार थे। और स्वयं वासुदेव ने कहा कि वे सच्चे परम पुरुष थे, जबकि कुरुक्षेत्र काव्य के रचयिता ने कहा: वे महेश्वर हैं, परम पुरुष का सजीव रूप हैं।

कितनी सारी अनमोल और मूल्यवान कहानियां और कहावतें!

अचानक वह घबराकर उठ बैठी। इस बार सचमुच कोई उसके दरवाजे पर दस्तक दे रहा था। वह अपने विचारों में इतनी मग्न थी कि उसे बाकी सब कुछ पता ही नहीं चला, उसे कोई आवाज सुनाई ही नहीं दी! अब उसने चारों ओर देखा और पाया कि राधेश्यामियों को उससे थोड़ी दूरी पर सोते हुए देखा। फिर से किसी ने दरवाजे पर जोर से दस्तक दी।

उसने सावधानी से दरवाजा खोला और देखा कि दो राधेश्यामियाँ वहाँ खड़ी थीं, जिनके सिर और शरीर उनके उत्तरीय वस्त्रों से ढके हुए थे। जैसे ही उसने दरवाजा खोला, वे अंदर चली गईं।

उनमें से एक ने कहा, "हमारे पास आपके लिए एक बुरी खबर है। आलमगढ़ी मर चुका है।"

"आलमगढ़ी मर गया? कैसे? क्या हुआ?" शशि चिल्लाई।

"उसे हैजा हो गया था," उन्होंने जवाब दिया। "उसने हमें आपको बताने नहीं दिया। बेचारे को लगा कि वह ठीक हो जाएगा। आइए, हमारे साथ आइए।"

घाट के पास काफी भीड़ जमा थी। आलमगढ़ी लंबे समय से ब्रज में रह रहे थे और उनके कई मित्र और परिचित थे। शशि के प्रवेश करते ही सबने ऊपर देखा, मानो वे उनका ही इंतजार कर रहे हों। एक बूढ़ी औरत आलमगढ़ी के चरणों में बैठकर रो रही थी। संभवतः वह पुजारी की आध्यात्मिक बहन थीं।

एक राधेश्याम शव को दाह संस्कार के लिए तैयार करने में व्यस्त थे। पुजारी ने अपने दिन फीकी पुरानी धोती पहनकर बिताए थे। आज वे नए वस्त्र पहनेंगे, पवित्र माला की नई माला, चंदन का लेप और राधाबर्ग की पवित्र रेत उनके माथे को सुशोभित करेगी।

अचानक रोती हुई महिला ने शशि की ओर देखा और उसका चेहरा गुस्से से लाल हो गया। वह सब से चिल्लाते हुए बोली, "बहनों, आप सब ब्रज में रहती हैं। आलमगढ़ी ने अपने घर के कामों के लिए एक युवती को रखा है। लेकिन बताइए, क्या इसका मतलब यह है कि वह उसकी संपत्ति की वारिस है?"

शव को तैयार कर रहे राधेश्याम ने कहा, "मैं तीस वर्षों से अधिक समय से ब्रज में रह रहा हूँ, और अन्याय होते देख मैं चुप नहीं रह सकता, न ही आँखें मूंद सकता हूँ। मरने से ठीक पहले आलमगढ़ी ने कहा था कि पुराने सिक्कों का गट्ठा इस युवती को दे दिया जाए। मैं आपको वही बता रहा हूँ जो मैंने उसे कहते सुना।"

यह सुनकर आलमगढ़ी की मंदिर की नन फूट-फूटकर रोने लगीं। वह बार-बार रोना बंद करके अपशब्दों से चिल्लाने लगीं, "मुझे शक था कि मैं ऐसे ही किसी जाल में फंस जाऊंगी। वह तो एक हिजड़ा था। वह मुझे अपना वारिस कैसे बना सकता है?"

इसी बीच, वहाँ जमा हुई राधेश्यामियों के दो गुट बन गए और अंततः वे आपस में भिड़ गईं। आलमगढ़ी के शव को सजाने के लिए लाई गई चंदन की लेप, पवित्र रेत और चमेली की मालाएँ ज़मीन पर बिखर गईं। जब यह सब शोर-शराबा और गाली-गलौज चल रही थी, तभी एक महिला बाहर गई और केसीघाट के पुजारी को अंदर ले आई, जो आलमगढ़ी की अंतिम यात्रा के लिए फूलों से सजी चारपाई तैयार कर रहे थे। इस हट्टे-कट्टे पुजारी को देखकर झगड़ रही महिलाएँ शांत हो गईं और अपने बिखरे हुए कपड़े समेट लिए। केसीघाट के पुजारी ने चारों ओर देखा। उन्होंने

राधेश्यामियों, झोपड़ी की पुरानी टूटी-फूटी दीवारों और बिखरी हुई चमेली की मालाओं को देखा और कुछ देर तक चुपचाप खड़े रहे। फिर उन्होंने आलमगढ़ी के मृत शरीर को देखा और कुछ क्षण मौन रहने के बाद बोले, "मेरी बहनों, अब समय आ गया है कि तुम स्वयं को देखो, क्योंकि तुमने वृक्ष काट दिया है और सूखी डालियों को पानी देना शुरू कर दिया है। जाओ, जाओ, एक दर्पण लो और स्वयं को देखो! ध्यान से देखो और सुनो, और तुममें से प्रत्येक को हँसी सुनाई देगी। तुममें से प्रत्येक को कमल पर बैठे हुए, तुम पर उपहास करते हुए हँसते हुए सुनाई देगा। देखो, मेरी बहनों, देखो! क्या ये आभूषण, ये नए वस्त्र, चंदन का लेप और चमेली की मालाएँ आलमगढ़ी के शरीर पर हास्यास्पद नहीं लग रही हैं? और तुम सब सिक्कों के एक छोटे से बंडल के लिए लड़ रही हो! आओ, मुझे बंडल दो। यदि पंचायत को बैठना है, तो तुममें से किसी को एक छोटा सा सिक्का भी नहीं दिखाई देगा।"

आलमगढ़ी की मंदिर की बहन एक बार फिर फूट-फूटकर रोने लगी। उसने कहा, "मेरी कहानी सुनो। मैं लंबे समय तक घोड़ों को खिलाने के लिए रखे आलू खाती रही, और इस तरह मैंने अपने अंतिम संस्कार और अंत्येष्टि के लिए अच्छी खासी रकम जमा कर ली थी। लेकिन एक दिन कोई आया और पैसे चुरा ले गया। मेरी झोपड़ी मेरे सिर पर गिर पड़ी। जब सेठनी को पता चला कि मेरे पास अंतिम संस्कार के लिए पैसे नहीं हैं, तो उसने एक दिन मुझ पर कुत्ते छोड़ दिए। बेचारी आलमगढ़ी मुझसे कहा करती थी, 'तुम मुझसे बहुत बड़ी हो, इसलिए तुम मुझसे पहले मरोगी। मैं यह सुनिश्चित करूंगी कि तुम्हारे शव को चमेली के फूलों से सजी चारपाई पर ले जाया जाए।'" बूढ़ी औरत आलमगढ़ी जिस चारपाई पर लेटी थी, उस पर अपना सिर पटकने लगी और फूट-फूटकर रोने लगी।

शशि थोड़ी दूरी पर खड़ी सब कुछ सुन रही थी। अब वह आगे बढ़ी। उसकी आँखों में आँसू नहीं थे, लेकिन उसके बाल खुल कर कंधों पर बिखर गए थे। उसने कहा, "मुझे आलमगढ़ी का पैसा नहीं चाहिए। मैं तो बस उसे आखिरी बार देखने आई हूँ।"

एक पल भी बर्बाद किए बिना वह बाहर निकली और यमुना नदी के किनारे रेत पर बेतरतीब ढंग से चलने लगी। यह अविश्वसनीय था कि एक ही दिन में सब कुछ कैसे खत्म हो सकता है! अब जाकर उसे एहसास हुआ कि आलमगढ़ी उसके लिए शक्ति का स्रोत रहा है, भले ही अवचेतन रूप से।

उसे पता ही नहीं था कि वह कितनी देर तक वहाँ बैठी रही। उसे याद आया, कुछ देर पहले पीले गले वाला बड़ा पक्षी उसके पास खेल रहा था। अब वह जगह खाली थी, बस एक परछाई थी। कुछ राधेश्याम आए थे और उसे रोने के ज़रिए सांत्वना और मुक्ति पाने की सलाह देकर चले गए थे। उनमें से एक ने उसके गले में लटकी माला छीनने की कोशिश की थी...

उसे किसी के आने का आभास हुआ और उसने ऊपर देखा। उसने डॉ. रॉयचौधरी को आते हुए देखा। संभवतः वे परिक्रमा मार्ग पर मरीजों को देखने गए थे।

"तुम अभी भी यहीं बैठी हो?" उसने हैरानी से पूछा। "मैंने तुम्हें चार घंटे पहले यहाँ से गुजरते हुए देखा था। उठो। मुझे पता है तुम बहादुर लड़की हो। कम से कम मुझे पूरा भरोसा है कि तुम एक कछुए के लिए एक अनमोल रत्न को खोने को तैयार नहीं होगी। चलो।"

पराजित आँखों से डॉ. रॉयचौधरी की ओर देखते हुए, वह रो पड़ी और उनके घुटनों को पकड़ने की कोशिश की।

“आप ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति हैं जो मुझे सही रास्ता दिखा सकते हैं,” वह रोते हुए बोली। “कृपया मेरी बात पर विश्वास कीजिए, मैं डरने लगी हूँ। मैं एक स्वस्थ और स्वच्छ जीवन जीना चाहती हूँ। मैं आपको वचन देती हूँ...” उसकी आवाज़ भावनाओं से भर गई। और, अपने घुटनों के बीच सिर रखकर, वह हताशा में रोने लगी।

इसी बीच यमुना नदी के किनारे आलमगढ़ी के अंतिम संस्कार की रस्में शुरू हो चुकी थीं और इस पवित्र नदी का जल उनके पार्थिव शरीर पर छिड़का जा रहा था। केसीघाट के पुजारी शव पर प्रार्थना कर रहे थे।

शशि को कुछ भी नहीं करना पड़ा। उसे जले हुए शरीर से राख और हड्डियों के टुकड़े, अस्थि भी इकट्ठा नहीं करनी पड़ी। आलमगढ़ी की मंदिर की बहन ने यह सब किया। राधेश्यामियाँ नदी में स्नान करके बहुत पहले ही जा चुकी थीं, और शशि वहाँ अकेली बैठी थी।

केसीघाट के पुजारी उसके पास आए और बोले, “घर जाओ। और सुनो। यह न केवल शर्मनाक है, बल्कि दुखद भी है कि तुम्हारे जैसी लड़की रोटी के एक टुकड़े के लिए मंदिरों में भटकती रहे, या बूढ़े राधेश्यामियों के साथ झोपड़ी में अपना जीवन व्यतीत करे। ऊपर देखो और साहसी बनो। तुम्हारा लंबा जीवन तुम्हारे सामने है। डॉ. रॉयचौधरी चाहते हैं कि तुम नर्स बनने का प्रशिक्षण लो।”

वह चिल्लाई, “एक नर्स! एक नर्स!!”

इससे पहले कि वह कुछ कह पाती, पूरा इलाका "जय, राधारानी जय!" के उल्लासपूर्ण नारों से गूंज उठा। पुजारी अलमगरी के जले हुए शरीर के पास गए और जाने से पहले उन्होंने एक बार फिर उनसे कहा, "आज तुम वास्तविकता से रूबरू हो गई हो। यही तुम्हारे लिए निर्णय लेने का सबसे अच्छा समय है..."

आलमगढ़ी की अस्थियां नदी में बह गईं और एक छोटे से भंवर के पास जमा हो गईं। फिर प्रकृति के नियमानुसार, अस्थियां नदी के प्रवाह के साथ बहती चली गईं और विलीन हो गईं... इस प्रकार, एक ही क्षण में बलवान आलमगढ़ी का जीवन समाप्त हो गया, और हवा का एक झोंका ही उस महान नदी की विशाल गहराइयों में उनके नश्वर अवशेषों को पूरी तरह से समाहित करने के लिए पर्याप्त था। यहां तक कि उनके नश्वर अवशेष भी यमुना नदी की विशाल और निर्मम रेत में विलीन हो गए।

शशि ने नदी में स्नान किया और भीगे हुए कपड़ों में ही धीर समीर घाट की ओर चल पड़ी। रास्ते में एक बूढ़ी औरत उससे मिली और बोली, “मुझे नहीं लगता कि राधेश्यामियों को अब और तुम्हारे साथ रहने की इच्छा है। आलमगढ़ी की मृत्यु की खबर फैल चुकी है और वे पहलवान जो हमेशा शरीर बनाने में लगे रहते हैं, उन्होंने आज सुबह से ही नशा करना शुरू कर दिया है। मैंने उन्हें गोपीनाथ बाजार में पंडाल बनाते देखा। मुझे लगता है कि आज वहाँ जो संगीत संध्या है, उसका समय हो गया है। हालात अच्छे नहीं हैं। मथुरा से आए गुंडों का एक गिरोह इधर-उधर घूम रहा है।”

बुढ़िया सही कह रही थी। शशि जैसे ही राधेश्यामियों की झोपड़ी में पहुँची, वे उस पर चिल्लाने लगे, "तुम फिर यहाँ आकर हमें क्यों परेशान कर रही हो? हम तुम्हारे जैसी जवान औरत की ज़िम्मेदारी नहीं उठा सकते। हमारे अंतिम संस्कार के पैसे हमारी कमर से बंधे हैं, और हम उन्हें खोने का जोखिम नहीं उठा सकते। अथखंबर स्थित मानब सेवाश्रम (गरीबों के लिए एक धर्मार्थ संस्था) जाओ, या फिर डॉक्टर रॉयचौधरी के क्लिनिक जाओ और वहाँ बरामदे में सो जाओ। गुंडे भांग के नशे में चूर हैं और हमारे दरवाजे पर तीन बार दस्तक दे चुके हैं। यहाँ से चली जाओ! उनकी नज़र हमारी बचत पर भी है।"

बूढ़ी महिलाओं के सूखे चपातियां चबाने की आवाज सुनाई दे रही थी। यह अजीब था। ये अधभूखी महिलाएं अपने अंतिम संस्कार के लिए पैसे इकट्ठा कर रही थीं और उन्हें बड़ी सावधानी से बचाकर रख रही थीं। उनके पास पैसे तो थे, लेकिन वे उस पैसे का एक भी सिक्का खर्च करने के बजाय भूखे रहना पसंद करतीं!

शशि चली गई, और गोपीनाथ बाजार में चलते हुए, उसके घने, लंबे, टपकते बाल उसके गीले कपड़ों पर फैले हुए थे, वह एक युवती की बजाय एक बदसूरत भूत की तरह लग रही थी।

क्या किसी और ने भी कभी ऐसी स्थिति का सामना किया था, उसने सोचा? क्या कोई और महिला भी थी जिसने अपने मृत साथी को आग के हवाले करने के बाद, रहने की जगह की तलाश में सड़कों पर भटकना पड़ा हो?

वह रुकी और उसे लगा कि कुछ सीढ़ियाँ दिखाई दे रही हैं। लेकिन ध्यान से देखने पर उसने पाया कि वे घोड़ों के लिए पानी रखने वाले कंक्रीट के टैंक थे। वह वहाँ थोड़ी देर आराम करना चाहती थी, लेकिन उसे एहसास हुआ कि समय बर्बाद करना संभव नहीं है। नदी से आने वाली ठंडी हवा के कारण उसके गीले कपड़े उसे कंपकंपा रहे थे। वह बहुत थकी हुई थी और उसे लग रहा था कि वह किसी भी क्षण गिर जाएगी। मजबूरी से उपजी दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ, वह चलती रही जब तक कि वह भजन आश्रम की संगमरमर की सीढ़ियों तक नहीं पहुँच गई, और फिर वह अंदर चली गई।

लेकिन वहां कोई नहीं था। शायद खराब मौसम ने उन्हें हतोत्साहित कर दिया था, और सभी ने किसी न किसी झोपड़ी में जगह ढूंढ ली थी।

वह सोच रही थी कि क्या करे। हराबारी जाने का कोई फायदा नहीं था—वहाँ कोई खाली कमरे नहीं थे। इसके अलावा, वहाँ के सभी राधेश्यामियों को आलमगढ़ी की मृत्यु के बारे में पता था। बाज़ार में बहुत कम लोग थे। यहाँ तक कि दुकानें और छोटे स्टॉल भी बंद थे। शायद वे सब संगीत कार्यक्रम में गए थे। आम तौर पर वृंदावन के बाज़ार इतने सुनसान नहीं होते थे, देर रात तक भी नहीं। वह तीर्थयात्रियों को कागज बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाली पुरानी पेड़ की छाल, पवित्र माला और ऐसी ही अन्य चीजें बेचने वाले स्टॉलों में सो सकती थी। लेकिन जब आधी रात को संगीत कार्यक्रम समाप्त हो जाते, तो लोग हाथों में मशालें लिए यहाँ से गुजरते और उसके जैसी अकेली युवती के लिए यह सुरक्षित नहीं होता।

ज्ञानगोदरी की ओर जाने वाली गली के प्रवेश द्वार पर अचानक एक टिमटिमाती बत्ती जल उठी। एक आदमी कई गठ्ठियों में अपना सामान बांधे उसकी ओर आ रहा था। वह नशे में था, सीधा चल

भी नहीं पा रहा था। उसने अपना बिस्तर बगल में दबा रखा था और हाथ में शराब की बोतल थी। किसी ने उसे बताया था कि अकेले शराब पीने वाले आदमियों से सावधान रहना चाहिए, अकेले नहीं...

लेकिन वह इसी रास्ते से आ रहा था, और वह उस चौड़े बरामदे को देखे बिना नहीं रह सका जहाँ वह बैठी थी। जैसे ही वह जाने के लिए उठी, वह अपना बिस्तर और बोतल लेकर आया और बरामदे की एक सीढ़ी पर बैठ गया।

“अरे! मेरी दुकान के अंदर खड़े हो कौन? क्या तुम्हें पता नहीं कि यह मेरी जगह है? ओह! तुम तो बूढ़ी माँ राधेश्याम जैसी लग रही हो। क्यों खड़ी हो? बैठ जाओ, आराम से। मैं तुम्हारा बूढ़ा बेटा हूँ। अगर तुम वहाँ लेटना चाहो तो कोई बात नहीं। मैं वहाँ पानी की टंकी के पास सो जाऊँगा। चिंता मत करो, मैं सुरक्षा बलों का सदस्य हूँ, एक जासूस हूँ!”

उस आदमी ने अपना बंडल खोला और सूखी हुई पुरानी उल्टी की दुर्गंध हवा में फैल गई। शशि ने उसे पहचानने की कोशिश की, लेकिन अँधेरे के कारण उसका चेहरा बिखरी हुई दाढ़ी और मूंछों से ढका हुआ था। उसे याद नहीं आ रहा था कि उसने उसे पहले कभी देखा था। उसने अपनी बोतल से एक और घूंट लिया और फिर बोतल को आकाश की ओर करके चिल्लाया, “बुढ़िया माँ, मैं ब्रज में केवल रात में ही बाहर जा सकता हूँ। जानती हो क्यों? क्योंकि—सुनो, मैं तुम्हें धीरे से बताता हूँ—क्योंकि मैं एक जासूस हूँ, मैं जासूसों का राजा हूँ! समझी ना, जासूसों का राजा! इस बार मैं फुलताल बाबा के पीछे हूँ। क्या तुमने फुलताल बाबा का जुलूस देखा है? होली के त्योहार पर उन्होंने वृंदावन और मथुरा में जुलूस निकाला था। और यकीन मानो, बीस-बीस लीटर पानी चार-चार आदमियों ने उठाया था और आठ गधे रंग, आबीर ढो रहे थे! हर जगह आबीर ही आबीर था! ब्रज के लोगों के पैरों के नीचे, दीवारों पर, मंदिरों की मूर्तियों पर, बलवान होरेंगा बाई के कपड़ों पर। सब कुछ होली के रंगों से रंगा हुआ था! इतना आबीर था कि ऐसा लग रहा था जैसे यमुना की रेत भी उसमें डूब जाएगी! और मानो इतना ही काफी नहीं था, उन्होंने खाने का भी इंतजाम किया था। दस हज़ार से कम लोग नहीं! धनी सेठों की एक विशाल सभा थी। उनकी असंख्य सजी-धजी गाड़ियों की गड़गड़ाहट, उनके अनगिनत पैसों के थैलों की खनक! और मैं वहाँ था, एक जासूस का अभागा साथी! सेठ! पैसा! धन कमाने वालों की रहस्यमयी और अद्भुत गहरी गुफा! और मैं, बदनसीब जासूस। आज मुझे सिंह द्वार में प्रवेश करने से रोक दिया गया है! सशस्त्र गार्ड ने कहा कि इस बार रथ यात्रा के दौरान ब्रज में सभी को कंबल दिया जाएगा। वह गार्ड, कभी सैनिक हुआ करता था!

वह आदमी जोर से हंस पड़ा।

उन्होंने कहा, "शांति से सोइए। मैं पानी की टंकी के पास सोऊंगा।"

फिर नशे में धुत आदमी ने दबी आवाज़ में कहा, “क्या तुमने प्रेमचंद की कहानी ‘नमक का कांस्टेबल’ पढ़ी है? सशस्त्र गार्ड हमेशा सड़े हुए सेठ के पेट पर बंदूक ताने रहता है और हमारे सुरक्षाकर्मियों को नामाखरम, कृतघ्न कहकर डांटता है! बताओ, क्या तुमने सचमुच प्रेमचंद की वह कहानी पढ़ी है?”

जैसे-जैसे उसने अपनी बोतल खत्म की, उसका नशा और भी बढ़ गया, और फिर एक बीमार

आदमी की तरह, वह पानी की टंकी के पास गिर पड़ा और उल्टी करने लगा।
इसका फायदा उठाते हुए वह भागने लगी। उसने सोचा था कि हराबारी की छोटी सी चाय की दुकान खाली होगी, लेकिन उसने देखा कि अंधेरे का फायदा उठाते हुए कुछ आदमी वहां बैठे हुए थे।
बेहरिमोहन कुंजा की दुकान खुली थी। वह एक शेरनी की तरह तेज़ी से उसके पास से गुज़री, मानो वह अपने खोए हुए बच्चे को खोज रही हो। वह नीम के पेड़ और कंक्रीट के कुएँ के पास से गुज़री और मृणालिनी की झोपड़ी के पास पहुँचकर दरवाज़ा ज़ोर-ज़ोर से पीटने लगी। उसे अंदर से एक कर्कश आवाज़ सुनाई दी, "ज़्यादा ज़ोर से मत पीटो, यह पुराना दरवाज़ा है।"
वह दरवाजे की सीढ़ी पर गिर पड़ी। हवा और ठंडी होती जा रही थी। उसके कपड़े अभी भी गीले थे, और हवा का हर झोंका उसे बेरहमी से थप्पड़ मार रहा था। वह अब और आगे नहीं जा सकती थी! वह मर जाएगी!
दरवाजा खुला और मृणालिनी बाहर आई।
“तुम! रात के इस समय? मैंने तुम्हें पहले ही बताया था कि यहाँ रहना तुम्हारे लिए ठीक नहीं होगा। ऊपर पहले से ही दो औरतें दो छोटे-छोटे कमरों में बंद हैं! मैंने उन्हें दो-दो रुपये में किराए पर लिया था। लेकिन उन्होंने पिछले दो महीनों से किराया नहीं दिया है... अरे, तुम तो बीमार औरत की तरह काँप रही हो!” मृणालिनी ने कहा।
“अलमगढ़ी का अंतिम संस्कार करने के बाद भी मैं गीले कपड़ों में ही हूँ। मैंने अभी तक कपड़े नहीं बदले हैं। कृपया मुझे आज रात यहीं रहने दीजिए”, शशि रोते हुए बोली।
“ऐसा लग रहा है जैसे तुम किसी भी क्षण गिर जाओगे। अंदर आओ,” मृणालिनी ने उत्तर दिया।
“आलमगढ़ी की मौत की खबर अब सार्वजनिक हो चुकी है। मुझे यह भी पता था कि राधेश्यामियां तुम्हें अपने साथ नहीं रहने देंगी। लोग दिन-ब-दिन स्वार्थी और क्रूर होते जा रहे हैं। मेरे कुछ कपड़े पलंग के कोने पर पड़े हैं, जाओ और उन्हें पहन लो। जितना हो सके चुप रहना, मेरी मां बहुत बीमार हैं। खाना ढूंढने जाते समय मुझे उन्हें बांधना पड़ता है। हमारी यही हालत हो गई है। मैं कुछ पैसे देकर एक राधेश्यामिनी से कहती थी कि जब मैं बाहर जाऊं तो वह मेरी मां की देखभाल करें। लेकिन अब उनकी मांगें बढ़ गई हैं। बांके बिहारी गली के पास या कछुआ मंदिर के सामने भीख मांगकर बैठने से वे कम समय में बहुत ज्यादा कमा सकती हैं... मैं तुम्हें पास की किसी झोपड़ी में रहने दे सकती थी। लेकिन तीन भूतिया दिखने वाली महिलाओं ने कब्जा कर लिया है, दो रुपये किराया देने का वादा करके। लेकिन पिछले तीन सालों से हमें एक भी सिक्का नहीं मिला है। और इस बीच हम ट्रस्ट के पैसे का इंतजार कर रहे हैं, और हम तीनों भूखे मर रहे हैं।”
झोपड़ी के अंदर मंद रोशनी में, शशि जाकर मृणालिनी के पैरों के पास बैठ गई।
मृणालिनी ने आगे कहा, “मुझे नहीं पता कि आलमगढ़ी ने तुम्हारी मदद की या तुम्हें परेशान किया, लेकिन मैं इतना जानती हूँ कि उसने हमेशा तुम्हारा ख्याल रखा और तुम्हें सुरक्षा दी, भले ही अप्रत्यक्ष रूप से। अब जब वह नहीं रहे, तो वे कुत्ते जो जवान विधवाओं और बुरी औरतों को ढूंढते फिरते हैं, तुम्हारे साथ खूब मौज-मस्ती करेंगे। वे अच्छी तरह जानते हैं कि अब तुम्हारी रक्षा

करने वाला कोई नहीं है। और सुनो, वे बाबा जी जिनके पास कुछ नहीं है और जिनका कोई सहारा नहीं है, वे तुम्हें अपने यहाँ नौकरानी बनकर रहने के लिए बुलाएंगे। सावधान रहो! दोबारा ऐसी गलती मत करना। चाहे भूख से ही क्यों न मरना पड़े, सड़क किनारे एक नेक और गुणी स्त्री के रूप में मरना इससे बेहतर है।"

शशि ने कोई जवाब नहीं दिया। जब वे दोनों ज़मीन पर सोने के लिए लेटे, तो गोपीनाथ बाज़ार में चल रहे संगीत कार्यक्रमों से उल्लास और गाने की आवाज़ें सुनाई देने लगीं। इस शोर के बीच भी शशि को एक सुंदर आवाज़ में एक गीत सुनाई दिया, जो भावपूर्ण भावनाओं से भरा था। यह वही गीत था जो हाल के दिनों में ब्रज में हर जगह सुना जा रहा था—"जब तक जीवित हो, ऐसे जियो जैसे कि सारा संसार तुम्हारा हो।"

मृणालिनी ने कहा, "इस गीत के बोल सचमुच बहुत सुंदर हैं। घुमंतू गायक काफी समय से ब्रज के लोगों को यह गीत सुनाते आ रहे हैं। इतना ही नहीं, परसों तो मेरी मां भी बाजार में बैठकर यही गीत गा रही थीं। क्या आपको पता है, आजकल लोग मेरी मां को बाजारों में पहचानने लगे हैं? आप क्यों रो रहे हैं?"

मृणालिनी ने आगे कहा, "तुम एक बहादुर और मजबूत लड़की हो, और मुझे लगता है कि तुम अच्छी और गुणी भी हो। इसके अलावा, लोग कहते हैं कि डॉ. रॉयचौधरी तुम्हारी मदद करने के लिए तैयार हैं। उन्हें अपनी बेटी के साथ काम करने की बहुत उम्मीदें थीं। लेकिन मुझे यकीन है कि तुमने सुना होगा कि उनकी बेटी ने उनकी सारी उम्मीदों पर पानी फेर दिया है और उन्हें निराश किया है। उनकी पत्नी भी बिस्तर पर पड़ी हैं। ऐसा लगता है कि उन्हें हर कोने में वह ईसाई युवक दिखाई देता है। चलो, उठो और अपने आंसू पोंछ लो। तुम्हें किस बात की चिंता है? प्यार? क्या तुम रंगाजी के बालब्रह्मचारी स्वामीजी की ओर आकर्षित हो? दिन, महीने और साल बीत जाएंगे, और अगर तुम्हारा आकर्षण सिर्फ क्षणिक मोह नहीं है, तो यह उसी तरह परीक्षा में खरा उतरेगा जैसे सोने की शुद्धता को परखने के लिए पत्थर का प्रयोग किया जाता है। तब तुम्हारा प्यार शुद्ध सोने की तरह उज्ज्वल और स्थायी रूप से चमकेगा। स्वामीजी की भूलभुलैया भी उस पवित्र प्रेम को चोट नहीं पहुंचा पाएगी या रोक नहीं पाएगी! मेरा विश्वास करो। मैं तुम्हें यह सब अपने चालीस से अधिक वर्षों के अनुभव से बता रही हूँ। अब, अपने आंसू पोंछ लो।" मैं तुमसे कहता हूँ, साल इतनी तेज़ी से बीत जाएँगे कि तुम्हें पता भी नहीं चलेगा। तुम वापस आओगे। मुझे पूरा यकीन है कि तुम इतने समझदार हो कि कछुए के पीछे भागते हुए मोती नहीं खोओगे!

कुछ समय बाद, टिमटिमाती बत्ती बुझ गई। घोर अंधेरे में, ये दो घायल, दुखी आत्माएँ एक-दूसरे को बाहों में भर लिए ज़मीन पर पड़ी थीं। लेकिन इस क्षण, एक अज्ञात और भयावह भविष्य के डर से चूर-चूर होकर, वे दो मासूम बच्चों की तरह लग रही थीं।

Fourteen

अंधे ठाकुर साहब अब अपना अधिकांश समय बीते दिनों की यादों में लीन रहते थे, और जब वे इन विचारों से जागते, तो कभी-कभी उन्हें लगता कि उनकी आत्मा उनके जर्जर शरीर से विदा हो चुकी है। कि जो कुछ क्षण पहले चलने-फिरने में सक्षम थे, वे अब एक बदसूरत लाश मात्र रह गए हैं। जब वे ब्रज के बुजुर्गों से मिलते, तो उनसे एक ही सवाल पूछना चाहते: क्या उनके मन में भी ऐसे ही विचार, ऐसी ही धारणाएँ हैं? लेकिन नहीं, उन्हें अभी तक कोई संतोषजनक उत्तर नहीं मिला था। कभी-कभी वे सोचते कि यदि किसी दैवीय कृपा से उनकी दृष्टि वापस आ जाए, तो वे ब्रज के हर बुजुर्ग के पास जाकर उनसे यही सवाल पूछेंगे, 'किस तर्क से, किस विश्वास से, ये लोग—जीवन के लालची—मानते हैं कि उनकी आत्माएँ अभी भी उनके जर्जर शरीरों में सुरक्षित हैं, कि उनकी आत्माएँ बहुत पहले उनके नश्वर शरीर के खोल से अलग नहीं हुई हैं?'

एक दिन ठाकुर साहब मंदिर की सीढ़ियों पर काफी देर तक बैठे रहे, और धीरे-धीरे उनके सारे साथी जो गपशप करने के लिए वहाँ जमा हुए थे, चले गए। राममंडोली के कुछ लोग उनके सामने से भजन गाते हुए गुजरे। उनके शरीर पर लगे विशेष इत्र की खुशबू ने ठाकुर साहब के मन में पुरानी यादें ताजा कर दीं, जब उन्होंने पसीने से भीगी सुंदर मादा बछड़ों की कल्पना की। लेकिन, यह कितना भयानक है! वे स्वयं मंदिर की सीढ़ियों पर बैठे एक अनैतिक स्त्री के आकर्षक पैरों के बारे में सोच रहे हैं! और वह भी राम भक्तों के पवित्र गायन और नृत्य के कारण! वे शर्मिंदगी और अपराधबोध से ग्रस्त हो गए। लेकिन साथ ही, उन्हें हंसी भी आ रही थी।

एक ज़माना था जब ठाकुर साहब शराब के लिए अपना सब कुछ छोड़ देते थे, खाना-पीना, पत्नी और बच्चे सब। उन्हें याद आया कि एक बार उनके बड़े बेटे आकर उन्हें डांटते हुए बोले थे, 'तुम स्वार्थी, दुष्ट और कृतघ्न हो!' उनके बच्चे फटे-पुराने कपड़े पहनते थे और पत्नी ने अपने सारे गहने एक-एक करके बेच दिए थे... क्या दिन थे वो! सारी दौलत कई कुटिल स्त्रियों पर खर्च हो गई... ये सोचकर उनके होंठ सूख गए। राममंडोली के वो गायक, उसी सुगंधित इत्र के साथ, उनके पास से क्यों गुज़रते थे, उन्हें उन भयानक दिनों की याद दिलाते हुए!

लेकिन देश के विभाजन के बाद के उन भयानक दिनों की यादें ठाकुर साहब के मन में केवल कुछ खास आवाज़ों से ही ताज़ा होती थीं, जैसे कि ब्रज की ऊबड़-खाबड़ सड़कों पर ताकतवर घोड़ों द्वारा तांगे खींचने की आवाज़। जब भी उन्हें वह आवाज़ सुनाई देती, उनका सिर अपने आप घुटनों के बीच झुक जाता था...

देश के बंटवारे के बाद ठाकुर साहब एक सीमेंट कंपनी में काम करते थे। उन्हें यह अद्भुत अनुभूति होती थी कि सीमेंट के छोटे-छोटे कण एक सफेद चादर की तरह उनके पीछे-पीछे चलते हैं। उनका सिर फिर से झुक जाता था। लेकिन वे अकेले विस्थापित व्यक्ति नहीं थे। कई राजाओं और महाराजाओं, कई योद्धाओं और उच्च पदस्थ वीरों ने अपने घर-बार खो दिए थे और आजीविका

कमाने के लिए विवश हो गए थे। यह बात सभी जानते थे।
झांसी के सिंहासन के उत्तराधिकारी, झांसी की वीर रानी लक्ष्मीबाई के दत्तक पुत्र दामोदर, कहाँ गायब हो गए? वह लड़का, जिसने बहुत छोटी उम्र में 'राम नाम' लिखा हुआ कागज फाड़कर उसकी छोटी-छोटी गोलियां बनाईं, उन्हें आटे में लपेटा और राजसी तालाबों की मछलियों को खिलाया था? वह भी गुमनाम हो गया! और दामोदर का पुत्र लक्ष्मण राव अब भी इंदौर के इमली बाजार में फटी-पुरानी बनियान पहने नंगे पैर घूमता दिखाई देता था। ठाकुर को हंसी आ रही थी। लेकिन तभी उन्हें एहसास हुआ कि उनकी आंखों के नीचे की ढीली और झुर्रीदार त्वचा आंसुओं से नम हो गई है।
सीमेंट के छोटे-छोटे कण आपस में मिलकर एक सफेद चादर बना लेते थे जो हमेशा उसके साथ-साथ चलती रहती थी। वह सोचता था कि क्या दामोदर को भी ऐसा ही महसूस होता होगा।
उसका सिर फिर से नीचे झुक गया, और उसने अपने बूढ़े हाथों में अपनी छड़ी को मजबूती से पकड़ लिया। उसे नहीं पता था कि वह कितनी देर तक इस अर्ध-चेतना की अवस्था में बैठा रहा। अचानक, एक ज़ोरदार चीख से वह चौंककर जाग गया। लोगों का एक उत्तेजित समूह उसकी ओर आ रहा था। किसी ने उसके कानों में चिल्लाकर कहा, "तुम्हारी पत्नी नहीं मिल रही है, वह घर से गायब हो गई है।"
ठाकुर ने अपनी लाठी पर अपनी पकड़ और मजबूत कर ली। उसका झुका हुआ सिर सीधा हो गया और वह चिल्लाया, "क्या हुआ?"
कुछ बूढ़े राधेश्यामियों ने चिल्लाकर कहा, “यहाँ घंटों झूठे घमंड में बैठे रहने के बजाय, बेहतर होता कि आप कमरे के अंदर बैठ जाते। आपकी दृष्टि भले ही चली गई हो, लेकिन आपके हाथ-पैर तो अभी भी काम करते हैं, है ना? आप अपनी पत्नी के साथ बैठ सकते थे। अब बेचारी आपकी बेटी अपनी माँ को ढूंढते हुए इधर-उधर भाग रही है।”
भीड़ में से किसी ने कहा, “इस अंधे बूढ़े आदमी से खड़े होकर बात करने का कोई फायदा नहीं है। मुझे बस यही उम्मीद है कि वह बूढ़ी औरत मौनीबाबा के शिविर की ओर न गई हो। किसी दुष्ट ने उस नेक आदमी के हाथी को नशीले पदार्थों से भरे लड्डू खिला दिए, और वह बेकाबू हो गया है। कल रात महंत की कृपा से ही वह जानवर को शांत कर पाए।”
अपने साथ ले जा रही लाठियों को जोर-जोर से पटकते हुए, समूह कठोर सड़क पर आगे बढ़ा और जबरदस्त शोर मचाया।
ठाकुर का गला सूख रहा था और उनका थका हुआ बूढ़ा सिर फिर से झुक गया। उन्हें एहसास हुआ कि मृणालिनी ने लालची पुजारियों को भुगतान करने के बाद मंदिर की बिक्री से बची थोड़ी सी रकम उनके अंतिम संस्कार के खर्चों के लिए अलग रख दी थी। अब उन्हें ट्रस्ट से मिले बीस रुपये और सत्रा से मिली कच्ची रोटी से ही काम चलाना था। उन्हें याद आया कि उनकी पत्नी भूख से बेहाल होकर भोजन की तलाश में बाहर गई थी।
कुछ देर बाद ठाकुर साहब को फिर से आदमियों के लौटने की आवाज सुनाई दी। उनका शरीर कांपने लगा और उन्होंने अपनी छड़ी को पूरी ताकत से पकड़ लिया।
मृणालिनी की आवाज़ सुनाई दे रही थी। वह अपने बच्चों को खोई हुई शेरनी की तरह चीख रही

थी। “इस अंधे बूढ़े को देखो? यही हमारे खुशहाल और समृद्ध जीवन को बर्बाद करने के लिए ज़िम्मेदार है। इसने हमें भूखा मरने के लिए छोड़ दिया और सारा पैसा शराब पर उड़ा दिया। और अब देखो, कैसे शराब ने अपना बदला लिया और इसे इस दुनिया में धकेल दिया!”

तब मृणालिनी ने एक अकल्पनीय काम किया! उसने अपना ब्लाउज फाड़ दिया और वहाँ मौजूद राधेश्यामियों के सामने अपने स्तन दिखाते हुए चीखी, “मुझे बताओ, तुम सब मुझे बताओ! क्या मैं माँ नहीं बन सकती थी? क्या मैं किसी ‘दिव्य’ बच्चे को जन्म नहीं दे सकती थी? मुझे अपना पूरा जीवन इन दो बूढ़े पुतलों की देखभाल करने, इन दो भूतिया बूढ़े प्राणियों की ‘रखवाली’ बनकर क्यों बिताना पड़ा? मुझे बताओ, क्या कभी किसी और को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ा है? तुम गरीब राधेश्यामियाँ हो जो टूटी-फूटी झोपड़ियों में रहती हो। लेकिन क्या तुम स्त्रियाँ भी कभी इस अवस्था में पहुँची हो?”

एक बुजुर्ग महिला आकर मृणालिनी के कान में फुसफुसाई, “अपने कपड़े ठीक से समेट लो और खुद को अच्छे से ढक लो। तुमने इतने लंबे समय तक अपने बूढ़े माता-पिता की देखभाल करते हुए बहुत पुण्य कर्म किए हैं। वे ज्यादा दिन जीवित नहीं रहेंगे। धैर्य रखो और उनके अंतिम संस्कार का भी ध्यान रखना।”

एक अन्य व्यक्ति ने कहा, “बूढ़े के अंतिम संस्कार के लिए पैसे क्यों बचा रहे हो? हमने सुना है कि तुमने अपनी अपेक्षा से कहीं अधिक कष्ट सहे हैं। अब समय आ गया है कि तुम अपना ध्यान रखो और जो कुछ बचा है उसका आनंद लो।”

मुरलधर मंदिर की घंटियाँ बज उठीं। और लगभग उसी समय, उत्तेजित आवाज़ें पास आती सुनाई दीं। एक हट्टा-कट्टा पांडा मृणालिनी की माँ को लगभग घसीटता हुआ ले जा रहा था। उसने कहा, “लगता है बुढ़िया के पास पीने के लिए पानी नहीं था। वह पानी की तलाश में सैनिकों के घोड़ों के अस्तबल में गई थी।”

पांडा हँसा, और बूढ़े राधेश्यामियों ने भी उसका साथ दिया। मृणालिनी ने अपनी माँ का हाथ पकड़ा और उन्हें मंदिर की अंधेरी सीढ़ियों की ओर ले गई। ठाकुर साहब का परिवार तो उजाले और अंधेरे का फर्क बहुत पहले ही भूल चुका था, और मृणालिनी को अंधेरे में डूबी सीढ़ियाँ साफ दिखाई दे रही थीं। ऐसा लग रहा था मानो वह सदियों से अपनी माँ को इन अंधेरी सीढ़ियों पर चढ़ा रही हो।

धीरे-धीरे कदमों की आहट मंद पड़ गई और राधेश्यामियों की तेज़ आवाज़ें भी शांत हो गईं। ब्रज एकदम शांत और स्थिर हो गया, मानो कोई कब्रिस्तान हो। लेकिन ठाकुर साहब वहीं बैठे रहे। हवा के कुछ झोंके आए और उनके कमज़ोर शरीर को छू गए। उन्होंने एक पुरानी बनियान पहन रखी थी और ठंड से कांप रहे थे। आज किसी ने उन्हें ऊपर ले जाने के बारे में नहीं सोचा था और वे बिना किसी की मदद के सीढ़ियाँ नहीं चढ़ सकते थे। बहुत रात हो चुकी थी। लेकिन वे बेबस थे। उन्होंने अपनी छड़ी पकड़ी और अकेले वहीं बैठे रहे। वे सोचने लगे कि क्या उन्हें वहीं लेट जाना चाहिए—उन दो बेघर बच्चों की तरह जो सड़क किनारे सो रहे थे। उन्होंने अपने हाथों से सीढ़ियों को छुआ। सीढ़ियाँ बहुत संकरी लग रही थीं। उन पर आराम से बैठना उनके लिए मुश्किल होगा। रात जैसे-जैसे बढ़ती जा रही थी, हवा और ठंडी होती जा रही थी।

वह बैठे-बैठे शायद सो गया था। अचानक वह चौंककर जाग गया। कोई उसके पास खड़ा था। उसने पुकार कर पूछा, "कौन है?"

उसने एक आवाज सुनी, “आओ, मैं तुम्हें तुम्हारे कमरे तक ले जाऊँगा। मैं इस रास्ते से तीन बार गुजर चुका हूँ, और हर बार मैंने तुम्हें ठीक उसी स्थिति में बैठे हुए पाया है।”

“पर मेरे बालक, तुम कौन हो, जो इस अंधेरी रात में मेरे पास ईश्वर के दूत की तरह आए हो?” ठाकुर साहब ने पूछा।

लड़के ने कोई जवाब नहीं दिया, और ठाकुर साहब सोचने लगे, "तुम्हारा मन दीपक की रोशनी की तरह उज्ज्वल और पवित्र है, फिर भी तुम रात के अंधेरे में काम करते हो!"

वह उठ खड़ा हुआ, उसके घुटनों से चरमराहट की आवाज़ आ रही थी। उसने लड़के का कंधा थामने के लिए हाथ बढ़ाया, लेकिन उसका हाथ उसके कोमल गाल पर जा लगा। ठाकुर साहब चौंक गए। “तुम रो रहे हो,” उन्होंने कहा। “मैं तुम्हारे आँसू अपने हाथ पर महसूस कर सकता हूँ। क्यों रो रहे हो, मेरे बेटे?”

“नहीं, ऐसी कोई बात नहीं,” लड़के ने जवाब दिया। “बस बात इतनी है कि आप अंधे और बूढ़े हैं, और आप अंधेरे में बिल्कुल अकेले बैठे हैं।”

ठाकुर साहब अत्यंत भावुक हो गए। उन्होंने कांपते हाथों से बालक के चेहरे और कंधों को छुआ। फिर बोले, “सुनो, मेरे दयालु छोटे मित्र। क्या तुम मेरी वर्तमान स्थिति देख पा रहे हो? कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है कि मैं मंदिर के पुजारी की गोद में बैठा एक नन्हा शिशु बन गया हूँ और खेल रहा हूँ। मेरा यह शरीर अब एक खंडहर हो चुके पुराने घर के समान है। ये विचार अक्सर मेरे मन में आते हैं, और ये बहुत पीड़ादायक हैं।”

लड़के ने बस इतना कहा, "चलो अंदर चलते हैं, बहुत देर हो रही है।"

वे दोनों बड़ी सावधानी से अंधेरी सीढ़ियों पर चढ़े, और जब वे छोटी सीढ़ी पर पहुँचे, तो ठाकुर साहब ने कहा, “मेरे नन्हे मित्र, मैं प्रार्थना करता हूँ कि तुम हमेशा दुखी लोगों के लिए सहानुभूति रख सको। तुम हमेशा उनके लिए आँसू बहा सको। मुझे विश्वास है कि मुझ जैसे बूढ़े व्यक्ति की यह दुआ व्यर्थ नहीं जाएगी... यदि कोई शुरू से ही सही मार्ग पर चलता है, तो बुढ़ापे में सच्चे मूल्य अचानक तूफ़ान की तरह तुम पर नहीं टूट पड़ते। भगवान ब्रजचंद्र स्वयं सत्य प्रकट करेंगे। जिन्होंने दो हज़ार से अधिक राधेश्यामियों को इतने लंबे समय तक अपने वश में रखा है, वे... धीरे-धीरे आगे बढ़ो, और मुझे बड़ी सावधानी से नीचे उतारो। ये सीढ़ियाँ फिसलन भरी हैं। इसीलिए राधेश्यामियों को मुझे इन सीढ़ियों से नीचे उतारने में हिचकिचाहट होती है। ये उम्र और काई के कारण फिसलन भरी हो गई हैं। मेरे बिहारी कुंज के पूर्वज ने कभी कल्पना भी नहीं की होगी कि एक दिन उनके वंशजों में से कोई गरीब हो जाएगा और ये टूटी-फूटी पुरानी सीढ़ियाँ उसके लिए ज़रूरी हो जाएँगी।”

वे सीढ़ियाँ सुरक्षित रूप से पार कर गए, और आखिरी सीढ़ी पर कदम रखते ही ठाकुर साहब ने लड़के के सिर पर हाथ रखकर लगभग फुसफुसाते हुए कहा, “मेरी एक बड़ी इच्छा है। और मुझे लगता है कि चूंकि तुम इस अंधेरी रात में मेरी मदद करने के लिए स्वयं भगवान के दूत की तरह अचानक आए हो, इसलिए तुम मेरी इच्छा पूरी कर पाओगे। क्या तुम ऐसा करोगे?”

“अगर यह मेरी पहुँच में है, तो मैं इसे अवश्य करूँगा,” लड़के ने उत्तर दिया।
“मुझे पूरा यकीन है कि आपको पता होगा कि कुछ दिनों में रंगाजी की रथ यात्रा होने वाली है। मेरी उसे देखने की बहुत इच्छा है। अगर आपके पास थोड़ा समय हो, तो क्या आप मुझे रथ यात्रा दिखाने ले जा सकते हैं? बताइए, क्या आप मेरे लिए ऐसा कर सकते हैं?”
“बिल्कुल कर सकता हूँ,” लड़के ने बिना झिझक के जवाब दिया।
अंधेरे में भी, युवक ने बूढ़े व्यक्ति के होठों पर एक हल्की सी मुस्कान देखी। उस लड़के ने कभी सोचा भी नहीं था कि मुस्कान इतनी उदास हो सकती है। ठाकुर साहब अंधे थे, तो रथ यात्रा में उन्हें भीड़ के शोर-शराबे के अलावा और क्या 'देखना' या आनंद लेना था? लड़के ने उदास मन से सोचा। लेकिन इस कोमल हृदय और दयालु युवक ने उदास बूढ़े व्यक्ति से ऐसा कोई प्रश्न नहीं पूछा।
“अब जाओ,” ठाकुर साहब ने कहा। “मैं यहाँ से संभाल लूँगा। तुम्हें मेरी बात याद रहेगी ना?”
अपनी छड़ी के सहारे चलते हुए ठाकुर साहब धीरे-धीरे अंधेरी झोपड़ी में दाखिल हुए। मानो कोई जीवित भूत अपने ताबूत से निकलकर वापस जा रहा हो।

Fifteen

सफेद रंग का सांप सुबह-सुबह सौदामिनी के कमरे से रेंगता हुआ निकला। फिर, वहां मौजूद लोगों की ओर देखे बिना ही, वह कुएं के पास गया और चुपचाप वापस लौट आया। आश्रम के दो बाबाजी, जो भीख मांगकर अपना जीवन यापन करते थे, बोले, “यह शुभ संकेत नहीं है। आज का दिन अच्छा नहीं रहेगा।”

वे शायद सही थे। क्लिनिक के दरवाजे के सामने एक आदमी मृत पड़ा था। पिछली रात भारी बारिश हुई थी, और संभवतः वह आदमी चिकित्सा सहायता लेने आया था।

अखाड़े से कुछ राधेश्याम आए और शव को ध्यान से देखने लगे। अचानक उनमें से एक चिल्लाया, "इस आदमी का दांत सोने का है।"

यह सुनकर सभी राधेश्याम उत्साहित हो गए और सबने एक साथ कहा: "सोने का दांत!"

वे शव के पास पहुँचे और उसकी जाँच करने लगे। बाबा जी में से एक ने कहा, “हरिद्वार में, जब मैं बहुत छोटा था, तब मैं एक विशेष छलनी का उपयोग करके नदी से मृतकों की अस्थियाँ इकट्ठा किया करता था। कभी-कभी मुझे सिक्के और सोने के दाँत मिलते थे। क्या आप विश्वास करेंगे जब मैं आपको बताऊँ कि मैंने एक वर्ष में बीस सोने के दाँत इकट्ठा किए थे! आजकल, मुझे नहीं लगता कि नदी से अस्थियाँ इकट्ठा करने वाले लड़कों को एक वर्ष में एक भी सोने का दाँत मिलता है।”

मृत व्यक्ति के मुँह में मिला सोने का दाँत ब्रज के लोगों में हलचल मचा गया और देखते ही देखते औषधालय के सामने भीड़ जमा हो गई। सौदामिनी ने पानी भरने आई दो बूढ़ी महिलाओं को इस बारे में बात करते सुना: “आप कैसे कह सकते हैं कि ब्रज में कोई दैवीय शक्ति नहीं है? कोई सफाईकर्मी आता और शव को नदी में फेंक देता और उस आदमी का अंत हो जाता। लेकिन अब उसे सज्जन लोग शान से ले जाएँगे और इस तरह वह स्वर्ग की यात्रा पर निकल जाएगा!”

एक अन्य व्यक्ति ने कहा, "मैंने शिविर के सैनिकों को कुछ दिन पहले यह कहते सुना कि सरकार ने ब्रज के उन बेघर और बेसहारा लोगों की देखभाल करने का फैसला किया है जिनके पास अपने अंतिम संस्कार के लिए पैसे नहीं हैं।"

गर्दन में एक बड़ा ट्यूमर लिए एक राधेश्यामिनी चीख कर बोली, “इन सब बातों पर विश्वास मत करो, ये तो बस एक खोखले पात्र के खोखले शब्द हैं! सैनिकों ने पिछले साल और उससे पहले भी यही बात कही थी।”

एक अन्य व्यक्ति ने कहा, “जल्द ही डॉक्टर की पत्नी की बारी आएगी। मैंने उसे कुछ दिन पहले देखा था। वह बिल्कुल पतली हो गई है।”

"ये विधवा बेटी और उस ईसाई युवक की समस्याएं हैं जिनसे वह प्यार करती है।"

“उस औरत ने ज़रूर किसी के खाने में ज़हर मिलाया होगा,” एक औरत चिल्लाई। “वरना वो ऐसी बेटी को जन्म कैसे दे सकती थी? एक जवान लड़की जो हर जगह अकेली घूमती रहती है! धिक्कार है उस मूर्ख औरत पर!”

फिर, क्लिनिक के सामने जमा भीड़ की परवाह किए बिना, तीनों महिलाओं ने अपने सारे कपड़े उतार दिए और बेफिक्री से कुएँ के किनारे नहाने लगीं। ये महिलाएं शारीरिक और मानसिक रूप से पुरुष और स्त्री के बीच की सीमाओं को पार कर चुकी थीं और अब उन्हें लिंगों में कोई अंतर नहीं दिखता था। सौदामिनी ने यह बात ब्रज में कई लोगों से सुनी थी। पुरुषत्व और स्त्रीत्व उनके जीवन का इतना अभिन्न अंग बन चुके थे कि अब उनका इस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था।

ठीक उसी समय जब उस अज्ञात व्यक्ति के शव को यमुना नदी के किनारे दाह संस्कार के लिए जुलूस में ले जाया जा रहा था, हरिदास स्वामी द्वारा बांके बिहारी की प्राप्ति का जश्न मनाने वाला एक और जुलूस भी शुरू हो चुका था, और संयोग से दोनों जुलूस आपस में मिल गए। लोग आश्चर्यचकित रह गए और चिल्ला उठे, “कितना बड़ा सौभाग्य! कितना अद्भुत भाग्य! देखो कैसे दोनों जुलूस एक हो गए!”

सौदामिनी अंदर गई। उसने अपने कमरे के कोनों का मुआयना किया, यह देखने के लिए कि दिन दहाड़े वह साँप इतनी रहस्यमय तरीके से कहाँ गायब हो गया था। दीवार की पुरानी लकड़ी में कई छेद थे, लेकिन ऐसा नहीं लग रहा था कि साँप उनमें से किसी एक से अंदर गया हो, क्योंकि छेदों के पास कई छिपकलियाँ दौड़ रही थीं। जैसे ही उसने खिड़की खोली, कुछ गौरैया अंदर उड़कर आईं और मिट्टी में दाना चुगने लगीं।

उसे महंत के हाथी की घंटियों की आवाज़ सुनाई दे रही थी। हरिदास स्वामी का जुलूस रंगाजी के रथगृह के पास पहुँच रहा होगा। दोनों बाबाओं के शब्द उसके कानों में गूँज रहे थे। उन्होंने कहा था कि सुबह अचानक साँप का प्रकट होना अपशगुन नहीं होता।

आज दोपहर औषधालय में असामान्य रूप से सन्नाटा पसरा हुआ था। अज्ञात व्यक्ति का अंतिम संस्कार करने के बाद अधिकांश लोग वापस नहीं लौटे थे। सौदामिनी सोच रही थी कि यहाँ मृत्यु अन्य स्थानों की तुलना में अधिक तेज़ी से आती है। कई जाने-माने चेहरे पहले ही दुनिया से विदा हो चुके थे। ऐसा लगता था मानो ब्रज के इस पवित्र नगर में जीवन और मृत्यु घनिष्ठ मित्र हों। उसे धीरे-धीरे यह अहसास हो रहा था कि उसकी प्रिय माता के जीवन का प्रकाश भी दिन-प्रतिदिन मंद होता जा रहा है। वह सोच रही थी कि क्या वह इस तरह तब तक जी पाएगी जब तक वह समय नहीं आ जाता। हर सुबह उसके कान में एक आवाज़ फुसफुसाती हुई प्रतीत होती थी, "ज़्यादा समय नहीं है, ज़्यादा समय नहीं है!" आज सुबह से ही उसके मन में कई व्यथित विचार उमड़ रहे थे। वह राधेश्यामियों के साथ श्मशान घाट जा सकती थी। अब उसके पास चिंतन के सिवा कुछ नहीं था। बेशक वह अनुपमा की देखभाल करने वाली महिला की मदद करने जा सकती थी। लेकिन वह अपनी माता के पास एक पल भी बैठना असंभव पा रही थी।

वह धीर समीर घाट की ओर चल पड़ी। घाट की सीढ़ियों पर खड़े होकर उसने चारों ओर देखा। डॉ. रॉयचौधरी और अन्य लोग अंतिम संस्कार के लिए यहाँ नहीं आए थे। अचानक उसकी नज़र दूर जंगली अंजीर के पेड़ के नीचे बैठे साँप पकड़ने वाले आदमी पर पड़ी। उसे फिर याद आया कि

बाबा जी ने उस सुबह भविष्यवाणी की थी कि साँप का दिखना अशुभ संकेत है। वह कई वर्षों से उसी कमरे में उसके साथ रहती थी और उससे एक तरह का अपनापन महसूस करती थी। उसे आज भी याद है कि पहली बार जब उसने साँप के सरसराने की आवाज़ सुनी थी—जैसे कोई मोटी रस्सी घसीटी जा रही हो—और तब उसे एहसास हुआ था कि साँप ने अपनी नियमित रात्रि यात्रा शुरू कर दी है। मानो किसी अजीब शक्ति ने उसके गले से डर की चीख निकलने से पहले ही रोक दी थी!

वह किसी जादुई प्रेरणा से प्रेरित होकर सांप पकड़ने वाले की ओर बढ़ी।

वह आदमी साँप की खाल उतारने में व्यस्त था और साँप का शरीर मछली के पीले सफेद शरीर की तरह लटक रहा था। सौदामिनी को ऐसा लगा जैसे कोई उसे कोड़े मार रहा हो! उस आदमी के चेहरे की ओर देखते हुए वह चिल्लाई, "तुमने इस साँप को कहाँ मारा?"

उसने उसकी तरफ एक नजर डाली, लेकिन कोई जवाब नहीं दिया।

“मैं इस सांप को पहचान सकती हूँ,” उसने कहा। “यह दशरथ अखरा का पुराना सांप है।”

इस बार उस आदमी ने सिर हिलाया। अचानक वह जोश से भर गया। “देखो,” उसने कहा, “ब्रज में आमतौर पर इतनी चमकदार और साफ सांप की खालें देखने को नहीं मिलतीं। सुनहरी पृष्ठभूमि पर चांदी के धब्बे!”

नवयुवक की निर्मल, लगभग पारदर्शी किरणें यमुना की रेत पर पड़ रही थीं। वह धीरे-धीरे तंबुओं और छतरियों की ओर चली और एक बार फिर नदी की खुरदरी, ठंडी रेत पर अकेली रह गई। पुराने, फीके पड़ चुके तंबू से एक मधुर, सुरीली आवाज़ आई: “हे मधुर वाणी वाले दूत उद्धव, तुमने हमें आँखें बंद करने को कहा था... उन आँखों को जिनमें हमारे भगवान श्री हरि की छवि सदा अंकित रहती है। तुमने हमें कान बंद करने और जटाओं को गले लगाने को कहा था। लेकिन तुम्हारी सलाह चंदन का लेप लगाने और अंगों पर राख लगाने की थी। क्या तुम नहीं जानते कि हम सदा दुख और इच्छा के विष में डूबे रहे हैं? वे सदा खोज करने वाले योगी हमारे बहुत निकट हैं। हम उनसे एक पल के लिए भी अलग नहीं होते। हम वृक्षों और उनकी छायाओं की तरह घनिष्ठ और अविभाज्य हैं...”

उस गीत ने उसे बहुत गहराई से प्रभावित किया। और अनजाने में ही उसकी आँखों में आँसू भर आए। ऐसा लगा जैसे कोई उससे फिर फुसफुसा रहा हो, "समय बहुत कम बचा है!"

उसके पति सुब्रतो का चेहरा अब धुंधली सी याद बनकर रह गया था। और एक नया चेहरा चमक उठा था, मानो नया सूरज। एक ऐसा चेहरा जो उसके पूरे अस्तित्व और सारे विचारों को अपने अंदर समा लेता था। ब्रज के लोग पहले ही यह अटकलें लगाने लगे थे कि एक दिन यह व्यक्ति ज़रूर उसके दरवाजे पर दस्तक देगा...

वह दोपहर में इसी स्थान पर आई और एक राधेश्यामिनी आकर कुछ देर तक उसके साथ रही। उसने मुरलीधर मंदिर से लाया हुआ प्रसाद, जो वह पत्ते में लपेटकर लाई थी, सौदामिनी के साथ बाँटा। लेकिन कुछ समय बाद वह चली गई और सौदामिनी फिर से अकेली रह गई।

भूत गली से कुछ लोगों को अपनी ओर आते देख उसने महसूस किया। कुछ समझ न आने पर वह खड़ी हो गई। उनकी धीमी आवाज़ें उसे सलाह दे रही थीं, “भागो, भागो! वे राधेश्यामियों का

पीछा कर रहे हैं और उन पर हमला कर रहे हैं। वे बूढ़ी महिलाओं को जवान महिलाओं की तरह समझकर घसीट रहे हैं। उन दुष्टों ने इन बेचारी बूढ़ी राधेश्यामियों को गालियां देना शुरू कर दिया है क्योंकि उन्हें कोई जवान नहीं मिल रही हैं।"

"ये नीच लोग! ये राक्षस, इनके मुंह भयानक कीटाणुओं से भर जाएं!"

सौदामिनी ने अपनी साड़ी के एक छोर से अपना चेहरा ढँक लिया और वहाँ से चली गई। थोड़ी दूर जाकर उसने भूत गली के पास एक राधेश्यामिनी को लेटे हुए देखा। उसके पास जाकर उसने देखा कि वह स्त्री पूरी तरह नग्न थी! उसने देखा कि एक हाथ से वह अपने स्तनों को ढके हुए थी और दूसरे हाथ से अपने शरीर के निचले हिस्से में कुछ टटोलने की कोशिश कर रही थी। समय बर्बाद करने का कोई समय नहीं था! राक्षस किसी भी क्षण इस रास्ते आ सकते थे। वह अंधेरे में दौड़ने लगी...

दीवार के दूसरी तरफ से किसी की आवाज़ सुनाई दी, "वे लोग सुबह से ही तंबाकू उबालने और पीसने में लगे हुए हैं। वे सब नशे में हैं और अब पुजारियों के साथ रहने वाली विधवाओं को पूजा-अर्चना में मदद करने के बहाने परेशान कर रहे हैं।"

"क्या आपको कल रात का नेरानेरी उत्सव याद नहीं है? सहयोग करने वाली विधवाओं के चेहरे बांधने के बावजूद, भ्रष्ट पंडित उनके पैरों से उनकी पहचान करते हुए घूम रहे थे।"

"धर्म के नाम पर ऐसे भयानक कृत्य कब तक होते रहेंगे?"

उसे जल्दी करनी होगी! ये लालची भेड़िये किसी भी क्षण आकर उस पर हमला कर सकते हैं। वह और तेज़ भागी। वह दौड़ती रही, अंधेरी रात में, किसी अज्ञात शक्ति से प्रेरित होकर।

Sixteen

श्री रंगाजी की वार्षिक रथ यात्रा का समय आ गया था। सुंदर केलिकडम वृक्ष की शाखाओं से पानी टपक रहा था और रंगाजी के बगीचे में चमेली के वृक्ष नए जोश से खिल उठे थे। रथगृह के द्वार कुछ दिन पहले ही खोल दिए गए थे और बढ़ई एवं अन्य कारीगर काम में जुट गए थे। रथ तैयार था। चारों ओर अफरा-तफरी और उत्साह का माहौल था और सभी संबंधित व्यक्ति एवं अधिकारी समय पर सब कुछ सुचारू रूप से संपन्न कराने के लिए जी-तोड़ मेहनत कर रहे थे। पुजारियों के प्रतिनिधि हर जगह मौजूद थे और मथुरा जंक्शन के कुछ चालाक पांडा भी तीर्थयात्रियों को लुभाने के लिए मंदिर परिसर में घूम रहे थे।

मंदिर के चारों ओर दुकानें लग गईं। भीड़ इतनी घनी थी कि गोपीनाथ बाजार की सड़क पर चलना लगभग नामुमकिन था, और परीक्षण शेड के पास इतराते हुए मोरों के झुंड भाग गए और राधाबाग के अर्जुन वृक्षों के नीचे शरण ली। रथ अस्सी मन चंदन की लकड़ी से बना था, और उस पर अनुपातिक रूप से बड़ा चक्र लगा था। कोई भी सोच सकता था कि यह कुबेर का चैत्र रथ है। क्या ब्रज की सड़कें इसका भार सहन कर पाएंगी? यह रंगाजी का प्रसिद्ध महारथ था! सुबह से ही लोगों का तांता लगा हुआ था और रंगाजी के आसपास का पूरा इलाका नंदीग्राम, बरसाना, उत्तर काशी और यहां तक कि अयोध्या जैसे दूर-दराज के स्थानों से आए भक्तों से खचाखच भरा हुआ था। हर कोई विशाल रथ की रस्सियों को खींचने का मौका पाने के लिए उत्सुक था, और सभी इस संभावना से बेहद उत्साहित थे, भले ही यह उनमें से अधिकांश के लिए दूर की बात हो।

"जय, भगवान रंगाजी, जय!" के उत्साहपूर्ण नारों से आकाश गूंज उठा।

दिन और समय की सावधानीपूर्वक गणना के बाद, रंगाजी का विशाल रथ शुभ मुहूर्त पर रथगृह से निकाला गया और नरबली की रस्म शुरू की गई। इस रस्म में रथ के पहियों के नीचे किलो के हिसाब से उबले हुए चावल अर्धवृत्ताकार रूप में बिछाए जाते थे। रथ के निकलते ही ब्रज की घंटियाँ बज उठीं, जिनकी ध्वनि पवित्र यमुना नदी की लहरों जैसी थी। रथ को सुशोभित दिव्य प्राणियों, शिरी और गंधर्वों की मूर्तियाँ सजीव प्रतीत हो रही थीं, मानो उनमें मानव रक्त बह रहा हो! लेकिन कुछ ही दिन पहले तक ये लकड़ी की मूर्तियाँ उपेक्षित, थकी-हारी और बीमार बूढ़ी महिलाओं जैसी दिखती थीं! अब वे चमेली की मालाओं, नथनी-कान की बालियों और कानों की बालियों तथा उत्तम रेशम के वस्त्रों से सजी हुई थीं।

यह बात बिलकुल सही कही गई है, “ब्रज में कहीं भी रंगाजी के समान धन-संपत्ति और सुख-सुविधाएँ नहीं मिलेंगी। गोपेश्वर यमुना के जल से सदा तर रहता है, और बिहारीजी सुबह दस बजे से दोपहर बारह बजे तक सोते रहते हैं। वे शाम छह बजे से रात नौ बजे तक विश्राम करते हैं। और गोविंदजी से अधिक धनी राजा कोई नहीं था।”

रंगाजी महाराज को ले जा रहा विशाल रथ तोपों की सलामी और विजयघोषों के बीच शान से

आगे बढ़ा। तीर्थयात्री और श्रद्धालु रथ की मोटी रस्सियों को खींचने के लिए धक्का-मुक्की करने लगे। चंगी के पुलिसकर्मियों ने रथ के पहियों से उत्साहित लोगों की विशाल भीड़ की रक्षा के लिए लंबी कतारें बना लीं।

भव्य रथ धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था, बीच-बीच में रुककर लोगों को थोड़ा आराम दे रहा था। लेकिन ऐसा लग रहा था कि आज भीड़ को आराम या विश्राम की कोई ज़रूरत नहीं थी। आज वहाँ हज़ारों-हज़ारों लोग जमा थे, और ऐसा लग रहा था मानो उन सभी में असाधारण शक्ति और सामर्थ्य हो। यहाँ तक कि कमज़ोर बूढ़े राधेश्यामियों में भी गजब की ताकत नज़र आ रही थी, क्योंकि वे दिव्य रथ की रस्सियाँ खींच रहे थे। सचमुच, आज पुलिस की कोई ज़रूरत नहीं थी। कुछ राधेश्यामियों ने मज़ाक में उन पर चमेली की मालाएँ और जल फेंका!

रंगाजी के दर्शन के लिए भीड़ एक सप्ताह पहले से ही जमा होने लगी थी। ऐसी ही भीड़ तब भी उमड़ती थी जब रंगाजी गरुड़ के आकार के स्वर्ण रथ पर सवार होते थे, और जब वे चांदी के शेषनाग रथ पर यात्रा करते थे, या जब वे तराशे हुए सिंहासन पर बैठकर ब्रज की परिक्रमा करते थे। लेकिन, आज इन आधे भूखे राधेश्यामियों को यह असाधारण शक्ति कहाँ से मिली? इसका स्रोत केवल उनकी अटूट आस्था ही हो सकती थी। जी हाँ, आस्था ही उनकी शक्ति थी!

आम तौर पर भीड़भाड़ वाला गोपीनाथ बाजार आज कब्रिस्तान जैसा लग रहा था। बिहारी कुंज की सीढ़ियों के पास तुलसी की माला बेचने वाली दुकानें भी बंद थीं। हर छोटा-बड़ा व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद था और उनके मालिक रथ यात्रा देखने गए थे।

ठाकुर साहब काफी देर तक सीढ़ियों पर अकेले बैठे रहे। दो राधेश्यामियों ने उन्हें नीचे उतरने में मदद की। आखिर इस शुभ दिन पर वे बुजुर्ग की विनती को मना नहीं कर सकते थे। दृष्टिहीन ठाकुर ने किसी तरह संदूक से अपना पुराना जोधपुरी कोट निकाल लिया था। उन्हें याद आया कि एक समय यह जोधपुरी कोट उनका सबसे पसंदीदा वस्त्र हुआ करता था। और आज, उनके सबसे पवित्र दिन पर, राधेश्यामियों ने उन्हें इसे पहनने में मदद करने में जरा भी संकोच नहीं किया।

“यह तो बहुत ढीला हो गया है,” उनमें से एक ने कहा। इस पर ठाकुर साहब ने जवाब दिया कि यह तो स्वाभाविक ही था, क्योंकि जब यह कोट सिला गया था तब उनकी छाती का माप चालीस इंच से कम नहीं था। ठाकुर साहब ज़ोर से हँस पड़े। इतने दिनों बाद वे खुलकर हँसे थे।

“साहिब, आप रथ यात्रा के लिए पूरी तरह तैयार हैं, लेकिन आपको कौन ले जाएगा?” एक राधेश्यामियों ने पूछा। “सभी लोग विशाल रथ की रस्सियों को खींचने का मौका पाने के लिए चले गए हैं। आपको कौन थामेगा?”

ठाकुर साहब ने कोई जवाब नहीं दिया। इसके बजाय, अपने पुराने जोधपुरी कोट पर नज़र डालते हुए, उन्होंने संस्कृत का एक दोहा सुनाया: “चेहरा उम्र की झुर्रियों से भर गया है, बाल सफ़ेद हो गए हैं, अंग अकड़ गए हैं; लेकिन लालसा अभी भी युवा है।”

राधेश्यामियों ने मंत्रमुग्ध होकर उसकी ओर देखा और उसे प्रोत्साहन मिला। उसने धीमी आवाज़ में गाना शुरू किया: “जब कोई प्रसिद्ध और सम्मानित व्यक्ति दरिद्रता का शिकार हो जाता है और भिक्षापात्र लेकर भटकने लगता है, तब उसके वचन और उसके जीवन के बीच संघर्ष होता है कि

पहले कौन मरेगा।"

एक राधेश्याम ने सहानुभूति जताते हुए कहा, "काश आपकी आंखें ठीक होतीं, तो आज आप रथ यात्रा का कितना आनंद ले पाते!"

ठाकुर साहब ने उत्तर दिया, "अरे नहीं। मुझे देखने की शक्ति की आवश्यकता नहीं है। मेरी श्रवण शक्ति अभी भी ठीक है। मैं पवित्र रथ के पहियों की गड़गड़ाहट सुन सकता हूँ; और उसकी घंटियों की मधुर ध्वनि सुन सकता हूँ; और मैं स्वयं मुरलीधर की हँसी की लहरें भी सुन सकता हूँ।" फिर, राधेश्यामियों की ओर उंगली करते हुए उन्होंने कहा, "मैं मथुरा के भगवान के पदचिह्न सुन सकता हूँ। विश्वास कीजिए, मैं मथुरा के भगवान के पदचिह्न स्पष्ट रूप से सुन सकता हूँ!"... और ठाकुर साहब आनंद से लगभग पागल हो गए!

राधेश्यामियों में बेचैनी बढ़ने लगी थी। रथ पहले ही चुंगी के पास पहुँच चुका था।

"अगर आप चाहें, और अगर आपको यकीन है कि आप भीड़ में दबकर मर नहीं जाएँगे, तो हम आपको वहाँ कदम के पेड़ तक ले जा सकते हैं। लेकिन हम वहाँ रुककर आपकी देखभाल नहीं कर सकते। हमें रथ के आने की आहट और शहनाई की आवाज़ सुनाई दे रही है।"

"नहीं, मेरी प्रिय महिलाओं, आपको मेरे बारे में चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। आप आगे बढ़िए। एक व्यक्ति जल्द ही मेरे लिए आएगा," ठाकुर साहब ने कहा।

उन्होंने उससे पूछा, "कौन आएगा? क्या मुरलीधर स्वयं आएंगे?" और वे हंस पड़े।

बिना समय बर्बाद किए वे गोपीनाथ बाजार की ओर दौड़ पड़े। सब्जीवाले ने पानी की टंकी के पास आधा बोरा सड़े हुए आलू फेंक दिए थे। किसी और दिन होते तो राधेश्यामियों को वहाँ जाने का मन करता। लेकिन आज उनके पास ऐसी चीजों के लिए भी समय नहीं था।

परसों बिहारीजी के घोटालों का खुलासा करने वाले अखबारों की तरह, आज भी मुरलीधर मंदिर समेत विभिन्न मंदिरों के घोटालों को उजागर करने वाले कई और अखबार हवा में लहराते रहे। लेकिन किसी के पास उन्हें पढ़ने का समय नहीं था।

ठाकुर साहब काफी देर तक बैठे रहे, उस अनजान दोस्त का इंतज़ार करते हुए जिससे उनकी मुलाकात बस थोड़े समय के लिए ही हुई थी। इस बीच, हज़ारों लोगों की आवाज़ों और रथ व जुलूस की गूँज धीरे-धीरे कम होती चली गई। ठाकुर साहब बेचैन हो गए। जिस जगह वे बैठे थे, वह सुनसान और कब्रिस्तान की तरह शांत होती जा रही थी। यहाँ तक कि वह नौजवान ब्राह्मण लड़का भी, जो रोज़ाना परिक्रमा करता था, झांझ बजाते हुए वहाँ से गुज़र गया। क्या वह भूल गया था? अगर वह भूल गया होता तो हैरानी की बात नहीं होती। आख़िरकार, वह एक नौजवान लड़का ही तो था।

ठाकुर साहब निराश थे। उन्होंने सोचा, समय अक्सर निर्दयी होता है; कभी-कभी तो चालें भी चलता है। और यहाँ का माहौल भी कभी-कभी इंसान को निर्दयी बना देता है। वरना मृणालिनी अपने अंतिम संस्कार के लिए पुराने राधेश्यामियों की तरह धन की इतनी लालची न होती। लेकिन फिर उन्होंने सोचा, क्या यह सचमुच क्रूरता या कठोरता थी? दूर से रथ की घंटियों की आवाज़ फिर सुनाई दी। घंटियों की मधुर ध्वनि मानो उनसे कह रही हो, "अगर मौका मिले तो जीवन के अंतिम क्षण तक आनंद लो।"

एक शब्द, एक खास खुशबू। आजकल, हर चीज़ और हर कोई उसके कानों में कोई न कोई सच्चाई फुसफुसाता हुआ प्रतीत होता था।

रुकते रथ की कर्कश ध्वनि सुनाई दे रही थी। उसकी सारी घंटियाँ एक साथ बज उठीं। ठाकुर साहब बहुत बेचैन हो गए। तभी उन्हें गोपीनाथ बाजार की खामोशी को तोड़ती हुई चप्पलों की स्पष्ट आवाज सुनाई दी।

ठाकुर साहब ने अपनी छड़ी को उत्सुकता से पकड़ रखा था।

उसने एक आवाज सुनी, "आओ, उठो।"

“तुम आ गए,” ठाकुर साहब ने कहा। “मुझे पता था कि तुम आओगे। मुझे यहीं पकड़ लो।” और वे दोनों धीरे-धीरे गोपीनाथ बाजार की सुनसान सड़क पर चलने लगे।

सचमुच, सड़क पर बूढ़े व्यक्ति की मदद करते हुए युवक की यह तस्वीर एक बहुत ही सुखद दृश्य थी।

रंगाजी का विशाल रथ चंगी के पास पहुँच चुका था, और भीड़ इतनी घनी थी कि रथ के विशाल पहिए मानो मानव जाति के सागर में डूबते हुए प्रतीत हो रहे थे।

“तुम कांप रहे हो,” लड़के ने कहा। “मुझे कसकर पकड़ लो। क्या तुम पास आना चाहोगे, या इस छोटी पहाड़ी पर खड़े होकर देखना पसंद करोगे?”

“मुझे पास ले चलो,” ठाकुर साहब ने विनती की, “मुझे जितना हो सके पास ले चलो ताकि मैं चंदन के रथ को अपने हाथों से छू सकूँ।”

लड़का चुप रहा, और ठाकुर साहब ने कहा, “ओह, मुझे लगता है कि तुम मुझे भीड़ के बीच ले जाने से डर रहे हो। इसकी चिंता मत करो। चलो जल्दी करें। लोग कहते हैं कि जब रथ चंगी के मोड़ को पार करके बगीचे की ओर मुड़ेगा तो भीड़ और भी घनी हो जाएगी।”

वे आगे बढ़ते रहे और देखा कि रथ रुक गया है। वृंदावन के पाँच हज़ार मंदिरों से रंगाजी को चमेली और गुलाब की मालाएँ पहनाने की रस्म शुरू हो चुकी थी।

अचानक, ठाकुर साहब में असीम शक्ति आ उठी, और जैसे ही कंकालनुमा बूढ़े राधेश्यामियों ने पर्याप्त शक्ति जुटाकर रथ की विशाल रस्सियों को खींचने के लिए भीड़ में प्रवेश किया, वैसे ही ठाकुर साहब भी किसी तरह इतने बलवान हो गए और बालक का हाथ थामे बेपरवाह होकर भीड़ के विशाल सागर में कूद पड़े। उस भारी धक्का-मुक्की में वे दो-तीन बार गिरे, और उनका पुराना जोधपुरी कोट लगभग फट गया। लेकिन, जैसे कोई माँ अपने शिशु को बेबसी में थामे रहती है, वैसे ही उन्होंने किसी तरह अपने कोट को थामे रखा। चमेली के फूलों की खुशबू और उतनी ही सुगंधित अगरबत्ती के धुएँ से पूरा वातावरण महक रहा था। यह सबसे पवित्र रथ था, और इसे छूना या इसके सामने नतमस्तक होना भी अत्यंत पुण्य कर्म था!

रथ अपनी विशाल घंटियों की झंकार के साथ फिर से चलने लगा। लोग ठाकुर साहब और बालक को लगभग कुचलते हुए आगे बढ़ रहे थे। बालक ने कहा, “चलो अब वापस चलते हैं। देखो, वह विशाल भीड़ तूफान की तरह हमारी ओर दौड़ रही है...।”

लेकिन लड़के की बात अनसुनी करते हुए, ठाकुर साहब एक तीर की तरह तेजी से विशाल पहियों की ओर बढ़े!

“उसे पकड़ो, उसे पकड़ो,” युवक चिल्लाया।
लेकिन उन्हें कौन पकड़ सकता था? असाधारण शक्ति के साथ, बूढ़ा व्यक्ति तेजी से आगे बढ़ा... और इससे पहले कि कोई कुछ कर पाता, अंधे ठाकुर साहब कूद गए और पवित्र रथ के विशाल पहियों के नीचे आ गिरे।

रथ के पहियों के नीचे से खींचे जाने के बाद, एक पल के लिए वे जीवित रहे। और उस एक पल में, रथ से फेंकी गई सैकड़ों चमेली की मालाओं ने उनके पूरे शरीर को ढक लिया। ऐसा लग रहा था मानो मृत्यु के इस क्षण में, ठाकुर साहब अपने पुराने सिर पर उन पवित्र फूलों की मालाओं को धारण करने की कोशिश कर रहे हों, जिनकी पंखुड़ियों को वे जीवित रहते हुए छूने का अवसर नहीं पा सके थे। और, रथ यात्रा के शोर और अफरा-तफरी के बीच भी, एक आवाज गूंजी। गहरी सहानुभूति और दुःख से भरी एक आवाज, “वे एक अच्छे और पवित्र व्यक्ति थे। इसीलिए उन्होंने पवित्र रथ के पहियों के नीचे मरना चुना! उन्हें पानी की एक आखिरी घूंट पिलाओ, उन्हें थोड़ा पानी पिलाओ...”
रथ के लिए रुकना संभव नहीं था, उसे अपनी यात्रा जारी रखनी ही थी। एक पल की भी देरी या पूर्व निर्धारित समय का दुरुपयोग देश के लिए विपत्ति और जनता के लिए मृत्यु का कारण बन सकता था, इसलिए उसे आगे बढ़ना ही था। ठाकुर साहब के रक्त से सने विशाल पहिए आगे बढ़ गए।

Seventeen

अनुपमा की सेहत बिगड़ने लगी। उसी समय, डॉ. रॉयचौधरी के पास मौजूद धन भी तेजी से घटने लगा।

वह काफी बड़ी रकम लेकर ब्रज आया था, लेकिन अब उसके पास नाममात्र का ही पैसा बचा था। फिर भी, उदार और दयालु डॉक्टर को इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था। अनुपमा उनके सारे पैसों का हिसाब-किताब रखती थी, लेकिन अब वह इतनी बीमार और कमजोर हो गई थी कि ऐसा करना उसके लिए नामुमकिन था। वह मुश्किल से अपना सिर भी उठा पाती थी।

क्लिनिक में डॉ. रॉयचौधरी ने सुना कि चुंगी के दाहिनी ओर वाली गली में एक आदमी मौत का इंतज़ार कर रहा है। उसके गले में केवल तुलसी की माला (कंठीमाला) थी। लेकिन डॉ. रॉयचौधरी को उसके पास जाने की कोई इच्छा नहीं हुई। वास्तव में, उनमें पहले जैसी कोई उत्सुकता नहीं थी।

फिर एक संदेश आया। बाणखंडी के महादेव मंदिर में मरणासन्न पड़े उस व्यक्ति को थोड़ा पानी पिलाने वाला भी कोई नहीं था। यह दुखद, भयावह और अत्यंत शर्मनाक था कि टूटे पंख वाला बदसूरत गिद्ध उस मरणासन्न व्यक्ति के ऊपर पेड़ पर बैठा देख रहा था।

तब भी डॉ. रॉयचौधरी टस से मस नहीं हुए।

एक दिन अनुपमा की देखभाल करने वाली राधेश्यामिनी ने सौदामिनी से कहा, “तुम अपनी माँ के पास बैठकर उनसे बात क्यों नहीं करतीं? क्या तुम्हें नहीं पता कि अगर तुम चाहो तो उन्हें कुछ और समय जीने के लिए प्रेरित कर सकती हो?” एक और दिन उन्होंने सौदामिनी से कहा, “तुम्हें कुछ समय के लिए अपने स्वार्थ को भूल जाना चाहिए। क्या तुम अपनी माँ के लिए इतना भी नहीं कर सकतीं?” बोलते समय उनका चेहरा बेहद विकृत हो गया था और उनकी आवाज़ में घृणा का भाव था। उनकी सहनशीलता की सीमा पार हो चुकी थी।

फिर उसने कहा: “यह केवल कुछ दिनों के लिए है। उसके बाद, धरती पर कोई भी शक्ति तुम्हारी माँ को जीवित नहीं रख पाएगी। उसके बाद, तुम जहाँ चाहो वहाँ जाने के लिए स्वतंत्र होगे, चाहे ईसाई हो, मुसलमान हो, सिख हो, पंजाबी हो, या जहाँ भी तुम चाहो... लेकिन...”

डॉ. रॉयचौधरी भी कुछ समय से बहुत व्याकुल और निराश थे। उनका शरीर झुक गया था और वे हमेशा अपने जूतों की ओर देखते रहते थे। वे वैसे तो कभी ज्यादा बोलने वाले व्यक्ति नहीं थे। वास्तव में वे बहुत कम बोलते थे। लेकिन अब तो वे दूसरों के चेहरों की ओर देखने से भी कतराते थे।

नहीं, वह अब इन बातों को और बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। समय एक तीर की तरह तेज़ी से बीत रहा था और शायद अब उसके प्रेमी के आने का समय हो गया था। आख़िरकार, काफ़ी समय बीत चुका था। हो सकता है वह पहले भी कई बार आ चुका हो और रंगाजी मंदिर के द्वार से

चला गया हो। जी हाँ, समय सचमुच एक तीर की तरह तेज़ी से भाग रहा था!

सुबह से ही आसमान बादलों से घिरा हुआ था और दोपहर होते ही तेज बारिश शुरू हो गई। बेमौसम बारिश। छत पर अपने बच्चे के साथ खेल रही मोरनी भागकर अंदर आ गई और सौदामिनी के शयनकक्ष में शरण ली। उसके पंख पीले पड़ गए थे और उसका छोटा बच्चा मोरनी के बच्चे की बजाय बत्तख के बच्चे जैसा लग रहा था!

दोपहर की बारिश और बादलों से घिरे वातावरण ने सौदामिनी के अवसाद और अकेलेपन की भयावह अनुभूति को और भी गहरा कर दिया। वह चाहती थी कि ब्रज के दो हजार राधेश्यामियों में से प्रत्येक के पास जाकर उनसे एक ही प्रश्न पूछे, "क्या आपने भी कभी मेरी जैसी ही स्थिति का सामना किया है?"

बारिश रुकने के बाद भी आसमान साफ नहीं हुआ। क्या उसे दोबारा कोशिश करनी चाहिए? वह सोचने लगी। ब्रज में निस्वार्थ बलिदान की इतनी सारी प्रेरणादायक कहानियां थीं जो अमर हो चुकी थीं। उन्हें उसके लिए एक उदाहरण होना चाहिए था।

लोग कहते हैं कि समय और प्रयास से बड़े बदलाव आ सकते हैं, यहाँ तक कि सोच की प्रक्रिया भी पूरी तरह बदल सकती है। वह सोच रही थी कि क्या वह पापी स्त्री है? क्या उसकी सोच ही पाप है? लेकिन पाप और पुण्य के ये उलझे हुए विचार कभी उसके अंतर्मन को छू नहीं पाए थे और न ही उसे ज़्यादा परेशान करते थे। उसने यह निष्कर्ष निकाला कि वह एक व्यभिचारी स्त्री है। उसने जीवन में सब कुछ खो दिया था जो उसके लिए महत्वपूर्ण था। फिर भी वह यहाँ थी, एक ऐसे प्रेम के लिए सब कुछ त्यागने को तैयार थी जो केवल असीम दुख ही ला सकता था। उसने खुद को अपने जीवन के एक महत्वपूर्ण मोड़ पर, एक चौराहे पर, नाज़ुक स्थिति में पाया। पवित्र नगर ब्रज में रहते हुए, वह अपने पति की सभी यादों को अपने मन से मिटाने के लिए सचेत रूप से तैयार थी। उसकी मुलाकात एक अधेड़ उम्र की राधेश्यामिनी से हुई जो गोपेश्वर में शालिग्राम पर विधिपूर्वक दूध चढ़ाने के बाद बेल के पेड़ की परिक्रमा कर रही थी। वह इस स्त्री से पहले भी कई बार मिल चुकी थी। उसने उस महिला को बुलाया और उसकी आँखों में सीधे देखते हुए पूछा, “मुझे एक बात बताइए। मैं जानती हूँ कि आप अपने पति की सारी यादें अपने मन से पूरी तरह नहीं मिटा सकतीं। लेकिन अब उनके गुज़रने के बाद इतने साल बीत चुके हैं। सच-सच बताइए, क्या आपने इतने सालों बाद भी उनके बारे में सारे विचार और यादें मिटाने की कोशिश नहीं की?”

उस महिला को सौदामिनी से ऐसे सवाल की उम्मीद नहीं थी। उसने जवाब दिया, "जब वो यादें धुंधली पड़ने लगती थीं, तो मैं हमेशा चमेली की पंखुड़ियों की मदद से उस धुंध को हटाने की कोशिश करती थी।"

“और तुम्हारी शारीरिक भूख का क्या? मुझे सच बताओ,” सौदामिनी ने बार-बार पूछा।

उसने सौदामिनी के चेहरे की ओर देखा। उसकी आँखों में आँसू भर आए। उसके हाथ पकड़कर उसने फिर पूछा, “क्या तुम सचमुच उस पुराने खोए हुए प्यार को फिर से पाना चाहती हो? मुझसे झूठ मत बोलो।”

वह महिला चौंकी हुई हिरनी की तरह ऊपर देखने लगी, और फिर सौदामिनी की छाती पर गिर

पड़ी, ठीक उसी तरह जैसे नदी के किनारे की नरम मिट्टी कटकर नदी में गिर जाती है।

जैसे ही स्त्री ने होश संभाला, सौदामिनी ने उससे फिर पूछा, "बताइए, आपने कुछ तो किया होगा, कुछ कदम उठाए होंगे, ताकि आप अकेलेपन की उस गहरी पीड़ा से खुद को बचा सकें। आपने क्या किया? आपको मुझे बताना होगा।"

उस महिला ने यथासंभव स्पष्टवादिता से उत्तर दिया। उन्होंने कहा, "पहले मैं चमेली के बागों में घूमती थी। बहुत समय पहले की बात है। तब मेरे बाल लंबे और काले थे। मैं चमेली के बागों में इधर-उधर घूमती और खुद से सवाल करने की कोशिश करती। यह आसान नहीं था। वास्तव में, यह एक क्रूर और पीड़ादायक काम था। मैं चमेली के बागों में घूमती थी, और मथुरा से नाव से आए कुछ युवक अक्रूर घाट पर उतरे थे, वे भी उन्हीं बागों में घूमते थे। वे मोरों को रसबरी खिलाने आते थे। एक दिन, उनमें से एक ने मुट्ठी भर फल मेरी तरफ फेंक दिए। फिर, अपने लंबे बालों को माथे से पीछे करते हुए, वह काफी देर तक मेरे पैरों को देखता रहा। उस घटना के बाद मैंने खुद को परखने के लिए कई दिनों तक चमेली के बाग में जाना जारी रखा। फिर एक दिन, एक और लड़के ने मुझ पर कुछ फल फेंके, और इस बार मेरे पैरों की बजाय, उस युवक ने मेरे लहराते काले बालों को देखा। लेकिन मैंने बाग में जाना नहीं छोड़ा। यह बहुत समय पहले की बात है। और अब, देखो, वही पैर खुरदुरे और फटे हुए हैं। और मेरे भजन आश्रम में भी उन्हें स्थायी स्थान मिल गया है। यकीन मानो..." यह कहते हुए वह सौदामिनी के पास आईं और फुसफुसाते हुए बोलीं, "कभी-कभी भजन आश्रम में बैठे-बैठे जब मैं अपनी माला गिनने के लिए अपने थैले में हाथ डालती हूँ, तो मुझे फिर से उन चमेली की पंखुड़ियों की कोमलता का एहसास होता है। जब मैं छोटी थी, लोग मेरी प्रशंसा करते हुए कहते थे कि मैं एक अच्छी, गुणी लड़की हूँ। आज भी लोग मेरा सम्मान करते हैं। लेकिन देखो, भले ही मेरा थैला पुराना और घिसा-पिटा हो गया है, फिर भी जब मैं अपनी माला गिनती हूँ, तो मुझे कभी-कभी चमेली की कोमलता का एहसास होता है..."

सौदामिनी उस महिला से और सवाल पूछकर उसे परेशान नहीं करना चाहती थी। हवा की गति भी बढ़ गई और मोरनी अपने बच्चों के साथ घबराई हुई सी लग रही थी। हवा की आवाज़ के बावजूद, सौदामिनी को अपनी माँ की खाँसी सुनाई दे रही थी। यह एक भयानक खाँसी थी। वह सोच रही थी कि क्या उसे अपनी माँ के कमरे में जाकर उनके सिर पर हाथ फेरना चाहिए। आख़िरकार, वह उसकी माँ थी, जिसने उसके लिए अनगिनत चिंताएँ और कष्ट सहे थे। और अब वह अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर थी।

उसने दरवाजे पर किसी के दस्तक देने की आवाज़ सुनी। जैसे ही उसने दरवाजा खोला, डॉ. रॉयचौधरी अंदर आ गए। उन्होंने कमरे का चारों ओर जायजा लिया। फिर उन्होंने कहा, "आपका कमरा बहुत बदहाल है। अभी तक मुझे आपकी ज़रूरतों का ध्यान रखने का समय ही नहीं मिला। दीवारों में बने ये छेद सुरंगों जैसे हो गए हैं। क्या आपने इन्हें नहीं देखा?"

जो डॉक्टर आमतौर पर बहुत कम बोलते थे, वे आज कुछ ज्यादा ही बातूनी लग रहे थे। सौदामिनी ने आश्चर्य से उनकी ओर देखा।

"आपको एक मोटा पर्दा लगा देना चाहिए। लोग यहाँ कुएँ से पानी भरने आते हैं।"

खिड़की से दूर हटकर, वह आया और उसके पास बैठ गया।
सौदामिनी ने देखा कि पिछले कुछ दिनों में उसके पिता दुबले हो गए थे। उनकी पीठ झुकी हुई थी, और उनकी त्वचा... उसने काफी समय से उन्हें ठीक से देखा भी नहीं था। उसने पाया कि जब तक वह उन्हें देर तक नहीं देख पाती थी, उसकी आँखों में आँसू भर आते थे।
“मैंने तुमसे बिना पूछे कुछ किया है,” उसने कहा। सौदामिनी को अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ!
“आपको बहुत आश्चर्य हो रहा है, है ना?” उन्होंने पूछा। “देखिए समय कितनी जल्दी बीत जाता है। पिछले कुछ दिनों में कितने लोग ब्रज छोड़कर हमेशा के लिए चले गए। ठाकुर साहब का भी अचानक देहांत हो गया। कौन जाने हमारा समय कब आएगा? जब वह अपरिहार्य समय आएगा, चुपचाप, चोर की तरह...”
वह कुछ देर चुप रहे। सौदामिनी ने सोचा, यही तो उसके पिता हैं। एक ऐसे व्यक्ति जिनका सबसे बड़ा साथी था असीम धैर्य, शांत बुद्धि और सहज शक्ति। यही उसके पिता थे जो हमेशा निस्वार्थ मार्ग पर चलते थे।
उन्होंने फिर कहा, “मेरे हाथों को देखो। मुझे कुछ समय से ऐसा महसूस हो रहा है कि ये हाथ कमजोर होते जा रहे हैं। और कुछ समय बाद मैं बेकार हो जाऊंगा, और अपने बाकी दिन कहीं बैठकर, एक बेकार बोझ की तरह सिमटकर बिताने पड़ेंगे।”
सौदामिनी ने ऊपर उसकी ओर देखा। उसने देखा कि उसकी आँखों के नीचे काले घेरे थे। उसे याद आया कि उसने कलाकार चंद्रभानु राकेश की आँखों के नीचे ठीक ऐसे ही घेरे देखे थे, जब वह अपनी अष्टधातु की मूर्तियाँ तराश रहा था। शायद, प्राचीन मूर्तिकारों की आँखों के नीचे भी चार सौ साल पहले तराशते समय ऐसे ही घेरे होते होंगे! यह एक विचित्र बात थी।
“मैंने तुम्हारे उस दोस्त को चिट्ठी लिखी है,” उसके पिता ने कहा। “अब उसका यहाँ आना ज़रूरी है।” वे सौदामिनी के पास आए और अपने सूखे हाथों से देर तक उसके बालों को सहलाते रहे। “अब उससे आमने-सामने मिलने का समय आ गया है। यह मत सोचो कि किसी ने हम पर यह समय थोपा है। नहीं, यह स्वाभाविक रूप से हुआ है। अब उठो और तैयार हो जाओ।”
वह सोचने लगी कि क्या वह बहुत कृतघ्न रही थी, क्या उसने ऐसा कुछ किया था जो उसके माता-पिता को पसंद नहीं आया था। उसे अपने बचपन के दिन याद आ गए। बचपन से ही उसे यह एहसास था कि जानबूझकर दूसरों को दुख पहुँचाना कितना क्रूर होता है। उसे याद आया कि अनुपमा ने एक बार उससे कहा था, "तुम मेरी आँखों की रोशनी हो, मेरी बच्ची, तुम मेरा अनमोल रत्न हो।"
और कई वर्षों तक वह अपनी मां की आंखों का तारा रही थी।
सुब्रतो, उसके पति, के जीवन में आने और सच्चे प्रेम की दिव्यता का अनुभव कराने से पहले भी अनुपमा के कई चाहने वाले थे। लेकिन चाहने वालों की मिन्नतों और आग्रहों के बावजूद, उसने कभी उनकी बातों में नहीं आई, कभी किसी को अपने शरीर के साथ छेड़छाड़ करने की इजाज़त नहीं दी। नहीं, उसने कभी ऐसा कुछ नहीं किया था। तो फिर वह इस स्थिति में क्यों थी? यह इसलिए तो नहीं हो सकता कि वह अनुपमा की लाडली थी। तो फिर यह इसलिए होना चाहिए

कि वह हमेशा से बुरी थी, क्योंकि बचपन से ही उसका स्वभाव ऐसा था।
आकाश में फिर से बादल छा गए। इस बार मोरनी अपने बच्चे को लेकर उड़ गई, और सौदामिनी अंधेरे में दुबककर बैठी अपनी तन्हाई के बारे में सोचती रही।
धीरे-धीरे सर्दी का मौसम शुरू हो गया और राधेश्यामियों की भीड़ दर्द और पीड़ा तथा सूजे हुए पैरों की शिकायत लेकर क्लिनिक में जमा हो गई।
इन सुबहों में यमुना नदी एक अलौकिक प्रकाश से जगमगा उठती थी।
ऐसा लग रहा था मानो सब कुछ एक ही समय पर गड़बड़ हो रहा हो। उसके आने का समय लगभग हो चुका था, और सौदामिनी मथुरा से आती हर नाव को उत्सुकता से देख रही थी। हर बार जब वह घने कोहरे को चीरती हुई नाव की रोशनी देखती, या चप्पू की पानी पर पड़ने वाली हर आवाज़ सुनती, तो वह एक अजीब सी घबराहट और उत्तेजना से उछल पड़ती। लेकिन फिर उसने सोचा, आखिर यह उत्तेजना किस बात की? उसने सोचा था कि उसकी कुछ भावनाएँ और संवेदनाएँ बहुत पहले ही सूख चुकी थीं। लेकिन उसे एहसास हुआ कि वह गलत थी।
वह ईसाई युवक, जो उसे एक नए और स्वस्थ मार्ग पर ले जाने का सपना देख रहा था, इस पत्र का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। मथुरा के अक्रूर घाट से एक नाव वृंदावन के केसीघाट पर उसी दिन आकर रुकी, जिस दिन विदेशियों के एक समूह ने एक सुनसान मंदिर में प्रवेश न मिलने पर हंगामा मचा दिया था। यह अमावस्या की काली रात थी, महीने के कृष्ण पक्ष का आखिरी दिन। डॉ. रॉयचौधरी देर रात तक क्लिनिक में सूजे हुए पैरों वाली बुजुर्ग महिला का इलाज कर रहे थे। फिर, कुएँ पर स्नान करने के बाद, उन्होंने चौकीदार को चाबियाँ सौंप दीं और ऊपर चले गए। सौदामिनी इससे बहुत पहले ही सो गई थी। यह असामान्य था, क्योंकि उसे लंबे समय से नींद नहीं आ रही थी।
अचानक किसी के दस्तक देने की आवाज़ आई और वह चौंककर जाग गई। कोई उसके दरवाजे पर दस्तक दे रहा था। शायद कोई मरीज़ औषधालय आया होगा, शायद पैरों में सूजन वाली उन राधेश्यामियों में से कोई, जो दर्द सहन न कर पाने के कारण आधी रात को भी इलाज के लिए आई होंगी... फिर भी यही राधेश्यामियां सर्दियों की कड़ाके की ठंड में भी सड़े हुए आलू ढूंढने के लिए अस्तबल जाती थीं! ये औरतें कितना विचित्र जीवन जीती थीं!
वह उठी और दरवाजा खोला, तो देखा कि डॉ. रॉयचौधरी हाथ में लालटेन लिए वहाँ खड़े थे। उनके पैर नंगे थे।
“मुझे लगता है कि आप बीमार राधेश्यामियों के लिए मेरा कमरा चाहते हैं,” सौदामिनी ने कहा। “मुझे थोड़ा समय दीजिए, मैं अपना पलंग ऊपर ले जाऊंगी।”
डॉ. रॉयचौधरी ने दीपक की बाती को लपेट दिया।
“नहीं, तुम्हें अपना पलंग बदलने की ज़रूरत नहीं है। मैं कुछ खबर लेकर आया हूँ,” उसके पिता ने उत्तर दिया। “तुम्हारा वह दोस्त आ गया है। वह घाट के पास वैष्णव छतरी के पास तुम्हारा इंतज़ार कर रहा है। आने का यह अच्छा समय नहीं है, लेकिन कोई चारा नहीं है। अनुपमा सो रही है और सुबह ही जागेगी। जाओ और अपने आप को गर्म शॉल में अच्छे से लपेट लो और मेरे पीछे आओ।”

लेकिन... क्या मुझे उनसे मिलना ही पड़ेगा...?
"जाओ, अपना शॉल ले आओ और मेरे पीछे आओ," डॉ. रॉयचौधरी ने दोहराया।
शॉल ओढ़ते हुए वह मन ही मन बुदबुदाई: तुमने मुझे सचमुच समझ लिया है। इंसान को खुद को ठीक इसी तरह परखना चाहिए।
पिता और पुत्री बाहर निकले। आसमान में बादल छाए हुए थे और शायद फिर से बारिश होने वाली थी। उन्होंने कुछ राधेश्यामियों को ठंड से बचने के लिए गर्म कपड़े पहने सड़क किनारे बैठे देखा। वे रंगाजी मंदिर से आती शहनाई की मधुर ध्वनि सुन रहे थे। हालाँकि उन्होंने सौदामिनी और उनके पिता को लालटेन लेकर जाते हुए देखा होगा, लेकिन उन्होंने उनके प्रति कोई जिज्ञासा नहीं दिखाई। वे मंदिर से निकलने वाले सुंदर संगीत में मग्न थे। घाट पर एक नाव लंगर डाले खड़ी थी, हवा के कारण उसके दीपक की रोशनी टिमटिमा रही थी।
डॉ. रॉयचौधरी बोले, "जाओ, मैं यहीं इंतजार करूंगा। क्या तुम्हें वह नाव दिख रही है? जाओ।"
वह आगे बढ़ी। हवा की गति बढ़ गई और सब कुछ रेत से ढक गया। लेकिन उसे दूर अपने पिता लालटेन लिए खड़े दिखाई दिए। कुछ उसके पैरों से लिपट गया और वह चौंक गई। लेकिन वह केवल कपड़े का एक टुकड़ा था जिसे शायद कोई पीछे छोड़ गया था। उसने नीचे देखा तो पाया कि वह एक महिला की रंगीन चादर थी। किसी मृत महिला की। एक भाग्यशाली महिला जिसकी मृत्यु उसके पति के जीवित रहते हुई थी। उसने इसे तब पहना होगा जब उसे दाह संस्कार के लिए यहाँ लाया गया था। इस समय तक, उसके पिता, अपने लालटेन के साथ, बढ़ते तूफान से उड़कर आई रेत में दबकर अदृश्य हो गए थे। वह नाव के पास आई और वह उससे उतरकर रेत पर खड़े हो गए।
उसके पास आकर उसने उसकी ओर हाथ बढ़ाया, और उसकी बांह का सहारा लेकर वह नाव पर चढ़ गई। नाव मजबूत थी और हवा में धीरे-धीरे हिल रही थी। लेकिन अचानक तूफान तेज होने से नाव में ज़ोरदार कंपन होने लगी।
तो, अंततः यही था। लेकिन क्या वह सचमुच इसी की तलाश में थी? क्या यह सचमुच सच था कि यह आदमी, जो उसके इतने करीब बैठा था कि वह उसकी हर सांस महसूस कर सकती थी, वही उसके लिए पूरी दुनिया था?
ब्रज की पवित्र धूल उसके लिए इतनी अर्थहीन कैसे हो सकती थी?
उसके माथे पर पसीना आने लगा! वे दोनों साथ बैठ गए।
उसने अपने पास बैठे उस आदमी की ओर देखा और बोली, "इस पवित्र भूमि के प्रति मेरे मन में आपके सिवा कोई आकर्षण नहीं है... मेरी सारी पुरानी यादें धूल से ढक गई हैं और धुंधली हो गई हैं। मैंने अपने दिवंगत पति को किसी और चीज़ से ज़्यादा दुश्मन की तरह देखना सीख लिया है, और मैंने उनकी कमियों को भी खोजना सीख लिया है। सच कहूँ तो, मैं उनसे इतनी मोहित थी कि मुझे उनमें कोई कमी नज़र ही नहीं आई। ज़रा सोचिए, मुझे उस क्रूरता, उस अन्याय के बारे में सोचकर ही सांत्वना ढूंढनी पड़ी है।"
हवा तेज हो गई और यमुना नदी की रेत बवंडर की तरह उड़ने लगी, जिससे चारों ओर अफरा-तफरी मच गई। रंगाजी की शहनाई की धुन हवा में घुल गई।

“मुझे गले लगाओ। मुझे जितना हो सके उतना कसकर गले लगाओ! तुम रो रहे हो... लोग कहते हैं कि तुम ईसाई हो। हाँ, तुम ईसाई हो। लेकिन देखो, तुम्हारे शरीर की गर्माहट मेरे दिल को छू रही है, बिल्कुल वैसी ही। यकीन मानो, यह मेरे प्यारे पति सुब्रतो की गर्माहट जैसी है। बिलकुल वैसी ही!”

उसने अपना सारा संयम खो दिया। गरिमा और आत्मसंयम के सारे विचार त्यागकर, वह भावुक होकर चिल्लाई, “मुझे चूम लो! मुझे चूम लो! तुम्हारा स्पर्श वही पुराना स्पर्श है...” और नदी के किनारे की कोमल, लचीली मिट्टी की तरह, वह अपने प्रेमी की छाती पर गिर पड़ी।

“मैं अब आपसे तर्कसंगत ढंग से बात करने की स्थिति में नहीं हूँ। इस समय यह असंभव है। मैं इसका बेसब्री से इंतजार कर रहा था। अब जाकर मुझे एहसास हुआ कि मैं कितना बेसब्री से इंतजार कर रहा था!”

हवा तेज़ होती जा रही थी और यमुना की लहरों पर मज़बूत नाव खतरनाक तरीके से हिलने लगी। आसमान बिजली की कड़क से जगमगा उठा। नाव पर ज़्यादा देर रहना सुरक्षित नहीं था।

“चलो, उस सुनसान झोपड़ी में चलते हैं। तूफान शुरू होने ही वाला है।”

वे नाव से उतरे और धीर समीर घाट पर बनी झोपड़ी की ओर चल पड़े। नदी के किनारे की रेत तेज़ी से उड़ने लगी। उन्होंने यमुना को पहले कभी इतने उग्र रूप में नहीं देखा था। तूफ़ान की भयंकर लहरें हर कदम पर उनका रास्ता रोक रही थीं, जो रेत के बवंडर की तरह उठकर उनके शरीर से टकरा रही थीं। बिजली की चमक से यमुना अपने सबसे भयानक रूप में दिखाई दे रही थी, और ऐसा लग रहा था कि किसी भी क्षण शक्तिशाली और क्रोधित लहरें घाटों से टकराकर उन्हें अपनी गोद में खींच लेंगी।

वे दो असहाय बच्चों की तरह सुनसान झोपड़ी की ओर भागने लगे। जैसे-जैसे आधी रात नजदीक आती गई, भयानक तूफान और भी तीव्र होता गया। अंततः, वे केसिघाट स्थित एक पुरानी झोपड़ी में पहुँचे और वहाँ शरण ली।

सौदामिनी सोचने लगी कि क्या उसने सचमुच सब कुछ छोड़कर यही चाहा था। उसने कहा, “तुम्हें भी कभी-कभी अकेलेपन का वो भयानक एहसास हुआ होगा। तुम भी अब जवान नहीं हो। इस अंधेरे में भी, मुझे तुम्हारे बालों में चांदी की लकीरें दिखाई दे रही हैं...”

उसने कुछ नहीं कहा, बस नीचे देखता रहा।

“नहीं, नहीं। बुरा मानने की कोई ज़रूरत नहीं है। अब सब कुछ सामान्य हो गया है। इस पल सब कुछ बहुत सरल हो गया है। मुझे चूम लो, या उन भावुक प्रेमियों की तरह मुझे गले लगा लो। इस पल सब कुछ सरल हो गया है। मैं इस दिन का बेसब्री से इंतज़ार कर रही थी।”

तुम रो रहे हो।

“जानते हो मैंने क्या सोचा था? मैंने सोचा था कि आज का दिन मुझे मेरे जीवन की दिशा दिखाएगा। आज सारी झिझक और कठोर सिद्धांत मिट जाएंगे। ज़रा करीब आओ। आज बाहर का तूफान और मेरे दिल का उथल-पुथल एक हो गए हैं। मैं एक राक्षस, एक शैतान बन गया हूँ! तुम ईसाई हो और मैं हिंदू। फिर भी हम दोनों के बीच एक जुनून, एक प्यार है।”

तेज हवा के एक झोंके ने झोपड़ी की पुरानी दीवार को उखाड़ फेंकने की धमकी दी।

"क्या आप जानते हैं, मुझे ऐसा लगता है कि जो लोग आपको एक अलग श्रेणी में रखने की कोशिश करते हैं, उनकी तुलना एक क्रूर कसाई से की जाए!"

फिर, अपना सिर घुटनों के बीच रखकर, वह एक छोटी बच्ची की तरह सिसकियाँ लेने लगी। हवा और तेज़ हो गई, और तूफ़ानी नदी अपने साथ बहाकर लाई लकड़ियों के पुल से टकराने की आवाज़ सुनाई दी। यमुना के तूफ़ानी पानी में बवंडर के पास कोई डर से चीख रहा था। पवित्र नदी के उफान पर आने पर हर साल कुछ राधेश्यामियों की उस जगह पर मृत्यु हो जाती है। आज पानी में मानो जान आ गई थी, मानो वह बेसुध हो गया हो!

उन्हें टूटी हुई दीवार के पास कुछ लुढ़कने की आवाज़ सुनाई दी। सौदामिनी सतर्क हो गई। यह वही लालटेन थी जिसे उसके पिता अपने साथ लाए थे। क्या वह अब भी घाट की सीढ़ियों पर बैठे थे?

उसने बाहर देखा, पर कोई नहीं, कोई प्रेत जैसी आकृति भी वहाँ बैठी हुई नहीं दिखी। रूई के टुकड़ों जैसी कोई चीज़ झोपड़ी के खुले दरवाजे से अंदर आ गई। शायद किसी राधेश्याम ने अपने अंतिम संस्कार के लिए पैसे अपने पलंग में छिपा रखे थे, और कुछ लालची लोगों ने उसका पलंग फाड़कर पैसे हड़प लिए थे...

आज, इस समय, वह सौदामिनी को देखते और सुनते हुए संतुष्ट प्रतीत हो रहा था। वह एक बच्चे जैसी जिज्ञासा से उसे निहार रहा था।

सौदामिनी वापस आई और अपने प्रेमी के सामने घुटने टेककर बैठ गई। उसने कहा, “चलो उस लकड़ी के तख्ते को यहाँ लाते हैं। कुछ लड़कों ने उस पर माधव नारायण मंदिर के पुजारी के घोटालों का ब्यौरा लिखा था। किसी ने इसे यहाँ फेंक दिया है। हम इस पर थोड़ी देर आराम कर सकते हैं, कम से कम तूफान के शांत होने तक। देखो यह कितना भयानक हो गया है। ये उग्र लहरें हमारी तरफ आती हुई प्रतीत हो रही हैं। बहुत समय पहले मैंने ठीक ऐसा ही एक दृश्य सपने में देखा था। विशाल लहरों के शिखर क्रूर कसाइयों के सिर जैसे लग रहे थे!”

सुनो, मेरी माँ ज़्यादा दिन तक जीवित नहीं रहेंगी। और इसके लिए मैं ज़िम्मेदार हूँ। और जब मैं अपनी माँ के बारे में सोचती हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे वो लहरें मेरी ओर तेज़ी से बढ़ रही हैं... मुझे शक्तिशाली घोड़ों के खुरों जैसी आवाज़ सुनाई देती है! वो भयानक, डरावनी आवाज़ मेरी ओर आ रही है! आओ, पास आओ! मुझे चूमो, या मुझे कसकर गले लगाओ और मेरी गर्माहट महसूस करो! तुम्हें शायद यह मामूली बात लगे। लेकिन आज मेरे लिए यह बहुत ज़रूरी है।

आप यह नहीं समझ सकते कि इसका मेरे लिए क्या महत्व है।

"आओ, और करीब आओ।"

वे लकड़ी का वह तख्ता लाए जिस पर ‘माधव नारायण’ पुजारियों के घोटालों का ब्यौरा लिखा था, और उस पर एक-दूसरे के बेहद करीब बैठ गए। उस समय, तख्ते पर बैठे हुए वे दो शुद्ध फूलों की तरह लग रहे थे।

रात के आखिरी पल बीत रहे थे। वह बाहर गई। रात के दौरान तूफान कुछ देर के लिए शांत हो गया था। लेकिन अब भयानक तूफान फिर से हमला करने के लिए तैयार लग रहा था। नदी का

जलस्तर फिर से बढ़ रहा था। वह आगे बढ़ी। इस कोलाहल के बीच से अकेलेपन की एक गहरी और दुखभरी चीख निकली। एक अनकहा दुख उसके दिल को चीर रहा था। क्या सच में यही वह चाहती थी, उसने फिर सोचा, क्या यही सब कुछ था?

सब कुछ अजीब और अपरिचित सा लग रहा था। और उसके मन का क्या? उसका अवचेतन मन इस मुलाकात का बेसब्री से इंतजार कर रहा था।

लेकिन यह बहुप्रतीक्षित मुलाकात कुछ भी नहीं कर सकी, उसके अंतर्मन पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकी... क्या कभी कोई और इस तरह खुद से पराजित हुआ था?

उसे एक बार फिर, पहले से कहीं अधिक स्पष्ट रूप से, शक्तिशाली घोड़ों के खुरों की वह भयानक आवाज़ सुनाई दी! और एक निहत्थे और घायल सैनिक की तरह, वह उसे सुनती रही...

समय कम होता जा रहा था। क्या उसे वापस जाना चाहिए? लेकिन कहाँ वापस जाना चाहिए? क्या उसे अपने मृत पति की उन दर्दनाक यादों में वापस जाना चाहिए?

उसने पीछे मुड़कर उस जर्जर झोपड़ी को देखा जिसे वह पीछे छोड़ आई थी। नहीं, नहीं! अब समय नहीं बचा था। अनुपमा की मृत्यु निकट थी... आखिर ऐसा क्यों हुआ? उसके जैसी कई महिलाओं ने बड़े-बड़े उपदेश दिए थे। अभी कुछ ही दिन पहले, देवघर के संन्यासी ने इतने प्रेरणादायक वचन कहे थे, और राधेश्यामियों ने उनकी बातें खुशी के आँसू के साथ सुनी थीं, हर शब्द को दिल से आत्मसात किया था। उन्होंने उनके चरणों की धूल अपने सिर पर मली थी और कहा था, “यहाँ बैठे-बैठे मेरा शरीर सूख जाए, मेरी हड्डियाँ और मांस चूर-चूर हो जाएँ! परन्तु जब तक मुझे पौराणिक कल्प वृक्ष के कुछ अनमोल ज्ञान प्राप्त न हो जाए, मैं इस आसन पर अडिग रहूँगी।”

“अत्यधिक प्रेम और बंधन से दूर हो जाओ! क्या भगवान महादेव के अर्धनारीश्वर रूप ने कभी अपनी प्रेमिका का चेहरा देखा है?”

“सत्य को सोने के पात्र से ढक दिया गया है। हे सूर्य देव, उस पर्दे को हटा दीजिए ताकि मैं शाश्वत सत्य को देख और समझ सकूँ!”

कई ऐसी प्रेरणादायक बातें कही गईं। लेकिन आज, इस नाजुक घड़ी में, उन पर इनमें से किसी भी बात का असर क्यों नहीं हुआ?

नदी की लहरें उठती हुई उसकी ओर बढ़ रही थीं और तेज़ हवा के अचानक झोंकों से आगे बढ़ना डरावना लग रहा था। लगभग सुबह हो चुकी थी। अनुपमा मर जाएगी और वही जीतेगी। जैसे ही उसने स्वर्ग के बारे में सोचा, उसकी आत्मा के सारे बंद द्वार खुल गए और उसके सारे भ्रम दूर हो गए। एक पल के लिए, एक अलौकिक प्रकाश ने उसकी आत्मा के हर खुले द्वार को भयभीत कर दिया।

नहीं, नहीं! वह अनुपमा को इस तरह जीत हासिल करने नहीं दे सकती थी! लेकिन क्या यह सिर्फ चिंता की वजह से था?

उसने कुछ शब्द फुसफुसाए, जो उस ईसाई युवक के लिए थे, जिसे वह अपने पूरे दिल से प्यार करती थी, "मुझे माफ कर दो और वापस चले जाओ। मुझे माफ कर दो, कृपया मुझे माफ कर दो।"

बारिश की बड़ी-बड़ी बूँदें गिरने लगीं और बादल नीचे छा गए। ऐसा लग रहा था मानो तेज़ हवा उसके कमज़ोर शरीर पर टकराकर उसे चीर डालेगी, और बिजली और गरज पीपर के तालाब पर गरज रही थी। ऐसी भयानक तैयारियों की कोई ज़रूरत नहीं थी! प्रकृति को एक कमज़ोर और नाज़ुक बच्ची की जान बचाने के लिए इतना भयानक कहर बरपाने की कोई ज़रूरत नहीं थी!

वह चलती रही। ऐसा मौका उसे दोबारा कभी नहीं मिलेगा। वो लहरें उसकी ओर तेज़ी से बढ़ रही थीं! वे नदी के उस खतरनाक और डरावने हिस्से में मिल रही थीं! वह आगे बढ़ती रही।

उसे पीपर के तालाब के पास से एक पुकार सुनाई दी: “राधे दंडवत, राधा की खातिर, आगे मत बढ़ो! यमुना में बाढ़ आ रही है। आगे मत बढ़ो!”

वह समझ गई थी कि क्या हो रहा है। सांप पकड़ने वाला मौसम का पूरा फायदा उठा रहा था। "राधे दंडवत" शब्द बार-बार गूंज रहे थे।

सोचने का समय नहीं बचा था। लेकिन आखिरी क्षण तक, जब तक वह पानी के बिल्कुल किनारे तक नहीं पहुँच गई, एक सवाल उसे परेशान करता रहा, सिर्फ एक सवाल उसे अंदर तक झकझोरता रहा: क्यों? ऐसा क्यों होना था?

उसका कोई निशान नहीं मिला, सिवाय उसके सफेद विधवा वस्त्र के, जो सुबह-सुबह एक जीवित पति वाली महिला की रंगीन चादर में उलझा हुआ मिला था। लेकिन जैसे-जैसे सुबह की रोशनी तेज होती गई, उसके वस्त्र के साथ एक अजीब घटना घटी। वहाँ जमा जिज्ञासु भीड़ के पैरों तले रौंदी गई चादर एक लेखन पट्टिका जैसी दिखने लगी! और जब उत्सुक राधेश्यामियों की जिज्ञासा कुछ हद तक शांत हुई, तो यह पत्थर की लेखन पट्टिका अफवाहों का केंद्र बन गई। कई सनसनीखेज कहानियां सुनाई गईं, और कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्हें और अधिक अफवाहें खोदने में शैतानी आनंद आता था।

दरअसल, अंत में, उसकी यह सफेद चादर सचमुच एक ऐसी लेखन-पत्थर बन गई जिस पर कई घोटालों को उकेरा गया!

Eighteen

जल्द ही, उस दिन यमुना नदी द्वारा मचाई गई तबाही के सभी निशान मिट गए।
नदी के चिकने रेत पर बने एक ऊंचे चबूतरे पर बैठे देवघर के बाबा ने एक बार फिर कई ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक उपदेश दिए। देश-विदेश से आए भक्तों के असंख्य तंबू स्वच्छ और पवित्र रेत के विशाल मैदान में फैले हुए थे।
सौदामिनी की मृत्यु के बाद कुछ दिनों तक कलाकार राकेश यमुना नदी के किनारे रेत में भटकता रहा। फिर वह अष्टसखी मंदिर की सीढ़ियों पर बैठ गया और एक चित्र बनाने लगा। अतीला पहाड़ी पर तीर्थयात्रियों की तलाश में घूमने वाले पांडों ने उसका मज़ाक उड़ाते हुए कहा, "राकेश साहब, आप पैरों के निशान बना रहे हैं! आपको क्या लगता है, यह चित्र कौन खरीदेगा?"
ऐसा लगा मानो किसी ने सोए हुए सांप को जगा दिया हो! कलाकार चंद्रभानु राकेश गुस्से और घबराहट में उछल पड़े। वे चिल्लाए, "हाँ, आप सही कह रहे हैं, ये पदचिह्न हैं। आगे आओ, तुममें से कोई भी, यहाँ आओ। मैंने अभी-अभी यमुना की रेत से ये पदचिह्न उठाए हैं। आओ और मुझे दिखाओ, तुममें से कोई भी, मुझे दिखाओ कि इनमें से कौन से पदचिह्न ईसाई के हैं, कौन से मुसलमान के और कौन से हिंदू के। चलो, मुझे दिखाओ!"
मज़ाक उड़ाते हुए पांडों का समूह एक शब्द भी नहीं बोल सका! दरअसल, उन्होंने जो सुना था, और अब यह सही प्रतीत हो रहा था, कि कलाकार रोटी के एक टुकड़े के लिए सतरों में भटकता रहता है, और मानसिक रूप से बीमार व्यक्ति की तरह इन दिनों राधेश्यामियों की झोपड़ियों के आसपास घूमता रहता है। एक दिन तो उसने अपनी इकलौती चादर भी उतारकर एक सो रहे बूढ़े राधेश्यामियों को ओढ़ा दी थी। एक दिन उसे मथुरा रेलवे जंक्शन के पास देखा गया। जंक्शन के आसपास हमेशा जमा रहने वाले कई पांडों में से एक ने उससे पूछा, "आप जा रहे हैं? अगर हम आपको कहीं देख भी लें, तो कैसे पहचानेंगे? आप कहाँ रहेंगे?"
बूढ़े कलाकार ने मुस्कुरा दिया। "क्यों, क्या आपको कला प्रेमी रामकृष्ण दास की कही बात याद नहीं आती, जिन्होंने मुगल मूर्तिकला के अंतिम प्रतिनिधि उस्ताद रामप्रसादजी के बारे में कहा था? उन्होंने कहा था, 'वे सच्चे साधु, सच्चे दार्शनिक और सच्चे सिद्धांतकार हैं, क्योंकि वास्तविक वास्तविकता को समझना ही वास्तविक सौंदर्य को समझना है। इसीलिए दार्शनिक और कलाकार के बीच एक रिश्ता होता है। ईश्वर ने हाथों को जो कुछ दिया, वही शरीर और वाणी को भी दिया। समय की मजबूरी के कारण उन्हें एक साधारण कलाकार का जीवन जीना पड़ रहा है।' क्या आपको अपने रामकृष्ण के ये शब्द याद नहीं आते? महान मुगल मूर्तिकारों में से अंतिम को पहचानने का केवल एक ही तरीका था: घनी दाढ़ी वाला चेहरा, गंदी धोती लेकिन सीने पर साफ दुपट्टा। उन्होंने जूते पहने हों या न पहने हों, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। आप मुगल मूर्तिकारों में

से अंतिम रामप्रसादजी को पहचानने में असफल नहीं हो सकते थे! लेकिन आप मुझे कैसे पहचानेंगे? मैं किसी महान कला रूप का अंतिम प्रतिनिधि नहीं हूँ। मैं तो बस प्राचीन काल का एक बेकार वंशज हूँ। ब्रज के अष्टधातु कलाकार। रामप्रसादजी को उनके साफ दुपट्टे से पहचानना आसान था। मेरे सीने पर कोई चादर नहीं है। यह हमेशा ऐसे ही खुला रहेगा जैसे अभी दिख रहा है। लगता है श्री रामप्रसादजी अपने सिर पर गांधी टोपी भी पहनते थे! सुनिए, शायद आपको मेरे सिर पर भी वैसी ही गांधी टोपी देखने को मिले।

एकदम साफ-सुथरी गांधी टोपी!

वे सब एक साथ चिल्लाए, "गांधी टोपी?"

“जी हां, एक गांधी टोपी। एक साफ-सुथरी गांधी टोपी!”

Afterword

मुझे याद है कि इंदिरा गोस्वामी में हमेशा एक असीम, बल्कि चौंका देने वाली जीवंतता झलकती थी। इसकी शुरुआत उनके बेबाक घुंघराले बालों से होती थी, जो किसी भी तरह के बंधन या नियम को तोड़ते हुए बेकाबू हो जाते थे। फिर उनकी मुस्कान, एक धनुषाकार मुस्कान जो भीड़ भरे कमरे में भी तीर की तरह पहुंच जाती थी। उनकी चूड़ियों और सिंदूरी बिंदी में लाल रंग; शक्ति का प्रतीक। दिल्ली में उनके प्रवास के दौरान, सेमिनारों और पाठों में, या इंडिया इंटरनेशनल सेंटर में, हमारी अक्सर मुलाकात होती थी और वे हमेशा एक ऐसी गर्मजोशी भरी, दोधारी प्रशंसा करती थीं जिससे मेरे चेहरे पर भी मुस्कान आ जाती थी। जीवंतता और सक्रियता की यह भावना इंदिरा गोस्वामी के हर काम में झलकती थी। एक विद्वान, शिक्षाविद, अनुवादक, कवयित्री, उपन्यासकार और कार्यकर्ता के रूप में, उन्होंने अपने हर कार्य में जुनून, विश्वास और समर्पण का भाव डाला।

असमिया प्रशंसकों के बीच मामोनी बैदेव या मामोनी रायसोम गोस्वामी के नाम से मशहूर, उनका जन्म गुवाहाटी में हुआ था और जीवन यात्रा में कई अन्य स्थानों से प्रेरित और प्रभावित होने के बावजूद वे अपनी जड़ों से जुड़ी रहीं। उनकी पहली कहानी तेरह वर्ष की आयु में प्रकाशित हुई थी। अवसाद से ग्रस्त होने के कारण, उन्होंने किशोरावस्था में बहुत ही कठिन समय बिताया। उनके पति, माधवन रायसोम अयंगर, शादी के महज अठारह महीने बाद एक कार दुर्घटना में मारे गए। इसके बाद उन्होंने गंभीरता से लिखना शुरू किया और 'अहीरोन' और 'चेनबार स्रोत' (चेनाब की धारा) प्रकाशित की। विधवा के रूप में उनके अनुभवों और वृंदावन में किए गए शोध कार्य ने 'नीलकंठी ब्रज' (नीले गले वाले देवता) के प्रकाशन को प्रेरित किया, जिसमें वृंदावन और हिंदू समाज में विधवाओं की स्थिति का विश्लेषण किया गया था। रामायण अध्ययन में गोस्वामी की रुचि ने उन्हें तुलसीदास रामायण और माधव कंदली की मध्यकालीन असमिया रामायण (गंगा से ब्रह्मपुत्र तक) का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए प्रेरित किया।

इस दौर के बाद, जब इंदिरा गोस्वामी दिल्ली विश्वविद्यालय में असमिया विभाग की प्रमुख थीं, तब हमारी कभी-कभार होने वाली लेकिन ज्ञानवर्धक मित्रता शुरू हुई। हम दोनों ही युवा विधवा थीं, दोनों ही महिला लेखिकाएँ थीं, और हम दोनों के बीच एक अनकही सहानुभूति थी। मैंने 'दोतल हाथी उये खुवा हौदा' (हाथी का दीमक लगा हौदा) तब पढ़ी जब इसका अंग्रेजी अनुवाद प्रकाशित हुआ था। तब तक उन्हें एक गंभीर साहित्यिक हस्ती के रूप में पहचान मिल चुकी थी, और उन्हें

1982 में साहित्य अकादमी पुरस्कार और 2000 में ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ। मामोनी ने राजनीतिक दृढ़ विश्वास के कारण 2002 में पद्म श्री पुरस्कार को अस्वीकार कर दिया। 2008 में, उन्हें प्रधान प्रिंस क्लॉस पुरस्कार से सम्मानित किया गया, जो एक अद्वितीय लेखिका, कार्यकर्ता और राजनीतिक मध्यस्थ के लिए एक बड़ा सम्मान है।

2009 में, डॉ. मालश्री लाल और मैंने सह-संपादित संकलन, 'सीता की खोज - पौराणिक कथाओं का पुनरावलोकन' प्रकाशित किया। इस पुस्तक में इंदिरा गोस्वामी के साथ 'रामायण, मानवीय कहानी' पर एक संवाद शामिल था। इस संवाद में उन्होंने तंत्र और सूफी कविता, विशेष रूप से जहांगीर के समय में रहने वाले और लिखने वाले मुल्ला मसीहा की रचनाओं में अपनी प्रारंभिक रुचि के बारे में बताया। उन्होंने उन पुस्तकों के बारे में भी बताया जिन पर वह काम कर रही थीं - 'रावण की यात्रा' और 'थेंगफाखरी', जो मौखिक कथाओं से संकलित एक बोडो महिला की कहानी है जिसे अंग्रेजों द्वारा कर संग्रहकर्ता नियुक्त किया गया था।

इससे पहले, इंदिरा गोस्वामी ने नीमराना के पहले अंतर्राष्ट्रीय साहित्य महोत्सव में असम और असमिया लेखन पर सशक्त भाषण दिया था। उनके शब्दों में: 'मेरे राज्य, असम ने बहुत पहले कुछ बेहद खूबसूरत रचनाएँ प्रस्तुत की थीं। बाहरी लोग असम के बारे में बहुत कम जानते हैं... असम में ऐतिहासिक लेखन 1224 से फला-फूला। ये इतिहास की पुस्तकें काल्पनिक कथाओं की तरह हैं, क्योंकि इनमें राजाओं और रानियों के वृत्तांत हैं, जिनमें एक रानी, फुलेश्वरी, जो एक मंदिर की नर्तकी थीं, का भी वर्णन है। रामायण, जिसका 14वीं शताब्दी में असमिया में अनुवाद हुआ था, में राम को भगवान नहीं बताया गया है। वे केवल एक मनुष्य हैं; वे एक बहुत अच्छे राजा हैं।'

खुशवंत सिंह ने कहा है कि भारतीय भाषाओं में प्रकृति पर कोई रचनाएँ नहीं हैं। लेकिन मैंने गैंडों पर एक उपन्यास लिखा है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि एक समय असम के लोग गैंडों की मदद से अपनी ज़मीन जोतते थे। फिर मैंने हाथियों पर एक उपन्यास लिखा। मेरे बचपन में एक हाथी मेरा साथी था। धीरे-धीरे वह बेकाबू हो गया, एक ग्रामीण को मार डाला और हमारी आँखों के सामने उसे गोली मार दी गई। हाथी का हौदा मेरे उपन्यास का प्रतीक बन गया...

मेरी दोस्त और साथी लेखिका से मेरी आखिरी बातचीत दो साल पहले हुई थी, जब मैंने उन्हें जयपुर साहित्य महोत्सव में आने का निमंत्रण दिया था। उन्होंने सहमति तो दे दी, लेकिन फिर अपनी खराब सेहत के कारण आने से मना कर दिया। उन्होंने कहा, 'काश मैं ठीक होती, नमिता, तो मैं जरूर आती।'

लेखक अपने जीवन को अवर्णनीय तरीकों से जीते हैं, यात्रा करते हैं और आगे बढ़ते रहते हैं, अपनी किताबों के माध्यम से, अनुवादों के माध्यम से, रूपकों और अप्रत्यक्ष छवियों के माध्यम से। उनकी यात्राएँ आसानी से समाप्त नहीं होतीं, बल्कि हमेशा विचित्र और अप्रत्याशित दिशाओं में जारी रहती हैं। मामोनी गोस्वामी की यात्रा भी कुछ ऐसी ही होगी।

नमिता गोखले
नई दिल्ली 2011

***** *****

लेखक और अनुवादक के बारे में

इंदिरा गोस्वामी को देश के सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार, ज्ञानपीठ पुरस्कार सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। जाह्नु बरुआ द्वारा निर्देशित 'वर्ड्स फ्रॉम द मिस्ट' उनके जीवन पर बनी कई जीवनी फिल्मों में से एक है। 2008 में, साहित्य, संस्कृति और सामाजिक परिवर्तन में उनके योगदान के लिए उन्हें भारत की पहली प्रधान प्रिंस क्लॉस पुरस्कार विजेता बनाया गया।

गायत्री भट्टाचार्य गुवाहाटी विश्वविद्यालय में अंग्रेजी की पूर्व लेक्चरर हैं।

नमस्कार पाठक!

हमें उम्मीद है कि आपको ज़ुबान की यह ईबुक पसंद आई होगी। हमारी सभी ईबुक्स डिजिटल राइट्स मैनेजमेंट (डीआरएम) से पूरी तरह मुक्त हैं, ताकि आप इन्हें अपने किसी भी डिवाइस पर पढ़ सकें और कई बार डाउनलोड कर सकें। हमारा मानना है कि इससे पढ़ने का अनुभव और भी आसान और आनंददायक हो जाता है। अपने लेखकों के प्रति सम्मान बनाए रखने और उनके काम को प्रकाशित और प्रसारित करते रहने के लिए, हम पाठकों से अनुरोध करते हैं कि वे ईबुक की प्रतियां खरीदें, न कि उन्हें साझा करें या मुफ्त में दें। आपके सहयोग और समर्थन के लिए धन्यवाद!